सितम्बर 2023 ■ वर्ष : 68 ■ अंक : 12 ■ पृष्ठ : 60 ■ मूल्य : ₹ 60

अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

75

अणुव्रत आंदोलन

अणुव्रत अमृत महोत्सव

जन सरोकार और सामाजिक संगठन

75
1949 - 2024
अणुव्रत आंदोलन
नई पीढ़ी में रचनात्मकता और सकारात्मकता
को प्रोत्साहित करने का राष्ट्रव्यापी अभियान
ANUVRAT
CREATIVITY
CONTEST 2023
मुख्य विषय : असली आजादी अपनाओ
प्रतियोगिताएं
लेखन
चित्रकला
गायन
भाषण
कविता
राष्ट्रीय स्तर पर आकर्षक पुरस्कार
15 राज्य
200 शहर
1 लाख बच्चे
अणुविभा
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
सम्पर्क करें :
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
91106 13732 (संयोजक), 9864032611 (पूर्वांचल),
9892467317(पश्चिमांचल), 9481622082 (दक्षिणांचल)
9414159617(उत्तरांचल), 9300728836 (मध्यांचल)
9116634514 (कार्यालय)
स्कूल स्तर पर प्रतियोगिता करवाने की अंतिम तिथि 15 सितम्बर 2023

भौतिकवाद के इस युग में जबकि जनसाधारण का जीवन नैतिक ह्रास और पतन की ओर जा रहा है, यह सर्वथा उपयुक्त है कि उस पतन को रोका जाये और लोगों के सम्मुख नैतिकता के महान समृद्ध आदर्शों को प्रस्तुत किया जाये। ऐसा आदर्श प्रस्तुत करने का भगीरथ कार्य अणुव्रत आंदोलन कर रहा है। अपेक्षा है कि जनता इस अभियान को समझे और अपने जीवन में पवित्र ज्योति जगाये।

- विद्यारत्न तीर्थ श्रीपादा

वर्ष 68 ● अंक 12 ● कुल पृष्ठ 60 ● सितम्बर, 2023

सम्पादक
संचय जैन

सह–सम्पादक
मोहन मंगलम

टाइपसेटिंग व लेआउट
मनीष सोनी

क्रिएटिव्स
आशुतोष रॉय

चित्रांकन
मनोज त्रिवेदी

अविनाश नाहर, अध्यक्ष
भीखम सुराणा, महामंत्री
राकेश बरड़िया, कोषाध्यक्ष

प्रकाशन मंत्री
देवेन्द्र डागलिया
संयोजक, पत्रिका प्रसार
सुरेन्द्र नाहटा

:: सदस्यता शुल्क विवरण ::

एक अंक	–	₹ 60
एक वर्षीय	–	₹ 750
त्रैवर्षीय	–	₹ 1800
पंचवर्षीय	–	₹ 3000
दसवर्षीय	–	₹ 6000
योगक्षेमी (15 yrs.)	–	₹ 15000

:: बैंक विवरण ::

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
केनरा बैंक
A/c No. **0158101120312**
IFSC : CNRB0000158

:: ऑनलाइन भुगतान के लिए ::

इस क्यूआर कोड को स्कैन करें

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली–110002

anuvrat.patrika@anuvibha.org
www.anuvibha.org
दूरभाष : 011–23233345, मोबाइल : 9116634512

अनुक्रमणिका

प्रेरणा पाथेय

- मूल्यों का प्रतिष्ठाता : व्यक्ति या समाज 06
  आचार्य तुलसी
- समाज और जीवन मूल्य 08
  आचार्य महाप्रज्ञ
- प्रशस्त जीवनशैली के आयाम 12
  आचार्य महाश्रमण

आलेख

- विश्व समाज में सिविल सोसायटी... 16
  ललित गर्ग
- सी स्पंज से सीखें... 18
  रेनू सैनी
- अनुशासन के नाम पर... 20
  डॉ. अनुभा गुप्ता
- कंजूसी आगे नहीं बढ़ने देती 22
  शिखरचंद जैन

कहानी

- रिश्तों की मिठास 24
  ताराचंद मकसाने

कविता

- जीवन को जगमग करे 14
  इकराम राजस्थानी
- बाधाओं से हार न मानें 19
  राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव
- अनुराग बचाकर रख 21
  जय चक्रवर्ती

लघुकथा

- एटीएम कार्ड 27
  अशोक अंजुम

- संपादकीय 05
- अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह 11
- कदमों के निशां 23
- अणुव्रत पुरस्कार 28
- गौरवशाली अतीत के झरोखे से... 29
- परिचर्चा 35
- अणुव्रत किडजोन 38
- अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 41
- अणुव्रत सेमिनार - कोलकाता 42
- एलिवेट : एक रिपोर्ट 44
- अणुव्रत पत्रिका विशेष योजना 45
- अणुव्रत गीत महासंगान 46
- जीवन विज्ञान प्रशिक्षक प्रशिक्षण 47
- अणुव्रत व्याख्यानमाला 48
- अणुव्रत क्यू 10 51
- त्रिदिवसीय बालोदय शिविर 52
- अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता 53
- अणुव्रत प्रबोधक कार्यशाला 53
- अणुव्रत समाचार 54
- अणुव्रत की बात 57

- अणुव्रत सिद्धांत, स्वास्थ्य, जीवन–मूल्य एवं अभिप्रेरणा विषयक सामग्री का उपयोग किया जा सकेगा।
- anuvrat.patrika@anuvibha.org पर ही सामग्री प्रेषित करें।
- ईमेल द्वारा संप्रेषित कम्पोज की गयी प्रकाशन सामग्री की Open Word File को प्राथमिकता दी जायेगी।
- फोटो की गुणवत्ता कम होने पर उसे प्रकाशित करने में असमर्थता रहेगी। व्हाट्सएप पर फोटो न भेजें।
- अनिमंत्रित सामग्री को लौटाने हेतु बाध्यता नहीं रहेगी।
- प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों का निजी चिंतन है। प्रकाशक एवं सम्पादक इसके लिए जवाबदेह नहीं हैं।
- इस प्रकाशन से सम्बन्धित किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दिल्ली रहेगा।

सामाजिक संस्थान और प्रासंगिकता के मानदण्ड

व्यक्ति और समाज - मानव सभ्यता के ये दो आधार स्तम्भ हैं जिनसे सम्पूर्ण मानव जीवन प्रभावित होता है। व्यक्ति का आचार-विचार समाज के स्वरूप को निर्धारित करता है तो सामाजिक परिवेश व्यक्ति की जीवनशैली को प्रभावित करता है। और, इन दोनों अन्तर्सम्बन्धों के मध्य सन्तुलन का परिमाण समाज के स्वरूप और उसकी दिशा का निर्धारण करता है। इस अन्योन्याश्रितता के सिद्धांत को मानव जाति से बाहर व्यापक दृष्टिकोण से देखा जाये तो "परस्परोपग्रहो जीवानाम्" का सिद्धांत सामने आता है। "मैं" से ऊपर उठ कर "हम" के दृष्टिकोण का वरण करना मानव सभ्यता का सबसे महत्वपूर्ण आयाम रहा है।

व्यक्ति और समाज के मध्य सन्तुलन को साधने और बनाये रखने की अपेक्षा ने ही सम्भवतः सामाजिक संगठनों की व्युत्पत्ति का मार्ग प्रशस्त किया होगा। इन संगठनों के समक्ष यह लक्ष्य होता है कि जहाँ व्यक्ति का सामर्थ्य सीमित होने लगे, वहाँ आगे बढ़ कर वे व्यक्ति की सक्षमता संवर्द्धन में सहयोगी बनें। और दूसरी तरफ, यदि सामाजिक व्यवस्थाएँ ही व्यक्ति की असक्षमता को बढ़ाने का कारण बनने लगें तो उस व्यवस्था को बदलने में भी ये संगठन निर्णायक भूमिका निभाएँ, यह अपेक्षा उनसे की जाती है।

दुनिया के किसी भी भाग पर दृष्टि डालें तो हम पाएंगे कि अनेकानेक सामाजिक संस्थाएँ मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को लक्ष्य बना कर काम कर रही हैं। कुछ संस्थाएँ स्थानीय स्तर पर काम करती हैं तो कुछ वैश्विक स्तर पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराती हैं। दुनिया में ऐसे कम ही लोग होंगे जो किसी न किसी संस्था, संगठन या सामाजिक सरोकार से न जुड़े होंगे। करोड़ों व्यक्ति अपने श्रम और शक्ति का नियोजन व्यक्ति और समाज की भलाई में करते हैं और अपने स्वयं के जीवन में सुकून का अनुभव करते हैं। वैज्ञानिक शोधों ने भी यह सिद्ध किया है कि व्यक्ति को दूसरों की भलाई में अधिक खुशी मिलती है, बनिस्बत कि स्व-हित के काम करने में।

सामाजिक कार्यक्षेत्र में आदर्श और व्यवहार के मध्य जद्दोजहद एक निरन्तर प्रक्रिया है - वैचारिक स्तर पर और क्रियान्वयन स्तर पर भी, व्यक्तिगत स्तर पर और संस्थागत स्तर पर भी। सामाजिक संस्थाओं और संगठनों, जिन्हें सिविल सोसायटी के रूप में भी जाना जाता है, की प्राथमिकता में समाज हित या परहित के आदर्श सर्वोच्च स्थान पर हैं या नहीं, यह उसकी प्रासंगिकता का महत्वपूर्ण मानदण्ड है क्योंकि कभी-कभी ऐसी संस्थाओं का निर्माण संकुचित और स्वार्थपूरित उद्देश्यों से भी कर दिया जाता है, जहाँ नेक उद्देश्यों के मुखौटे के पीछे व्यक्तिगत या एक समूह का स्वार्थ सिद्ध किया जाता है। दूसरी तरफ, ऐसे लोग भी होते हैं जिनके लिए सामाजिक संस्थाओं से जुड़ना पद, नाम या सत्ता हासिल करना मात्र होता है। इस उद्देश्य को पाने के लिए वे पानी की तरह धन बहाने से भी परहेज नहीं करते। सेवा के नाम पर यह कलंक नहीं तो और क्या है?

अणुव्रत आन्दोलन सिविल सोसायटी का एक सुन्दर उदाहरण है। व्यक्ति और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के पवित्र उद्देश्य के साथ यह आन्दोलन गत 75 वर्षों से सक्रिय है। जो व्यक्ति निःस्वार्थ भाव से ऐसे आन्दोलनों से जुड़ता है, जनहित के साथ-साथ उसका स्व-कल्याण स्वतः स्फूर्त सिद्ध हो जाता है। वहीं, निजी स्वार्थ को सामने रख कर जुड़ने वाला व्यक्ति आन्दोलन को तो कमजोर करता ही है, अपने जीवन की सफलता में वह स्वयं अवरोधक बन जाता है। सार्वजनिक जीवन में रहने वाले व्यक्ति के मन में यह यथार्थ आईने की तरह साफ होना चाहिए।

बचपन में
आदर्श की बातें
सुनते-सुनते
जब बड़ों के
व्यवहार जगत में
प्रवेश किया-
आदर्शों की दुर्दशा देख
ठगा-सा रह गया!
करीने से बुना
सपनों का संसार
धोखे-सा बह गया।

मैंने खुद से पूछा-
व्यवहार के लिए
आदर्शों से अलगाव
क्या अपरिहार्य है?

आवाज आयी-
आदर्श शून्य
ये कैसा व्यवहार!
व्यवहार के नाम पर
मूल्यहीन व्यापार!
मुझ से नहीं
अपने जमीर से पूछो,
आदर्श की कीमत पर
खोखला व्यवहार
क्या तुम्हें स्वीकार्य है?

सं. जै.
sanchay_avb@yahoo.com

आचार्य तुलसी

मूल्यों का प्रतिष्ठाता व्यक्ति या समाज

व्यक्ति का पहला कर्त्तव्य यह है कि वह सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा में योगदान करे। कोई भी मूल्य निर्धारित हो और व्यक्ति उसे विघटित करता चला जाये तो वह समाज में प्रतिष्ठित नहीं हो सकता। समाज को सुदृढ़ बनाना तथा उसमें संभावित दुर्बलताओं को दूर करने के लिए सतत जागरूक रहना व्यक्ति की जिम्मेदारी है।

यह तो निश्चित बात है कि नैतिक मूल्य की प्रतिष्ठा समाज के सन्दर्भ में है। उन मूल्यों का प्रतिष्ठाता व्यक्ति होता है क्योंकि व्यक्ति के बिना समाज का अस्तित्व ही कहाँ रहता है। अब रहा प्रश्न व्यक्ति और समाज के पारस्परिक कर्त्तव्य का। व्यक्ति का पहला कर्त्तव्य यह है कि वह सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा में पूरा-पूरा योगदान करे। कोई भी मूल्य निर्धारित हो और व्यक्ति उसे विघटित करता चला जाये तो वह समाज में प्रतिष्ठित नहीं हो सकता। समाज को सुदृढ़ बनाना, उसे अधिक उपयोगी प्रमाणित करना तथा उसमें संभावित दुर्बलताओं को दूर करने के लिए सतत जागरूक रहना व्यक्ति की जिम्मेदारी है।

वहीं, समाज का कर्त्तव्य यह है कि वह ऐसी परिस्थिति निर्मित करे, जो व्यक्ति को मूल्यों की प्रतिष्ठा-हेतु अपना सहयोग दे सके। मूल्य -प्रस्थापना की दिशा में परिस्थिति का महत्वपूर्ण स्थान है। अनुभूत परिस्थिति असंभव को संभव बनाकर दिखा सकती है।

मूल्यों की प्रस्थापना जितनी व्यक्ति और समाज सापेक्ष है, उतनी ही परिस्थिति सापेक्ष है। तीनों का समुचित संयोग ही किसी मूल्य को प्रतिष्ठा दे सकता है। परिस्थिति के निर्माण का मूलभूत दायित्व आता है समाज पर और उस निर्मित परिस्थिति में किसी प्रकार का व्यवधान उपस्थित न हो, यह प्रयत्न करने की जिम्मेदारी है व्यक्ति की। व्यक्ति यदि उस मूल्य से प्रतिकूल आचरण करता है तो वह अपने कर्त्तव्य से च्युत होता है।

नीतिकारों ने कहा है - धर्म, अर्थ और मोक्ष इस त्रिवर्ग की सिद्धि के अभाव में मनुष्य का जन्म विफल है। मैं ऐसा अनुभव करता हूँ कि व्यक्ति, समाज और परिस्थिति - इस त्रिगुणात्मक योग के अभाव में मूल्य-प्रतिष्ठा संबंधी कोई भी उपक्रम सफल नहीं हो सकता।

नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा में सबसे बड़ी बाधा है चारित्रिक निष्ठा का अभाव। निष्ठा का बल जिस व्यक्ति में नहीं होता, वह किसी भी स्थिति में विचलित हो सकता है, अन्यथा परिस्थितियां किसी पर हावी नहीं हो सकतीं। आर्थिक और राजनैतिक बाधाओं को मैं परिस्थिति का ही अंग मानता हूँ। व्यक्ति की आर्थिक व्यवस्था अनुकूल नहीं होती है तो वह मूल्यों को विघटित कर देता है क्योंकि मूल्यों की स्थापना समता के धरातल पर ही हो सकती है। आर्थिक विषमता व्यक्ति के मन में द्वन्द्व उपस्थित करती है। मन का द्वन्द्व वाणी और व्यवहार दोनों माध्यमों से अभिव्यक्त होता है। ऐसी अभिव्यक्ति मनुष्य के चारों ओर तदनुरूप वलय निर्मित करती है। वह वलय जब अधिक ठोस हो जाता है, तब

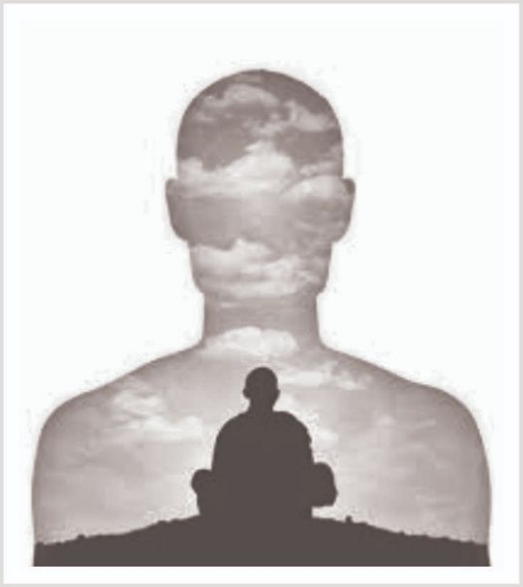

वैज्ञानिक उन्नति से अज्ञानजनित आस्था निश्चित रूप से बदलती है और उसे बदलना भी चाहिए। जो वैज्ञानिक उन्नति व्यक्ति को सत्य की ओर ले जाती है, वह नैतिक मूल्यों की विघटक नहीं हो सकती तथा जिस उन्नति से सत्य की आस्था खंडित होती है, वह सही अर्थ में वैज्ञानिक उन्नति नहीं हो सकती।

व्यक्ति के मानस में नैतिक-अनैतिक का विवेक नहीं रह पाता। फलतः वह नैतिक मूल्यों का विघटन कर देता है।

राजनैतिक परिस्थितियां भी निमित्त बन सकती हैं। जन-जीवन में नैतिकता का अवतरण बहुत कुछ राजतंत्र पर भी निर्भर करता है। एक शासक अपने युग में धर्म को सर्वाधिक महत्व देते हैं तो ऐसे शासक भी होते हैं, जिनका धार्मिक प्रगति में कोई योगदान नहीं होता। इसलिए राजनैतिक परिस्थितियों की अनुकूलता को भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

युद्ध मानवीय सभ्यता के लिए विनाशकारी तत्त्व है। इससे मनुष्य जाति और संपदा का ही विनाश नहीं होता, सभ्यता और संस्कृति का भी लोप हो जाता है। भारतवर्ष का इतिहास इस तथ्य का साक्षी है। यहाँ की विकासमान स्थितियां महाभारत के युद्ध के बाद अधिक क्षतिग्रस्त हुई हैं। महाभारत से पहले और पीछे की भारतीय आत्मा में बहुत बड़ा अन्तर दिखायी दे रहा है। इसलिए यह मानने में कोई कठिनाई नहीं है कि युद्ध भी मूल्य विघटन की दिशा में अपनी भूमिका अच्छी तरह निभाते हैं।

वैज्ञानिक उन्नति का जहां तक प्रश्न है, वह मूल्य-परिवर्तन की दिशा में सक्रिय है। कोई भी अज्ञात तथ्य जब ज्ञात होता है, नयी जानकारी बढ़ती है तो परिवर्तन की घटना स्वाभाविक रूप से घटित हो जाती है। अतः इस सन्दर्भ में मूल्य-विघटन के स्थान पर मूल्य-परिवर्तन शब्द का प्रयोग अधिक संगत प्रतीत होता है।

मूल्य दो प्रकार के होते हैं – शाश्वत और सामयिक। शाश्वत मूल्य स्वरूप की दृष्टि से अपरिवर्तनीय होते हैं। सामयिक मूल्य द्रव्य, क्षेत्र, काल और परिस्थिति सापेक्ष हैं, अतः बदलते रहते हैं। अज्ञान की अवस्था में स्थापित मूल्यों में तद्विषयक ज्ञान होते ही एक बदलाव आ जाता है। यह नैसर्गिक प्रक्रिया है।

राजनीति के सन्दर्भ में युद्ध का अपना मूल्य है, पर उससे मनुष्य समाज को मुसीबतों का सामना करना पड़ता है और हानि उठानी पड़ती है। उसके ये दुष्परिणाम अज्ञात से ज्ञात हो जाते हैं तो युद्ध का मूल्य बदल जाता है। वैज्ञानिक उन्नति से नैतिक मूल्यों की मूलभूत आस्था में कोई बदलाव नहीं आता। पर अज्ञानजनित आस्था निश्चित रूप से बदलती है और उसे बदलना भी चाहिए। क्योंकि सत्य की खंडित आस्था भी एक प्रकार से व्यक्ति को गुमराह करती है। सत्य के प्रति आस्थाशील व्यक्ति भय से ग्रस्त होकर असत्य को पालता है, वह भी उसकी आस्था का ही सार्वभौम मूल्य होता है। जो वैज्ञानिक उन्नति व्यक्ति को सत्य की ओर ले जाती है, वह नैतिक मूल्यों की विघटक नहीं हो सकती तथा जिस उन्नति से सत्य की आस्था खंडित होती है, वह सही अर्थ में वैज्ञानिक उन्नति नहीं हो सकती।

कला और साहित्य भी मूल्य-परिवर्तन के हेतु हैं क्योंकि इनमें ऐसी क्षमता है, जो मनुष्य के मन को आकृष्ट करती है। जो आकृष्ट करता है, वह बदलाव में भी निमित्त बनता है। इस सन्दर्भ में जो परिवर्तन होते हैं, वे अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के हो सकते हैं। इसलिए परिवर्तन एकान्ततः इष्ट ही नहीं होता। उसकी अवांछनीयता में भी एकांगी दृष्टिकोण हितावह नहीं है। इसलिए मैं तो यही सोचता हूँ कि रूढ़ मूल्य केवल लाभदायक ही नहीं होते। जिस सीमा तक वे उपयोगी हैं, उनका अतिक्रमण नहीं होना चाहिए। उपयोगिता समाप्त होने के बाद भी उनसे चिपके रहना समझदारी नहीं है। इसलिए नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा और उसमें उपस्थित बाधा दोनों स्थितियों को सापेक्ष दृष्टि से समझना चाहिए।

जो लोग नैतिक मूल्यों के सन्दर्भ में साहित्यिक बाधा उपस्थित करते हैं, वे इस तथ्य की भूल जाते हैं कि नैतिक धारणाओं में किसी भी प्रकार का परिवर्तन उन धारणाओं का विघटन ही नहीं होता, संशोधन भी होता है। साहित्य समाज में भावों का दर्पण है, समूह-चेतना के बिम्बों को उभारने का माध्यम है, पर साहित्य के द्वारा सब कुछ बदल जाने की बात बहुत कठिन है। क्योंकि कुछ-कुछ साहित्यकार ही ऐसे होते हैं, जो समग्र समाज को आंदोलित कर सकते हों। साहित्यकार की चेतना जागृत हो, वह अपने दायित्व के प्रति पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध हो और निरपेक्ष भाव से अपने मौलिक चिन्तन की प्रस्तुति देने की क्षमता रखता हो तो समाज की चेतना पर भी उसका अमिट प्रभाव हो सकता है। ■■■

आचार्य महाप्रज्ञ

समाज और जीवन-मूल्य

अणुव्रत आध्यात्मिक भी है और नैतिक भी। अणुव्रत की सारी नैतिकता अध्यात्ममूलक नैतिकता है। यदि अणुव्रत को सामाजिक मूल्य के साथ-साथ राष्ट्रीय मूल्य के रूप में प्रस्तुत करें तो उसे एक नया आयाम मिल सकता है। अणुव्रत समाज और राष्ट्र की आत्मा है, इस सच्चाई की उपेक्षा कर समाज कभी स्वस्थ ढंग से चल नहीं सकता।

आज का विद्यार्थी मूल्यपरक शिक्षा शब्द से अपरिचित नहीं है। इससे पहले बुनियादी तालीम शब्द बहुत प्रचलित था। आज मूल्यपरक शिक्षा शब्द प्रचलित है और इसलिए प्रचलित है कि समाज में मूल्यों का बड़ा महत्व होता है। मूल्यों के आधार पर ही समाज का माप किया जाता है। जिसमें उच्च मूल्य होते हैं, वह समाज उन्नत होता है। जिसमें मूल्यों की गिरावट होती है, उसे नीचा समाज माना जाता है। प्राचीन काल में मानदण्ड था चरित्र और आज मानदण्ड बन गया है मूल्य।

मूल्य-शास्त्र

पाश्चात्य जगत में मूल्य-शास्त्र का पूरा विकास हुआ है। मूल्य की दो दृष्टियों से परिभाषा की गयी। एक है अर्थशास्त्रीय दृष्टि और दूसरी है नीतिशास्त्रीय दृष्टि। अर्थशास्त्रीय दृष्टि से मूल्य परिमाणात्मक होता है और नीतिशास्त्रीय दृष्टि से गुणात्मक। रुपया-पैसा, धन-धान्य – यह परिमाणात्मक मूल्य है। इसका तात्पर्य है – जिससे व्यवहार चलता है, विनिमय और लेन-देन होता है, वह अर्थशास्त्रीय दृष्टि से मूल्य कहलाता है। नीतिशास्त्रीय दृष्टि से मूल्य वह है, जो जीवन-विकास या आत्म-साक्षात्कार में सहायक बनता है। यह गुणात्मक मूल्य है। हम अर्थशास्त्रीय मूल्यों से परिचित हैं। नीतिशास्त्रीय मूल्यों से भी परिचित हैं, पर पूर्ण परिचित नहीं हैं। हम सद्गुण, सदाचार और सच्चरित्र – इन शब्दों से परिचित हैं किन्तु इनकी जो आज की भाषा है, उसे भी जानना है। आज उच्च क्षेत्रों में, विद्या के विशिष्ट क्षेत्रों में गुण और चरित्र शब्द कम प्रयोग में आता है, मूल्य शब्द का प्रयोग ज्यादा होने लगा है।

मूल्य का आधार

मूल्य को दो भागों में विभक्त किया गया – बाह्य मूल्य तथा आंतरिक मूल्य। बाह्य मूल्य साधन के रूप में होता है। पदार्थ का मूल्य बाह्य मूल्य है। भूख लगी है तो रोटी का मूल्य होगा। यह पदार्थ-सापेक्ष मूल्य है। भूख है तब रोटी का मूल्य ज्यादा है और भूख न हो, तब उसका मूल्य घट जाता है। राजस्थान की प्रचलित कहावत है - भूख मीठी या लापसी। मीठी होती है भूख। ये बाह्य मूल्य – साधन-मूल्य बदलते रहते हैं। जब जरूरत होती है, साधन के रूप में काम आ जाते हैं और जब जरूरत नहीं रहती है तब बहुत मूल्यवान नहीं रहते। अनेकांत की दृष्टि से देखें तो ये मूल्य है भी और नहीं भी। आवश्यकता और उपयोगिता है तो मूल्य है। आवश्यकता और उपयोगिता नहीं है, तो मूल्य नहीं है। मूल्य का आधार है उपयोगिता। एक आदमी के पैर में चोट लग गयी। उसके लिए बैसाखी का बहुत मूल्य है। कुछ दिन दवा ली, पैर ठीक हो

जो आंतरिक मूल्य हैं, आचार या चरित्र से संबंधित मूल्य हैं, वे साध्य-मूल्य हैं, साधन-मूल्य नहीं। अहिंसा, सत्य, अचौर्य आदि साध्य-मूल्य हैं। ऐसा नहीं है कि इनकी कभी जरूरत होती है और कभी नहीं होती। इन्हें जीवन में सदा उपलब्ध करना है, इनका सदा विकास करना है। ये मूल्य ही जीवन को उन्नत बनाते हैं।

गया, पैरों में ताकत आ गयी। पूर्ण स्वस्थ हो गया। यदि उस समय उसके पास बैसाखी ले जाएं तो वह कहेगा – "यह बीच में खोड़ा लाकर किसने रख दिया?" पदार्थ- सापेक्ष मूल्य का यह एक निदर्शन है।

जो आंतरिक मूल्य हैं, आचार या चरित्र से संबंधित मूल्य हैं, वे साध्य-मूल्य हैं, साधन-मूल्य नहीं। अहिंसा, सत्य, अचौर्य आदि साध्य-मूल्य हैं। ऐसा नहीं है कि इनकी कभी जरूरत होती है और कभी नहीं होती। इन्हें जीवन में सदा उपलब्ध करना है, इनका सदा विकास करना है। ये मूल्य ही जीवन को सदा उन्नत बनाते हैं। व्यक्ति और समाज के विकास में ये मूल्य ही सहायक बनते हैं, इसलिए प्रत्येक क्षेत्र में मूल्यों की चर्चा है।

मूल्यों का वर्गीकरण

जीवन विज्ञान में मूल्यों का वर्गीकरण इस प्रकार किया गया है –

- सामाजिक मूल्य - कर्त्तव्यनिष्ठा और स्वावलम्बन।
- बौद्धिक मूल्य - सत्य, समन्वय, संप्रदाय निरपेक्षता और
- मानवीय एकता।
- मानसिक मूल्य - मानसिक संतुलन और धैर्य।
- नैतिक मूल्य - प्रामाणिकता, करुणा और सह-अस्तित्व।
- आध्यात्मिक मूल्य - अनासक्ति, सहिष्णुता, मृदुता, अभय और आत्मानुशासन।

मूल्य का संदर्भ

कुछ मूल्य ऐसे होते हैं, जो समाज के लिए जरूरी हैं। आचार्य भिक्षु का यह दृष्टिकोण बहुत उपयोगी है - जहाँ समाज-व्यवस्था को चलाना है, समाज के आधार पर चिंतन करना है, वहाँ नैतिकता और धर्म को बीच में लाने की जरूरत नहीं। वहाँ सामाजिक दृष्टि से ही सोचना होगा। जहाँ राष्ट्रीय हित की दृष्टि है, वहाँ राष्ट्रीय दृष्टि से ही सोचना होगा। एक संदर्भ है युद्ध का। युद्ध करें या नहीं? राष्ट्रीय हित की दृष्टि से युद्ध करना जरूरी है। यदि वहाँ धार्मिक दृष्टि से सोचा जाएगा तो मूर्खतापूर्ण बात होगी। वहाँ भूमिका से हटकर ही सोचना होगा। यदि धर्म के सिद्धांत को लेकर अटक जाएंगे तो राष्ट्र की समस्या का समाधान नहीं हो पाएगा। राष्ट्रीय धरातल पर खड़े होकर सोचने से ही राष्ट्रीय विकास की बात सम्भव बन पाएगी। सामाजिक संदर्भ में जहाँ विवाह आदि का प्रसंग है, वहाँ आध्यात्मिक दृष्टि से सोचेंगे तो समस्या प्रस्तुत हो जाएगी। अध्यात्म का स्वर होगा - व्यक्ति अकेला आया है, अकेला जाएगा। विवाह का क्या करना है?

समस्या है मिश्रण

समस्या यह हो गयी - हमने मूल्यों का मिश्रण कर दिया। मूल्यों का मिश्रण नहीं होना चाहिए। जिस भूमिका में जो मूल्य है, उसको उसी भूमिका में काम में लिया जाना चाहिए। मूल्यों का मिश्रण समस्या को उलझा देता है। एक व्यक्ति ने किसी धरातल पर साहित्य लिखा, दूसरे व्यक्ति ने उसे किसी अन्य धरातल पर ले लिया, तो समस्या पैदा हो जाती है। साहित्य का अपना दर्शन और मूल्य होता है। उसमें धर्म को फँसा दें तो समस्या खड़ी हो जाती है।

जहाँ सामाजिक और राष्ट्रीय समस्या का प्रश्न है, वहाँ धर्म को बीच में लाना कहाँ तक संगत है? इस विषय में जैन आचार्यों का दृष्टिकोण बिल्कुल साफ रहा - लौकिक और लोकोत्तर - ये दो नियम हैं। लोकोत्तर नियम लौकिक नियम का समर्थन नहीं करते और उसमें बाधा भी नहीं डालते। दोनों नियम अपने क्षेत्र में काम करते हैं। जैनों के लिए निर्देश दिया गया - जितने लौकिक नियम हैं, वे हमारे मूल धर्म में बाधा न डालें तो सबके सब हमें मान्य हैं।

धर्मान्वित नैतिकता

सामाजिक मूल्य अलग हैं, राष्ट्रीय मूल्य अलग हैं और बौद्धिक मूल्य अलग हैं। नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य अलग-अलग भी हैं और एक भी हैं। आध्यात्मिक मूल्य स्वयं व्यक्ति तक सीमित हो जाता है। जहाँ दूसरों की बात आती है, वहाँ आध्यात्मिक मूल्य को नैतिक कहा जाता है। जो अणुव्रत की नैतिकता है, वह न सामाजिक नैतिकता है और न राष्ट्रीय नैतिकता है। वह धर्मान्वित नैतिकता है। वह धर्म और अध्यात्म से अन्वित

है, उसका मूल आधार भी धर्म और अध्यात्म है। वह शाश्वत और सामयिक - दोनों है, लेकिन जो समाज संबद्ध नैतिकता है, वह केवल वर्तमान से जुड़ी हुई होती है -

धर्मान्विता नैतिकता, भवेत् त्रिकालगोचरा।
सैषा समाजसंबद्धा, वर्तमानपरायणा॥

अध्यात्म और नैतिकता

अणुव्रत की सारी नैतिकता अध्यात्ममूलक नैतिकता है। जहाँ दो का संबंध जुड़ता है, नैतिकता का प्रश्न सामने आ जाता है। जब दो होते हैं, तब उसमें आदमी को अपनी अच्छाई, बुराई नापने का मौका मिलता है - मैं कहाँ ठीक कर रहा हूँ और कहाँ गलत, यह जानने का मौका मिलता है। अध्यात्म में भूल, त्रुटि, गुण, अवगुण - ये शब्द ही नहीं होते। वहाँ तो आत्मानुशासन का अभ्यास चलता है। अध्यात्म भाषातीत है। इसका तात्पर्य है अध्यात्म और नैतिकता की प्रकृति में अन्तर नहीं है। अन्तर हो जाता है, उसके प्रयोग में। अध्यात्म का प्रयोग बाहर से भीतर की ओर जाने का प्रयोग है। नैतिकता का प्रयोग भीतर से बाहर की ओर आने का प्रयोग है। जब हमारी धर्म की भावना बाहर से भीतर की ओर जाती है, तब अध्यात्म होता है। जब धर्म की भावना प्रस्फुटित होकर भीतर से बाहर की ओर आती है, तब उसका नाम होता है नैतिकता। प्रवृत्ति में साम्य है, प्रयोग में नहीं। अणुव्रत आध्यात्मिक भी है और नैतिक भी। इसका संबंध दोनों से है किन्तु अणुव्रत के सामने व्यवहार का क्षेत्र ज्यादा है।

व्यावहारिक रूप

हम उदाहरण के द्वारा समझें। अहिंसा बिल्कुल आध्यात्मिक तत्त्व है - सब जीवों के साथ समानता की अनुभूति। अहिंसा और समानता को साथ लें तो उसके साथ व्यवहार भी जुड़ेगा। कहा जाएगा - पशुओं पर ज्यादा भार मत डालो। इसको हम अध्यात्म नहीं कहेंगे। यह हमारी नैतिकता होगी। किसी की आजीविका का विच्छेद मत करो। आज की भाषा होगी - शोषण मत करो। शोषण है दूसरे के स्वत्व को छीन लेना। प्राचीन शब्द है वृत्तिच्छेद और आज का शब्द है शोषण। शोषण व्यवहार से जुड़ा है। जब धर्म जीवन व्यवहार में उतरता है, तो नैतिकता का रूप ले लेता है। जब धर्म अपने भीतर रहता है, तब वह अध्यात्म के रूप में रहता है। इस दृष्टि से अणुव्रत आन्दोलन आध्यात्मिक भी है और नैतिक भी। अहिंसा, सत्य आदि महाव्रत या अणुव्रत आध्यात्मिक मूल्य हैं। इनके साथ जुड़े हुए जो व्यवहार के नियम हैं, वे नैतिक मूल्य हैं। अहिंसा के अतिचार हैं, वे नैतिक मूल्य हैं। जैसे किसी को नहीं सताना, अंग-भंग नहीं करना आदि। यह अहिंसा का व्यावहारिक रूप है।

राष्ट्र की आत्मा

सत्य का व्यावहारिक रूप है - कटु शब्द नहीं बोलना, झूठ नहीं बोलना, नमक-मिर्च लगाकर नहीं बोलना। इसका तात्पर्य है- जो वस्तु जैसी है, उसे वैसी कहना। सत्य हमारी आत्मा का मूल्य भी

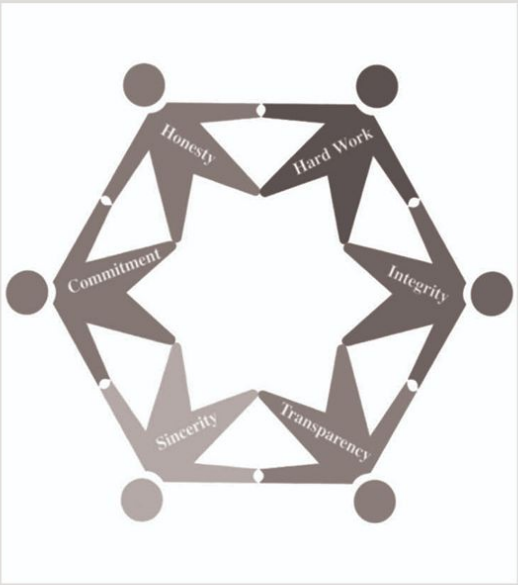

जब धर्म जीवन व्यवहार में उतरता है, तो नैतिकता का रूप ले लेता है। जब धर्म अपने भीतर रहता है, तब वह अध्यात्म के रूप में रहता है। इस दृष्टि से अणुव्रत आन्दोलन आध्यात्मिक भी है और नैतिक भी। अहिंसा, सत्य आदि महाव्रत या अणुव्रत आध्यात्मिक मूल्य हैं। इनके साथ जुड़े हुए जो व्यवहार के नियम हैं, वे नैतिक मूल्य हैं।

है और व्यावहारिक मूल्य भी। इसी प्रकार पाँचों अणुव्रतों का आध्यात्मिक मूल्य भी है, व्यावहारिक मूल्य भी है। साथ-साथ सामाजिक मूल्य भी है। ये मूल्य समाज को भी प्रभावित करते हैं। सहिष्णुता समाज का मूल आधार है, पर वह धर्म का भी मूल है।

अचौर्य का जितना आध्यात्मिक और नैतिक मूल्य है, उतना सामाजिक मूल्य भी है। यदि अणुव्रत को सामाजिक मूल्य के साथ- साथ राष्ट्रीय मूल्य के रूप में प्रस्तुत करें तो उसे एक नया आयाम मिल सकता है। अणुव्रत समाज और राष्ट्र की आत्मा है, इस सच्चाई की उपेक्षा कर समाज कभी स्वस्थ ढंग से चल नहीं सकता। ■■■

"अणुव्रत नीतिहीनता के घोर अंधेरे में प्रकाश करने वाला दीपक है।"

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह

दिनांक	दिवस	विषय
1 अक्टूबर, रविवार	**सांप्रदायिक सौहार्द दिवस**	**सांप्रदायिक सौहार्द और अणुव्रत**

''सांप्रदायिक सौहार्द और अणुव्रत'' जैसे विषयों पर सर्वधर्म संगोष्ठियाँ परिचर्चाएं आयोजित करें। नगरपालिका, विधानसभा, मन्दिर, मस्जिद या गुरुद्वारे तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर – प्रबुद्ध वक्ताओं और अच्छी संख्या में श्रोताओं के साथ आयोजन करें।

अणुव्रत आचार संहिता के चौथे नियम - मैं मानवीय एकता में विश्वास करूँगा एवं पाँचवें नियम - मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूँगा नियम का अधिकाधिक प्रसार करना।

2 अक्टूबर, सोमवार	**अहिंसा दिवस**	**अणुव्रत, अहिंसा एवं विश्वशांति**

प्रबुद्ध विचार गोष्ठियां करें, गांधीवादी विचारकों के साथ मिल–बैठकर चिन्तन–मनन करें। शिक्षण संस्थाओं व समान विचारधारा वाली संस्थाओं को साथ में जोड़कर वृहद् स्तर पर आयोजन करें। **अणुव्रत आचार संहिता के पहले नियम - मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूँगा, दूसरे नियम - मैं आक्रमण नहीं करूँगा एवं तीसरे नियम - मैं हिंसात्मक एवं तोड़फोड़-मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूँगा का अधिकाधिक प्रसार करना।**

3 अक्टूबर, मंगलवार	**अणुव्रत प्रेरणा दिवस**	**अणुव्रत जीवनशैली**

अणुव्रत जीवनशैली की व्यापक जानकारी देते हुए कार्यशालाएं की जाएं। अणुव्रती बनो अभियान सघनता से चलाएं। सार्वजनिक स्थानों जैसे चौपाल, रेलवे स्टेशन, बस स्टैण्ड, लाइब्रेरियाँ, प्रातः भ्रमण वाले पार्क, प्रेस क्लबों, फैक्ट्रियों, कम्पनियों जहां भी आपको 50/100 लोग आपकी बात सुनने वाले मिल जायें – वहां भी अवश्य करें। **अणुव्रत आचार संहिता के छठे नियम - मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूँगा एवं सातवें नियम - मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूँगा का अधिकाधिक प्रसार करना।**

4 अक्टूबर, बुधवार	**पर्यावरण शुद्धि**	**अणुव्रत और पर्यावरण संरक्षण**

पृथ्वी, पानी व हवा की शुद्धता और पर्यावरण संरक्षण की सघन मुहिम चलाएँ। स्वयंसेवी संस्थाएं, कॉलेज, वन विभाग आदि को साथ लेकर ''थ्योरी और प्रेक्टिकल'' दोनों रूप में आयोजन करें। पहले से तैयारी करके, किसी पार्क आदि स्थायी प्रकल्प अणुव्रत पार्क, अणुव्रत चौराहा आदि का उद्‌घाटन कराया जा सकता है। **अणुव्रत आचार संहिता के ग्यारहवें नियम - मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा का प्रसार करना।**

5 अक्टूबर, गुरुवार	**नशामुक्ति दिवस**	**नशा से करें इनकार**

सघन सार्वजनिक नशामुक्ति अभियान चलाएँ, झुग्गी बस्तियों, रैनबसेरों, बाल सुधारगृहों एवं युवाओं के मध्य कार्यक्रम आयोजित कर नशामुक्ति संकल्प पत्र भी भरवाएँ। इस अवसर पर नशामुक्ति केन्द्र को गोद भी लिया जा सकता है। **अणुव्रत आचार संहिता के दसवें नियम - मैं व्यसनमुक्त जीवन जीऊँगा का प्रसार करना।**

6 अक्टूबर, शुक्रवार	**अनुशासन दिवस**	**अणुव्रत, अनुशासन और सफलता**

'निज पर शासन, फिर अनुशासन' / नुक्कड़ नाटक, परिचर्चा, प्रश्न मंच का आयोजन किया जा सकता है, इनमें स्कूली बच्चों को विशेष रूप से जोड़ें। **अणुव्रत आचार संहिता के सातवें नियम - मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूँगा एवं नौवें नियम - मैं सामाजिक कुरूढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूँगा का प्रसार करना**

7 अक्टूबर, शनिवार	**जीवन विज्ञान दिवस**	**जीवन विज्ञान से सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास**

इस दिवस का आयोजन स्कूलों में विद्यार्थियों व शिक्षकों के मध्य अधिक से अधिक कार्यशालाओं के रूप में हो। अणुव्रत विद्यार्थी सम्मेलन, अणुव्रत शिक्षक सम्मेलन संगोष्ठियां की जा सकती हैं। **अधिकतम स्कूलों में प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान के प्रयोग करवाएँ।**

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

www.anuvibha.org

निवेदन

देशभर में सक्रिय सभी अणुव्रत समितियों व अणुव्रत मंचों से निवेदन है कि योजनाबद्ध तरीके से 'अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह' को विभिन्न क्षेत्रों में जा कर रचनात्मक आयोजनों के माध्यम से उपलब्धिपरक बनाने का प्रयास करें। अधिक जानकारी हेतु राष्ट्रीय संयोजक **9891947000** से संपर्क करें

आचार्य महाश्रमण

प्रशस्त जीवनशैली के आयाम

आदमी अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित रखे और कुछ समय अध्यात्म-चेतना के लिए भी लगाये। आदमी में ईमानदारी के प्रति निष्ठा जाग जाये, संवेगों पर नियंत्रण करना सीख ले, संयम का भाव पुष्ट हो जाये और समय-नियोजन करना सीख ले तो जीवनशैली प्रशस्त बन सकती है और वह सुखमय जी सकता है।

दुनिया के सभी प्राणी जीना चाहते हैं। मरना कोई नहीं चाहता। कभी-कभी विवशतावश या परिस्थितिवश उन्हें मृत्यु का वरण करना पड़ता है, किन्तु सामान्यतया व्यक्ति जीना चाहता है। वह मात्र जीना ही नहीं चाहता, सुखी रहना भी चाहता है।

एक सुख वह होता है जो बाहर के निमित्तों से मिलता है, जैसे गर्मी के समय पंखा, कूलर आदि सुविधाओं के योग से मिलने वाला सुख। एक सुख आदमी के भीतर के साथ जुड़ा हुआ होता है, जिसे मानसिक, भावात्मक या आत्मिक सुख भी कहा जा सकता है। बाहर से सब सुविधाएं मिलने पर भी कई बार आदमी भीतर से दुःखी रहता है। बाहर की सुविधा एक बात है और भीतर की शान्ति मिलना दूसरी बात है। आदमी की जीवनशैली अच्छी हो तो वह सुखी जीवन जी सकता है। मनुष्य एक उच्च कोटि का आदमी है, इसलिए उसकी जीवनशैली भी विशिष्ट होनी चाहिए। विशिष्ट जीवनशैली के लिए मैं यदा-कदा चार सूत्र बताया करता हूँ।

पहला सूत्र है ईमानदारी के प्रति निष्ठा। आदमी के मन में नैतिक मूल्यों के प्रति, सच्चाई के प्रति, प्रामाणिकता के प्रति निष्ठा जाग जाये। उसमें यह आस्था जाग जाये कि कोई भी कठिनाई आएगी तो उसे झेल लूँगा, किन्तु ईमानदारी को नहीं छोड़ूँगा। ईमानदारी की दो बाधाएं हैं - असत्य और चौर्य। जहाँ असत्य और चौर्य है, वहाँ बेईमानी है। आदमी मृषावाद और चोरी की वृत्ति से बचने का प्रयास करे। कभी-कभी आदमी धोखा देने का भी प्रयास करता है। और तो क्या, देवी-देवताओं को भी धोखा दे देता है।

एक आदमी के सामने भयंकर विपत्ति आ गयी। उसने अपने इष्ट को याद किया और प्रार्थना की- "हे प्रभो! मुझे इस विपत्ति से बचा लो। मैं आपको प्रसाद चढ़ा दूँगा।" संयोग की बात, वह विपत्ति से बच गया। उसने एक किलो खजूर खरीदे और अपने इष्टदेव के मन्दिर में गया। उसने सोचा कि ऊपर की चीज को क्या चढ़ाना है, भीतरी भाग चढ़ाना चाहिए। इसलिए खजूर की गुठलियां तो चढ़ा दीं और ऊपर का भाग स्वयं खा गया। कुछ समय बीता, फिर विपत्ति आ गयी। फिर उसने अपने इष्टदेव को याद किया और बचाने की प्रार्थना की। आस्था या संकल्प का ही प्रभाव समझना चाहिए, वह फिर बच गया। इस बार उसने एक किलो केले खरीदे और प्रसाद चढ़ाने मन्दिर गया। उसने सोचा, पिछली बार भीतरी भाग चढ़ाया था, इस बार ऊपर का भाग चढ़ा देता हूँ। उसने छिलके चढ़ा दिये और केले स्वयं खा गया। इस प्रकार आदमी भगवान को भी धोखा दे देता है।

बाहर से सब सुविधाएं मिलने पर भी कई बार आदमी भीतर से दुःखी रहता है। बाहर की सुविधा एक बात है और भीतर की शान्ति मिलना दूसरी बात है। आदमी की जीवनशैली अच्छी हो तो वह सुखी जीवन जी सकता है। मनुष्य एक उच्च कोटि का आदमी है, इसलिए उसकी जीवनशैली भी विशिष्ट होनी चाहिए।

अगर शान्तिमय जीवन जीना है तो धोखा, बेईमानी को छोड़ना होगा और ऋजुता व सरलता को स्वीकार करना होगा। सरलता और ईमानदारी, दोनों एक ही बात हैं। सरलता नहीं है तो फिर ईमानदारी का रहना भी संभव नहीं होगा। इसलिए ऋजुता और प्रामाणिकता, दोनों में अभिन्नता अथवा परम नैकट्य माना गया है। ईमानदारी शुद्ध, निर्मल और शान्तिमय जीवन का पहला और प्रमुख सूत्र है।

दूसरा सूत्र है – संवेग संतुलन, आक्रोश संयम। आदमी को यदा-कदा चाहे-अनचाहे गुस्सा आ जाता है, परन्तु उसमें इतनी क्षमता का विकास तो होना चाहिए कि प्रतिकूल स्थिति में भी वह शान्त रह सके। जब व्यक्ति के चेहरे पर आक्रोश की रेखाएं छा जाती हैं, तब उसका सुन्दर चेहरा भी विकृत बन जाता है। वे लोग धन्य हैं, जो सदा शान्त रहते हैं और जिनके चेहरे पर अनुकूल-प्रतिकूल, हर परिस्थिति में मुस्कान देखने को मिलती है।

परिवार में समस्याएं उत्पन्न होती रहती हैं। उसका एक कारण है - सहनशक्ति का अभाव। जिनको साथ में जीना हो और एक-दूसरे को सहन करने की क्षमता न हो तो वे शान्तिमय जीवन कैसे जी पाएंगे? एक बाईस वर्षीय युवक के मन में विकल्प उठा कि मैं शादी करूं या नहीं? उसने सोचा, इस विषय में मुझे किसी दिव्य पुरुष से परामर्श लेना चाहिए। वह सन्त कबीरजी के पास गया और बोला - "सन्तप्रवर! मैं आपके पास एक परामर्श माँगने आया हूँ कि मुझे शादी करनी चाहिए या नहीं?"

कबीरजी ने कहा - "युवक ! तुम कुछ देर यहीं बैठो, फिर बात करेंगे।" कबीरजी ने अपनी पत्नी से कहा - "जरा लालटेन जलाना।" मध्याह्न का समय था, फिर भी बिना कोई प्रश्न किये उसने लालटेन जलाकर रख दी। कुछ देर बाद कबीरजी ने दो गिलास दूध लाने का आदेश दिया। पत्नी ने एक गिलास कबीरजी को और एक गिलास अतिथि को पकड़ा दी। कबीरजी दूध पीते गये और पत्नी की प्रशंसा करते गये। युवक भी दूध पीने लगा, किन्तु पी नहीं सका, क्योंकि उसमें नमक डाला हुआ था। वह वहाँ से उठकर जाने लगा, तब कबीरजी ने कहा- "युवक! कहाँ जा रहे हो?" युवक ने कहा - "मैं तो आपके पास परामर्श लेने आया था, किन्तु आप तो कैसी बेहूदी बातें कर रहे हैं!"

कबीरजी ने कहा - "मैं तो तुम्हारे प्रश्नों का ही जवाब दे रहा हूँ। मैंने मध्याह्न में लालटेन जलाने के लिए कहा तो पत्नी ने बिना किसी तर्क के लालटेन जला दी, यानी मेरी हरकत को उसने सहन किया। उसने दूध में नमक डाला तो मैंने भी उसे शान्त भाव से पी लिया। उस पर आक्रोश नहीं किया। युवक! अगर पत्नी की हरकतों को सहन कर सको तो शादी करना, अन्यथा बाबा बन जाना।"

मेरा तो मानना है कि गलती करने पर अंगुलि-निर्देश भी करना चाहिए, किन्तु साथ में सहन करने का माद्दा भी होना चाहिए। तभी व्यक्ति शान्तिमय जीवन जी सकता है। मैंने एक सूत्र बना दिया - सहना चाहिए, मौके पर कहना भी चाहिए और शान्ति के साथ रहना चाहिए।

तीसरा सूत्र है - संयम। आदमी में संयम का विकास होना चाहिए। जहाँ-जहाँ इसमें कमी रहती है, वहाँ-वहाँ समस्या खड़ी हो जाती है। मेरा तो मानना है कि अपेक्षित संयम के अभाव में व्यक्ति का पूरा विकास नहीं हो सकता। आदमी में कठोर जीवन जीने का भी माद्दा होना चाहिए। उसके खान-पान, रहन-सहन में भी संयम होना चाहिए। संयम के अभाव में वह अखाद्य खा लेता है और अपेय पी लेता है। खान-पान के असंयम के कारण वह अनेक समस्याओं को निमंत्रण दे देता है, अनेक बीमारियां हो जाती हैं। शरीर के अनेक अवयव अव्यवस्थित हो जाते हैं।

इसलिए आदमी कुछ त्याग, नियमों को स्वीकार करे। अपने जीवन में संयम को महत्व दे। वह संयम को जीवन का भार न माने, शृंगार माने, उपहार माने। आदमी विचारों में भी संयम रखे। अनावश्यक चिन्तन न करे और किसी के बारे में गलत न सोचे, निषेधात्मक विचारों को स्थान न दे। यदि जीवन में संयम का अवतरण हो जाता है तो आदमी शान्तिमय जीवन जी सकता है।

चौथा सूत्र है-समय नियोजन। आदमी की दिनचर्या ठीक होनी चाहिए। कई बार अव्यवस्थित दिनचर्या के कारण करणीय कार्य छूट जाते हैं और समय बीत जाता है। इसलिए आदमी को

हर आदमी को 24 घण्टे का समय मिलता है। उसमें से कुछ समय चेतना के लिए भी लगाना चाहिए। आदमी केवल शरीर के आस-पास ही न रहे, आत्मा के आस-पास रहने का भी अभ्यास करे। यदि आदमी का संकल्प हो तो कुछ समय चेतना के लिए निकाला जा सकता है।

योजनाबद्ध कार्य करना चाहिए। हर आदमी को 24 घण्टे का समय मिलता है। उसमें से कुछ समय चेतना के लिए भी लगाना चाहिए। आदमी केवल शरीर के आस-पास ही न रहे, आत्मा के आस-पास रहने का भी अभ्यास करे। यदि आदमी का संकल्प हो तो कुछ समय चेतना के लिए निकाला जा सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि उसको प्राथमिकता दी जाये। मैं तो सोचता हूँ कि आदमी को सोने-जागने का समय निश्चित रखना चाहिए। यदि दोनों न बैठ सकें तो कम-से-कम एक समय तो निश्चित रखना ही चाहिए। गुरुदेव तुलसी को मैंने देखा, उनके सोने में देरी हो जाती थी, किन्तु उनके जागने का समय निश्चित था। वे प्रातः चार बजे विराजमान हो जाते थे। आचार्य श्री महाप्रज्ञ अपने समय को प्रायः पूर्ण नियोजित रखते थे। किस समय कौन-सा कार्य करना चाहिए, यह ध्यान देकर समय-नियोजन करना चाहिए। आदमी अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित रखे और कुछ समय अध्यात्म-चेतना के लिए भी लगाये तो शान्तिमय जीवन जी सकता है।

आदमी में ईमानदारी के प्रति निष्ठा जाग जाये, संवेगों पर नियंत्रण करना सीख ले, संयम का भाव पुष्ट हो जाये और समय-नियोजन करना सीख ले तो जीवनशैली विशिष्ट/प्रशस्त बन सकती है और वह शान्तिमय, सुखमय जी सकता है।

"अणुव्रत सात्विक और आनंदमय जीवन जीने का मार्ग है।"

जीवन को जगमग करे...

इकराम राजस्थानी-जयपुर

मानव सेवा से बड़ा, नहीं है कोई धर्म।
सब धर्मों से श्रेष्ठ है, केवल मानव धर्म।।

अणुव्रत के अनुशास्ता, तुलसी गुरुवर तात।
तुमने दी संसार को, अणुव्रत की सौगात।।

खड़ा हुआ है विश्व में, ले अपनी पहचान।
एटम बम के सामने, अणुव्रत सीना तान।।

जीवन को जगमग करे, सुखमय हो संसार।
मिले अगर सौभाग्य से, अणुव्रत का आधार।।

सभी धर्म रखते जहां, अपने भिन्न विचार।
अणुव्रत में दिखता हमें, सब धर्मों का सार।।

इक दूजे के काम आ, मन से मन को जोड़।
जिससे टूटे देश वो, तोड़फोड़ तू छोड़।।

गुरुवर तुलसी ने किया, अद्भुत आविष्कार।
एटम बम के सामने, अणुव्रत का हथियार।।

विश्वयुद्ध के द्वार पर, आ पहुँचा संसार।
अणुव्रत ही कर पाएगा, अब तो बेड़ा पार।।

जय जय ज्योतिचरण जय जय महाश्रमण

ज्वेलर्स शॉप इंश्योरेंस

लाईफ इंश्योरेंस

कैशलेस मेडीक्लेम

हमारे विशेषज्ञों द्वारा
अपनी पुरानी ज्वैलर्स ब्लॉक पॉलिसी
या मेडिक्लेम पॉलिसी की जाँच करवाएँ और
अनुकूल नियमों और शर्तों के साथ
मुफ्त कोटेशन प्राप्त करें ।

नो रुम कैटगरी वाली
कैशलेस मेडिक्लेम पॉलिसी लें
और इसे केवल 2600/- की
मामूली राशि से सुपर टॉप अप
पॉलिसी के साथ जोड़ें

इंश्योरेंस टिप्स

अपने पुराने जीवन बीमा पॉलिसी
नंबर के साथ शेयर करें,
हम एक परिवार पोर्टफोलियों प्रदान करेंगे
और उसी के अनुसार बेहतरीन योजना
की सलाह देंगे ।

यदि किसी इंश्योरेंस कंपनी ने आपके
मौजूदा क्लेम को खारिज कर दिया है
और आपको किसी सहायता या सलाह
की आवश्यकता होती है, तो हम
मदद के लिए तैयार है ।

Legacy of 39 Years

25000 HAPPY CUSTOMERS INDIA & ABROAD

11000 Claims Solved

300 National & International Awards

वर्ष 2020-21 में हमने 50+ करोड़ की वैल्यु के क्लेम सैटल किए है जिसमे पॉलीसी है
ज्वैलर्स ब्लॉक, लाईफ इन्शुरेन्स, मेडीक्लेम, फायर एवं बर्गलरी.

Ganpat Dagliya
Gold Medalist
T.O.T - U.S.A

NICE™
INSURANCE LANDMARK
One Stop Insurance Solution in India !

हम देश विदेश में सभी ग्राहको को ऑनलाईन सुविधा द्वारा सेवा देते है.

Chirag Dagliya
M.B.A & Harvard Cert.
T.O.T - U.S.A

Contact Details :
A 801/802/803, Shreepati Aradhana, 8th Floor, Dr. A.Merchant Road Kabutar Khana, Near Kalbadevi,
Marine Lines (East) Mumbai- 400002 • Email : info@niceinsure.com | www.niceinsure.com | Inter Com : 5050
LIC Department : 7045850013 | 7045850014 • Jewellers Department : 7045850015 | 9167860661 | 7045850013
Mediclaim Department : 7045850016 | 7047850017 | 9167860665 | 7045850013 • Motor Department : 9167860661
Claim Support Team : 7045850012 | 9167860663 • Landline : 022 - 46090022 | 46090023 | 46090024 | 40062222

ललित गर्ग

विश्व समाज में सिविल सोसायटी की भूमिका

वसुधैव कुटुम्बकम् के लिए व्यापक प्रेम की वृत्ति, सहयोग भावना और हृदय की विशालता आवश्यक है। नागरिक समाज का दृष्टिकोण एक ऐसी दुनिया बनाना है जहाँ हर कोई अपनी पसंद का जीवन जीये तथा आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र को जवाबदेह बनाया जाये।

सिविल सोसायटी अर्थात् नागरिक समाज नागरिकों की स्वयं के लिए स्वयं की व्यवस्था है। इसकी उत्पत्ति प्राचीन काल में हुई थी, हालाँकि समय के साथ इसकी समझ और अर्थ बदल गये हैं। रोमन शब्द सोसाइटीस सिविलिस इसका मूल शब्द था जो एक अच्छे एवं आदर्श समाज का पर्याय था। जर्मन दार्शनिक हेगेल ने नागरिक समाज शब्द गढ़ा था। एक नागरिक समाज में लोग समाज के कल्याण के वांछित उद्देश्य को प्राप्त करने या लोगों की समस्याओं को राज्य के समक्ष उठाने या स्वयं के स्तर पर समाधान का प्रयत्न करने के लिए स्वेच्छा से एक साथ आते हैं। मूलतः राज्य की रिक्तता को नागरिक समाज द्वारा उचित रूप से भरा जा सकता है।

लगातार जटिल होती शासन-व्यवस्थाओं-प्रक्रियाओं और बढ़ती जन-समस्याओं के बीच सिविल सोसायटी - नागरिक समाज की उपयोगिता एवं प्रासंगिकता विश्व स्तर पर बढ़ती जा रही है। एक समाज के रूप में हमें नागरिक समाज की आवश्यकता है क्योंकि यह राज्य के अत्याचार के खिलाफ बुनियादी मानवीय जरूरतों की रक्षा करता है। अल्पसंख्यक, आदिवासी, दलित वर्ग के अधिकारों के साथ-साथ स्वतंत्रता और व्यक्तिगत अधिकारों की विधिवत रक्षा नागरिक समाज द्वारा की जाती है। इसमें निर्वाचित नीति-निर्माताओं और प्रशासन के कार्यों को प्रभावित करने की शक्ति होती है। सिविल सोसायटी में ऐसे समूह और संगठन शामिल होते हैं जो नागरिकों की सेवा, सद्भावना, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण आदि जनहित के क्षेत्रों में सरकारी और लाभ क्षेत्रों के बाहर रहकर काम करते हैं। नागरिक जीवन को उन्नत, निष्कंटक, नैतिक, स्वस्थ एवं आदर्श बनाने के लिए ऐसे सिविल सोसायटी समूहों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

भारत में आजादी के तत्काल बाद लोगों के नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों को बल देने के लिए आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया, यह नागरिक समाज का एक आदर्श उदाहरण है। 'निज पर शासन फिर अनुशासन' के घोष पर चला अणुव्रत आन्दोलन एवं इससे जुड़ी संस्थाएं नागरिक समाज के अनूठे एवं प्रभावी उदाहरण हैं। विश्व पटल पर रेडक्रॉस जैसी संस्था द्वारा स्वास्थ्य एवं शांति का प्रसार किया जा रहा है। इसी तरह, पीस इंटरनेशनल, ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन और एसआईपीआरआई आदि निरस्त्रीकरण, शांति और भविष्य के लिए नये वैश्विक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने में मदद करते हैं।

नागरिक समाज को राज्य से अलग और भिन्न मानने का काम सर्वप्रथम राजनीतिक दार्शनिक जी. डब्लू. एफ. हीग ने

भारत में सामाजिक लोकतंत्र और उदार लोकतंत्र के लिए लोगों की पूर्ण प्रतिबद्धता सिविल सोसायटी को तेजी से सक्रिय और मजबूत बनाने में मददगार रही है। सूचना का अधिकार जैसा कानून सिविल सोसायटी के लम्बे संघर्ष का ही परिणाम है जिसने सिविल सोसायटी को अतिरिक्त ताकत दी है।

किया था। उन्नीसवीं सदी में इस काम को कार्ल मार्क्स और फेडरिक एंजेल्स ने आगे बढ़ाया। बीसवीं सदी में नागरिक समाज की अवधारणा का विश्लेषण एंतोनियो ग्रम्शी द्वारा किया गया। जेफ्री अलेक्जेंडर के अनुसार सिविल सोसायटी एक समावेशी छाते जैसी अवधारणा है जो राज्य के बाहर की अनगिनत संस्थाओं के संबंध में उद्धृत की जाती है।

दुनिया में ऐसी अनेक समस्याएं हैं जिनका समाधान सरकार एवं आर्थिक मोर्चों पर संभव नहीं हो पाया है, इनके लिए सिविल सोसायटी कारगर रही है। भारत को अंग्रेजी शासन से मुक्ति नागरिक समाज की संगठित शक्ति एवं संघर्ष का ही उदाहरण है। बार एसोसिएशन ऑफ पाकिस्तान ने 2008 में जनरल परवेज मुशर्रफ को एक लोकतांत्रिक राज्य और समाज के रूप में विकसित करने में सक्षम लोकतांत्रिक सरकार के गठन के लिए लोकतांत्रिक और स्वतंत्र चुनाव कराने की माँग को स्वीकार करने के लिए मजबूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। फरवरी 2011 में मिस्र के नागरिक समाज ने अपने देश में हुस्नी मुबारक के सत्तावादी शासन को हटाने के अपने उद्देश्य को हासिल किया। ट्यूनीशिया का नागरिक समाज अपने देश में अधिनायकवाद की ताकतों को उखाड़ फेंकने में सफल रहा।

भारत में सामाजिक लोकतंत्र और उदार लोकतंत्र के लिए लोगों की पूर्ण प्रतिबद्धता सिविल सोसायटी को तेजी से सक्रिय और मजबूत बनाने में मददगार रही है। सूचना का अधिकार जैसा कानून सिविल सोसायटी के लम्बे संघर्ष का ही परिणाम है जिसने सिविल सोसायटी को अतिरिक्त ताकत दी है। अन्ना हजारे के भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन ने भारत में सत्ता परिवर्तन में सिविल सोसायटी की भूमिका को रेखांकित किया है।

भारत एक ऐसा देश है जिसके पास ऐतिहासिक अतीत, घटनापूर्ण वर्तमान और महत्वाकांक्षी भविष्य है। सरकार ने आने वाले वर्षों में बेहतर जीवन स्तर, समृद्ध अर्थव्यवस्था, शक्तिशाली रक्षा समझौते, सामंजस्यपूर्ण समाज की आशा के साथ नये भारत के भविष्यवादी विचार की रूपरेखा प्रस्तुत की है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए बजट आवंटित किया गया है, योजनाएं शुरू की गयी हैं और विज्ञापन, जागरुकता अभियान शुरू किये गये हैं। इस लिहाज से नये भारत-सशक्त भारत के निर्माण में नागरिक समाज की प्रभावी भूमिका की जरूरत है। नागरिक समाज की भागीदारी ने स्वच्छ भारत मिशन में बड़ी सफलता प्राप्त की है।

इसी तरह, वैश्विक स्तर पर विभिन्न गैर सरकारी संगठन प्रकृति और जैव विविधता के संरक्षण के लिए काम कर रहे हैं जो एक स्वस्थ, स्वच्छ और जैविक रूप से सुदृढ़ विश्व के निर्माण में सिविल सोसायटी की भूमिका को दर्शाता है। पेड़ों की सुरक्षा के लिए अतीत के चिपको आंदोलन से लेकर आज के अरावली बचाओ और नर्मदा बचाओ अभियान जैसे नागरिक समाज आंदोलन नये भारत के विचार के साथ तालमेल बिठाते हुए एक समान उद्देश्य प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। इसके अलावा, बहुसंख्यकवादी प्रवृत्तियों को रोकने और विविधता की भावना की रक्षा करने में नागरिक समाज की बड़ी भूमिका है।

पर्यावरण संरक्षण, भ्रष्टाचार उन्मूलन एवं मानवाधिकारों की सुरक्षा के लिए नागरिक समाज को अधिक संगठित और सुनियोजित करने की अपेक्षा है। भारतीय संस्कृति ने नागरिक समाज के अनेक सूत्र दिये हैं, जिनमें सारी वसुधा को अपना कुटुम्ब बनाने का अनूठा विचार है, इसी धरती से वसुधैव कुटुम्बकम् का मंत्र उच्चारित हुआ। इसके लिए व्यापक प्रेम की वृत्ति, सहयोग भावना और हृदय की विशालता आवश्यक है। जो स्वयं को प्रेम नहीं करता, वह किसी को प्रेम नहीं कर सकता। इसी प्रकार जो अपने परिवार को नहीं संभाल सकता, वह बड़े परिवार यानी समाज एवं राष्ट्र को क्या संभालेगा? इसलिए नागरिक समाज का दृष्टिकोण एक ऐसी दुनिया बनाना है जहाँ हर कोई अपनी पसंद का जीवन जीये तथा आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र को जवाबदेह बनाया जाये। सिविल सोसायटी की निष्पक्षता और सिद्धांतपरकता इस उद्देश्य को हासिल करने के लिए आवश्यक है।

नयी दिल्ली में रह रहे लेखक स्तम्भकार तथा सुखी परिवार फाउंडेशन के अध्यक्ष हैं। अणुव्रत लेखक मंच के संयोजक रहे हैं।

रेनू सैनी

सी स्पंज से सीखें मुश्किल हालात में जीना

यदि मन में कभी असफलता या तनाव के कारण जीवन से मुँह मोड़ लेने की इच्छा जन्म लेने लगे तो सी स्पंज को याद करना न भूलें। उसे याद करते ही मन में जबर्दस्त इच्छाशक्ति का जन्म हो जाएगा जो अनगिनत कमजोरियों और विषम परिस्थितियाँ होने के बावजूद आगे बढ़ने की कला सिखाएगी।

अनेक जीव-जंतु, पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े पृथ्वी पर जीवनयापन करते हैं। इनमें मनुष्य सबसे बुद्धिमान प्राणी है क्योंकि वह हर परिस्थिति में जीना जानता है। फिर भी कई बार मनुष्य असफलता या परेशानियों से हार मान जाता है और निराश होकर बैठ जाता है। जब कहीं कोई राह न दिख रही हो, तब सी स्पंज से प्रेरणा लेकर जीवन को एक नयी दिशा दी जा सकती है।

हम सभी के घरों में बर्तन साफ करने के लिए स्पंज होते हैं, कुछ उसी तरह होता है समुद्र में रहने वाला जीव सी स्पंज। जिस तरह बर्तन साफ करने वाले स्पंज में अनगिनत छिद्र होते हैं, ठीक वैसे ही छिद्र सी स्पंज में भी होते हैं। ऐसा कमजोर शायद ही पृथ्वी पर कोई और जीव हो। यह चींटी से भी अधिक कमजोर माना जा सकता है क्योंकि चींटी का लघु शरीर कम से कम पूरा तो होता है, वहीं सी स्पंज का सिर, मुख, आँखें, हड्डियाँ, फेफड़े, मस्तिष्क या हृदय नहीं होता। यहाँ तक कि मांसपेशियाँ और नसें भी नहीं होतीं। इतनी सारी कमियों के बावजूद यह लंबे समय तक जीवित रहता है। आखिर कैसे? क्योंकि यह परिस्थितियों के हिसाब से जीना तो सीख ही लेता है, विपरीत परिस्थितियों में भी जीता है और जीतता है।

जापान के कला समीक्षक और विद्वान काकुजो ओकाकुरा कहते हैं, "जीवन की कला अपने परिवेश से सतत तालमेल करते रहने में निहित है।" यही तालमेल सी स्पंज करते हैं और परिस्थितियों से अनुकूलन करके अपने पास उपस्थित संसाधनों का अधिकतम उपयोग करते हैं। ये समुद्र की धाराओं में तैरने वाले बैक्टीरिया और जैविक कणों को पकड़कर साफ करते हैं और फिर उन्हें पचाते हैं।

सी स्पंज की तरह समाज में अनेक व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने अनेक कमियों के बावजूद शिकायत न करते हुए अपने जीवन को मिसाल बना दिया। इनमें स्टीफन हॉकिंग, निक वुजिसिक, जेसिका कॉक्स आदि प्रमुख हैं। स्टीफन हॉकिंग 21 वर्ष की उम्र के आसपास एमियोट्रेफिक लेटरल स्कलेरोसिस नामक बीमारी से ग्रस्त हो गये थे। इस बीमारी में धीरे-धीरे शरीर के अंग काम करना बंद कर देते हैं। लेकिन स्टीफन ने हिम्मत नहीं हारी और बीमारी के बावजूद उन्होंने अपने प्रयोगों से असाधारण सफलता हासिल कर दुनिया को चकित कर दिया। इसी तरह निक वुजिसिक बिना हाथ और पैरों के पैदा हुए थे। उन्होंने बड़े होते-होते अपनी कमियों को स्वीकार कर उनसे जीना सीख लिया और आगे बढ़ते रहे। आज वे एक प्रेरक वक्ता हैं और करोड़ों लोग उनके

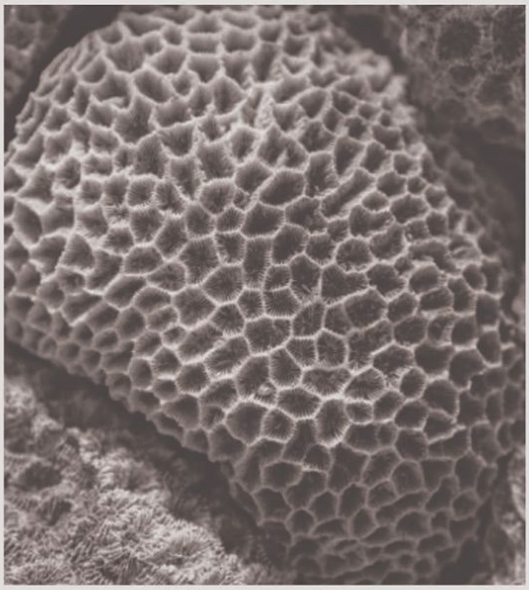

कमजोरी कुछ और नहीं केवल हमारे मस्तिष्क की व्यर्थ उपज होती है। कमजोरी तभी तक कमजोरी होती है, जब तक हम इसे कमजोरी मानते हैं क्योंकि अगर ऐसा नहीं होता तो सी स्पंज जैसे जीव का आज नामोनिशान न होता। लेकिन ये लंबा जीवन जीते हैं।

अनुयायी हैं। इसी तरह बिना हाथों के जन्म लेने वाली जेसिका कॉक्स आज पैरों से विमान उड़ाने वाली दुनिया की पहली महिला पायलट हैं। वे कहती हैं कि दुनिया में ऐसी कोई चीज नहीं है जिसका विकल्प मौजूद नहीं है।

सी स्पंज मनुष्य को बहुत गहन बातें सिखाता है। वह चल नहीं सकता। इसे स्थिर जीव माना जाता है। यह स्थिर रहकर भी अपना जीवन आत्मविश्वास के साथ बिताता है और हर पल को जीता है। यह समुद्र की तलहटी में रहता है और स्वयं को पानी के नीचे किसी ठोस जगह पर स्थायी रूप से टिका लेता है। जब यह समुद्र की तलहटी में एक जगह स्थिर हो जाता है, उस समय इसकी आकृति पौधे जैसी लगती है। इसके छोटे छिद्रों के कई उपयोग होते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य स्पंज के विकास को कायम रखना है। ये छिद्र पोषक पदार्थ एकत्रित करते हैं और सामान्य प्राणी की तरह जीवनयापन करते हैं।

कमजोरी कुछ और नहीं केवल हमारे मस्तिष्क की व्यर्थ उपज होती है। मशहूर अभिनेता और स्टैंडअप कॉमेडियन नॉर्म क्रॉसबी कहते हैं, "कमजोरी तभी तक कमजोरी होती है, जब तक आप इसे कमजोरी मानते हैं।" क्योंकि अगर ऐसा नहीं होता तो सी स्पंज जैसे जीव का आज नामोनिशान न होता। लेकिन ये लंबा जीवन जीते हैं। कई सी स्पंज तो 200 साल से ज्यादा जीते हैं। बेहद जर्जर शरीर होते हुए आखिर ये हिंसक प्राणियों से अपनी रक्षा कैसे करते होंगे? ये अपना आकार बदलकर परिस्थितियों के प्रति अनुकूलन करते हैं। हिंसक जीव-जंतुओं से बचने के लिए ये रसायनों का इस्तेमाल करते हैं। इस तरह ये हिंसक जीव-जंतुओं को स्वयं से दूर रखते हैं। सी स्पंज कमजोर होते हुए भी अपने गुणों से ऑलराउंडर बन जाता है क्योंकि इसकी हर कोशिका जानती है कि काम कैसे करना है। ये कोशिकाएं खोये हुए टुकड़ों को दोबारा उगाने की योग्यता रखती हैं। अगर किसी सी स्पंज के तीन टुकड़े कर दिये जाएं तो उसकी कोशिकाएं नयी संरचना में जुड़कर एक नया स्पंज बना देती हैं। फिर वहां तीन नये सी स्पंज बन जाते हैं।

प्रकृति का एक नियम है कि जो स्वयं के लिए जागरूक होता है, प्रकृति उसका साथ देती है। अमरीकी नवजागरण के प्रवर्तक रैल्फ वाल्डो इमर्सन के अनुसार, "प्रकृति ने अपना मन बना लिया है कि जो खुद की रक्षा नहीं कर सकता, वह उसकी रक्षा नहीं करेगी।" इसी सिद्धांत पर प्रकृति चलती है।

दिल्ली में रहने वाली लेखिका राष्ट्रीय स्तर की एंकर और हिन्दी कमेंटेटर हैं। ये भारतेन्दु हरिश्चंद्र पुरस्कार समेत अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हो चुकी हैं।

बाधाओं से हार न मानें

■ राजेंद्र प्रसाद श्रीवास्तव - विदिशा ■

हमें प्रेम अपने भारत से।
मेहनत से हम मुँह न मोड़ें।
अकर्मण्यता की जंजीरें,
अपने पुरुषार्थ से तोड़ें।

यह आलस्य, हीनता त्यागें।
साथ समय के दौड़ें-भागें।
अप्रिय ठीकरा असफलता का,
अन्य किसी के सिर न फोड़ें।

सरिताएँ ज्यों आगे बढ़तीं
चट्टानों से डटकर लड़तीं।
देख अडिगता चट्टानों की,
स्वयं दिशा कुछ अपनी मोड़ें।

लक्ष्य चुनें फिर पथ पहचानें
बाधाओं से हार न मानें।
देश-प्रेम, एकता, प्रगति से
जन को जन-गण-मन से जोड़ें।

डॉ. अनुभा गुप्ता

अनुशासन के नाम पर न हो क्रूरता

बच्चे बड़े मासूम और भोले होते हैं। चंचलता उनका स्वभाव होता है। बच्चे अनुशासित रहें, यहाँ तक तो ठीक है, किन्तु अनुशासन के नाम पर उन्हें मारना, पीटना ठीक नहीं। बच्चों के प्रति सख्ती के साथ-साथ नरमी भी बरतें। अन्यथा वे कभी आपको माफ नहीं करेंगे और दोनों के बीच दूरियां बढ़ती जाएंगी।

हमारे एक मित्र अत्यधिक अनुशासनप्रिय हैं। उनके अनुशासन का प्रभाव ऐसा है कि घर का प्रत्येक सदस्य उसका पालन करता है। अन्यथा उसे उनका कोपभाजन बनना पड़ता है। बच्चों पर तो वे हद दर्जे की सख्ती बरतते हैं। उनकी सोच है कि यदि बच्चों पर सख्ती नहीं की गयी, तो वे बिगड़ जाएंगे। उनके तीन बच्चे हैं, दो बेटियां तथा एक बेटा। बेटियां अपने पिता के स्वभाव को जानते हुए उनकी मर्जी के खिलाफ चूं तक नहीं करतीं। लेकिन एक दिन जब घर में कोई कार्यक्रम था और काफी मेहमान आये हुए थे, उनके बेटे ने जाने-अनजाने में अनुशासन तोड़ा। इस पर वे इतने क्रोधित हुए कि मेहमानों की उपस्थिति में ही बच्चे को जमकर फटकार लगायी। वह तो अच्छा हुआ कि मेहमानों में से किसी ने उन्हें रोक लिया, वरना बच्चे की जबर्दस्त पिटाई हो जाती।

एक दिन गली-मोहल्ले के कुछ बच्चे घर के बाहर खेल रहे थे। पप्पू ने भी खेलने जाने की जिद की। इस पर माँ ने उसे दो चपत लगाते हुए नसीहत दी, "पढ़ने के नाम पर तो तेरी नानी मरती है। बड़ा आया खेलने वाला। चुपचाप पढ़ने बैठ।"पप्पू कुछ देर तक तो बेमन से पढ़ता रहा, फिर माँ से नजर चुराकर खेलने चला गया। जब वह खेलकर लौटा, तो माँ ने उसे देख लिया। इसी बीच उसके पापा भी ऑफिस से लौटे। माँ ने उनसे शिकायत की, "पप्पू हाथ से निकला जा रहा है। मेरी तो सुनता ही नहीं है। आप ही इसके साथ सख्ती से पेश आ सकते हैं। तभी यह सुधरेगा।" पिता ने आव देखा न ताव, पप्पू की जमकर पिटाई कर दी। यही नहीं, उसे कमरे में बंद कर बाहर से ताला लगा दिया। क्या बच्चे के प्रति ऐसी सख्ती बरतना क्रूरता नहीं है?

कुछ माँ-बाप तो बच्चों के प्रति इतने निष्ठुर हो जाते हैं कि उनकी शामत आ जाती है। वे रोते-बिलखते हैं, लेकिन माँ-बाप के सिर पर जब गुस्सा सवार होता है, तो वे आपा खो देते हैं। कई बार तो माँ-बाप की अत्यधिक सख्ती या पिटाई बच्चे की जान ही ले लेती है। उसने ऐसा कोई अक्षम्य अपराध तो नहीं किया था कि उसे इतनी बड़ी सजा दी जाये। क्या बच्चे को प्यार से या बातचीत से समझाया नहीं जा सकता?

बच्चे को उसकी गलती का एहसास कराना, समझाना तथा उसे न दोहराने की नसीहत देना एक बात है और उसे सबक सिखाने के नाम पर औरों के समक्ष जलील करना दूसरी बात। यह मत भूलिए कि बच्चों का भी आत्मसम्मान होता है। उनके आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाने से उनका मन व्यथित हो जाता है। खास तौर पर जब आप उन्हें दूसरों के समक्ष डाँटते या मारते हैं।

जब आँख दिखाने से ही काम चल जाता हो, तो क्या डंडे से मारना जरूरी है?
बच्चों को अनुशासन सिखाइए, लेकिन प्यार से। माता-पिता का सख्त रवैया बच्चों को तनाव में रखता है और उन्हें अवसाद का शिकार बना देता है। वे मानसिक रूप से बीमार हो सकते हैं।

कई अभिभावकों की सोच होती है कि यदि बच्चों पर सख्ती नहीं बरती गयी, तो वे अनुशासनहीन हो जाएंगे, जबकि यह उनका भ्रम है। अधिक सख्ती का बच्चों पर नकारात्मक असर होता है और वे ढीठ हो जाते हैं। एक समय के बाद माँ-बाप की सख्ती का भी उन पर कोई असर नहीं होता। उन्हें पता होता है कि अधिक से अधिक आप उन्हें डांटेंगे, मारेंगे या प्रताड़ित करेंगे। इसके वे आदी हो चुके होते हैं। इसलिए एक सीमा तक ही सख्ती बरतनी चाहिए। जब आँख दिखाने से ही काम चल जाता हो, तो क्या डंडे से मारना जरूरी है?

बच्चों को अनुशासन सिखाइए, लेकिन प्यार से। माता-पिता का सख्त रवैया बच्चों को तनाव में रखता है और उन्हें अवसाद का शिकार बना देता है। वे मानसिक रूप से बीमार हो सकते हैं। नये अध्ययनों से पता चला है कि सख्त पैरेंटिंग की वजह से बच्चे अपना आत्मविश्वास खो देते हैं और बड़े होने के बाद भी इससे उबर नहीं पाते।

बच्चों की शैतानियों पर उन्हें डांटना लाजिमी है, लेकिन उनके प्रति हमेशा सख्त रवैया अपनाना उनके मानसिक स्वास्थ्य को लंबे समय तक प्रभावित करता है। पैरेंट्स अगर बच्चों से हमेशा कड़ाई से पेश आते हैं, तो इसका असर बच्चों के डीएनए पर पड़ सकता है। बेल्जियम की ल्यूवेन यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने एक अध्ययन में शामिल बच्चों के डीनए में ऐसे 4.50 लाख स्पॉट्स खोजे हैं, जिन पर पैरेंट्स की डांट का असर पड़ता है। इस अध्ययन में शामिल वैज्ञानिकों ने दावा किया कि सख्त पैरेंटिंग से गुजरे बच्चों के लिए लोगों से भावनात्मक रूप से जुड़ना मुश्किल होता है। वे बड़े होने पर भी दोस्त नहीं बना पाते। समाज से कटे-कटे रहते हैं। पढ़ाई-लिखाई में भी बहुत बेहतर नहीं कर पाते।

इसलिए जरूरी है कि बच्चों को दूसरों के सामने फटकार न लगाएं। मारने-पीटने जैसा शारीरिक दंड कभी न दें। इसे वे अपने सम्मान पर हमला मान लेते हैं। वे जिद्दी और गुस्सैल बनते जाते हैं। उनका व्यवहार बदलने लगता है। वे माता-पिता से बातें छिपाने लगते हैं। अपना गुस्सा कहीं न कहीं उतारने लगते हैं। धीरे-धीरे हिंसक भी होते जाते हैं।

बच्चे बड़े मासूम और भोले होते हैं। चंचलता उनका स्वभाव होता है। बच्चे अनुशासित रहें, यहाँ तक तो ठीक है, किन्तु अनुशासन के नाम पर उन्हें मारना, पीटना ठीक नहीं। बच्चों के प्रति सख्ती के साथ-साथ नरमी भी बरतें। अन्यथा वे कभी आपको माफ नहीं करेंगे और दोनों के बीच दूरियां बढ़ती जाएंगी।

उज्जैन निवासी लेखिका विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में बतौर अतिथि विद्वान अध्यापन करती हैं। विभिन्न विषयों पर इनके आलेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते हैं।

अनुराग बचाकर रख

■ जय चक्रवर्ती - रायबरेली ■

सीने में अपने थोड़ी-सी आग बचाकर रख,
जीवन में हर पल जीवन का राग बचाकर रख।

अपने को बेशक रख दे थोड़ा-थोड़ा सबमें,
लेकिन अपने में अपना कुछ भाग बचाकर रख।

पास न आने दे हरगिज़ उम्मीदों को ज़्यादा,
उम्मीदों की दहलीज़ों पर त्याग बचाकर रख।

ऋतुएँ, मौसम, उत्सव सबको घर तक आने दे,
चैता, कजरी, बिरहा, रसिया, फाग बचाकर रख।

बेहतर दुनिया की खातिर आखिर इतना तो कर,
आँखों में पानी, दिल में अनुराग बचाकर रख।

शिखरचंद जैन, कोलकाता

कंजूसी आगे नहीं बढ़ने देती

कृपणता एक घातक प्रवृत्ति है जो सारी ऊर्जा पैसे बचाने में खर्च कर देती है। कृपण व्यक्ति समाज को न श्रम, न धन और न अपना मन दे पाता है। इस वजह से लोग उसकी उपेक्षा करते हैं। ऐसे व्यक्ति जिंदगी को किसी तरह बिता रहे होते हैं, जबकि ईश्वर ने जिंदगी जिंदादिली, सुकून और खुशहाली से बिताने के लिए दी है।

पिछली सर्दियों में कोलकाता में एक भिखारिन ठंड से ठिठुर कर मर गयी। पुलिस ने उसके सामान की जाँच की तो उसके मैले-कुचैले थैले और बोरी में दबाकर रखे गये करीब ढाई लाख रुपये मिले। दिलचस्प और दुःखी करने वाली बात यह रही कि कृपणता ने पैसे और साधन होने के बावजूद भिखारिन को कभी सुकून से न जीने दिया और न जीविकोपार्जन के लिए कोई सम्मानजनक काम या रोजगार ही करने दिया।

दरअसल कुछ लोग अभाव के कारण गरीब होते हैं और कुछ अपने स्वभाव के कारण दीन-हीन जीवन जीते हैं। ऐसे लोग न कभी अच्छा सोच सकते हैं, न अच्छा कर सकते हैं, न अच्छा जीवन जी सकते हैं। कृपणता एक घातक प्रवृत्ति है जो सारी ऊर्जा पैसे बचाने में खर्च कर देती है, जबकि व्यक्ति को अपनी मानसिक और शारीरिक ऊर्जा पैसा कमाने, समाज को कुछ सार्थक देने और तरक्की की योजनाएं बनाने में खर्च करनी चाहिए।

कृपण व्यक्ति समाज को न श्रम, न धन और न अपना मन दे पाता है। इस वजह से लोग उसकी उपेक्षा करते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने सीमित दायरे में जिंदगी को किसी तरह बिता रहे होते हैं, जबकि ईश्वर ने जिंदगी जिंदादिली, सुकून और खुशहाली से बिताने के लिए दी है। दुनिया के ज्यादातर लाइफ कोच, करियर काउंसलर एवं लीडरशिप एक्सपर्ट्स का अनुभव बताता है कि सफल होने वाले व शीर्ष पर पहुँचने वाले लोगों में जरूरतमंद लोगों की मदद करने तथा अपने समाज को समय या धन दान देने की प्रवृत्ति होती है।

सफलता, सुकून और खुशहाली का बहुत ज्यादा दारोमदार आपकी सोच, नजरिये और मानसिक स्थिति पर होता है। सफल लोगों का अपने जीवन और अस्तित्व के प्रति जो फलसफा है, वह यह है कि मैं इस दुनिया में श्रेष्ठ बनने आया हूँ। मुझे अपने देश और समाज के साथ खुद के लिए भी श्रेष्ठ बनना है। इसलिए मुझे खुद को बेस्ट ट्रीटमेंट देना चाहिए।

जब तक आप खुद को सक्षम और सफल नहीं मानेंगे और दूसरों को अपने बारे में ऐसा यकीन दिलाने में सक्षम नहीं हो जाएंगे, तब तक आप सफलता का स्वाद नहीं चख सकते। ढीले-ढाले और दीन-हीन दिखने वाले लोग ताउम्र या तो औसत जिंदगी या फिर असफल जिंदगी ही जीते हैं। जाने-माने लीडरशिप कोच रोबिन शर्मा ने अपनी पुस्तक 'द ग्रेटनेस गाइड' में लिखा है, "अगर आपको विशिष्ट व्यक्ति बनना है तो सबसे पहले खुद को विशिष्ट समझना होगा।"

मशहूर जादूगर अल कुरान अपनी पुस्तक 'ब्रिंग आउट द मैजिक इन योर माइंड' में लिखते हैं, "सफल होना है तो वहाँ जाइए जहाँ सफल लोग हैं। वहाँ जाकर आप खुद को बेहतर महसूस करेंगे और आपका एटिट्यूड भी लोगों व अपने काम के प्रति बेहतर होगा।"

कदमों के निशां

आचार्य तुलसी ने कहा था, अणुव्रत चरित्र निर्माण का आंदोलन है। अणुव्रत पुरस्कार की स्थापना के पीछे उद्देश्य है उन लोगों का आदर जो चरित्र निर्माण के लिए कृत संकल्प हैं। अणुव्रत के आदर्शों के प्रति जिनके मन में गहरी निष्ठा है। ऐसी विभूतियों की प्रतिष्ठा से समाज में नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था बढ़ेगी।

आचार्य महाप्रज्ञ का कहना था, "सत्य की खोज करना बड़ी बात है और उससे भी बड़ी बात है सत्य को क्रियान्वित करना। अणुव्रत पुरस्कार सत्य को क्रियान्वित करने वालों को मिलता है। अतः मैं कह सकता हूँ कि यह सबसे बड़ा पुरस्कार है।" आचार्य महाश्रमण कहते हैं, ''भारत के नागरिकों में नैतिकता के प्रति आस्था पुष्ट बने, अणुव्रत इसी दिशा में कार्यशील है। अणुव्रत पुरस्कार नैतिक मूल्यों के महत्व को प्रतिपादित करने वाला अभिक्रम है।''

वर्ष 1981 में अणुव्रत पुरस्कार की शुरुआत की गयी। तब से 28 विभूतियों को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। अणुव्रत पुरस्कार के अंतर्गत प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न और एक लाख इक्यावन हजार रुपये की राशि प्रदान की जाती है। अणुव्रत पुरस्कार प्राप्त करने वालों की जीवन गाथा से परिचित होना मानवीय मूल्यों से साक्षात करना है। आने वाली पीढ़ियां इनके जीवन से प्रेरणा लेकर स्वस्थ समाज की संरचना की दिशा में कदम बढ़ाएं, इसी उद्देश्य से अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित विशिष्ट व्यक्तियों का परिचय यहां क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित व्यक्तित्व

नीतीश कुमार
शराबबंदी से फैलाया आशाओं का उजाला

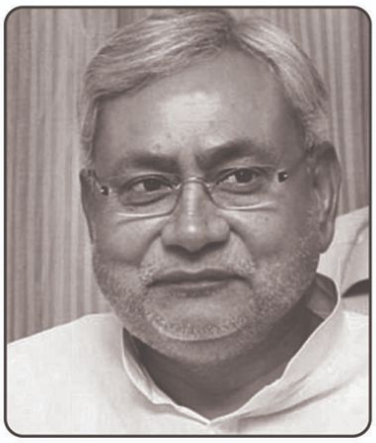

श्री नीतीश कुमार का जन्म अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तन से ठीक दो वर्ष पूर्व 1 मार्च, 1951 को बिहार के बख्तियारपुर में हुआ। आपके पिताजी का नाम कविराज श्री रामलखन सिंह तथा माताजी का नाम श्रीमती परमेश्वरी देवी था। आपके पिताजी स्वतंत्रता सेनानी तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य थे। बाद में वे जनता पार्टी के सदस्य बन गये।

नीतीश कुमार ने बख्तियारपुर के श्री गणेश हाई स्कूल से 12वीं पास करने के बाद बिहार कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग (एन.आई.टी.) से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की। इसके बाद उन्होंने कुछ समय तक राज्य बिजली बोर्ड में सेवाएँ दीं। आप लोकनायक जयप्रकाश नारायण से बेहद प्रेरित रहे। जेपी मूवमेंट में अहम भूमिका निभाने के बाद सन् 1974 में जनता पार्टी से जुड़ते हुए आपने सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया।

1985 में आप बिहार विधानसभा चुनाव में विजयी रहे। 1987 में आप युवा लोकदल के अध्यक्ष बने तथा 1989 में जनता दल के प्रदेश सचिव बने। इसी वर्ष आपने लोकसभा चुनाव में जीत दर्ज की। 1990 में आप पहली बार केन्द्रीय मंत्रिमंडल में कृषि राज्यमंत्री के रूप में शामिल हुए। आपने केन्द्रीय कृषि मंत्री के रूप में भी सेवाएँ दीं। सन् 2000 में आप बिहार के मुख्यमंत्री बने।

नवम्बर 2005 में फिर मुख्यमंत्री के रूप में आपकी ताजपोशी हुई। सन् 2010 के बिहार विधानसभा चुनाव में आप भारी बहुमत से अपने गठबंधन को जीत दिलाने में सफल रहे और पुनः मुख्यमंत्री बने। बिहार में सामाजिक ढांचे को पुष्ट करने हेतु आपकी सरकार ने स्कूली छात्राओं को साइकिल बांटी, जिससे पढ़ाई छोड़ने वाली छात्राओं की संख्या में कमी आयी।

अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी, अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ व वर्तमान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने अपनी पदयात्राओं तथा उपदेशों से देश में नशामुक्ति, अहिंसा और नैतिकता का बहुत अच्छा वातावरण बनाया है। समृद्ध ऐतिहासिक विरासत के धनी बिहार में पूर्ण शराबबंदी से नयी आशाओं का उजाला फैला है। इस उजाले को लाने का श्रेय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार को है।

बिहार के सबसे लंबे समय तक मुख्यमंत्री रहने वाले श्री नीतीश कुमार समन्वय, सहिष्णुता एवं समानता के आधार पर सबको साथ लेकर चलते हुए बिहार के सर्वांगीण विकास के लिए समर्पित हैं। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण की पुनीत निश्रा में आयोजित समारोह में श्री नीतीश कुमार को सर्वोच्च 'अणुव्रत पुरस्कार 2016' से सम्मानित किया गया।

रिश्तों की मिठास

■ ताराचंद मकसाने ■

सूचना प्रौद्योगिकी ने जहाँ हमारे बीच की दूरियाँ कम की हैं तो हमारे सामाजिक रिश्तों के बीच की भौतिक दूरियाँ बढ़ा दी हैं। यही नहीं, अब तो इन रिश्तों के बीच औपचारिकता और कृत्रिमता भी तेजी से अंकुरित हो रही है जिससे रिश्तों में मिठास की मात्रा आटे में नमक के बराबर हो गयी है।

राजेश्वर प्रसाद ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय से 38 वर्षों की लंबी सेवा से बतौर प्रधानाध्यापक रिटायर होने के बाद अपनी दिनचर्या ऐसी बना ली थी कि वे दिनभर व्यस्त रहने लगे। उन्होंने सेवानिवृत्ति के कुछ वर्ष पूर्व ही अपने छोटे-से शहर में एक बड़ा-सा मकान बनवा लिया था। राजेश्वर प्रसाद की पत्नी सरला गृहिणी थीं, वह पत्र-पत्रिकाओं में कविताएं, कहानियाँ आदि लिखती थीं। कॉलोनी के कुछ बच्चे राजेश्वर के पास पढ़ने के लिए आते थे।

हँसमुख और मिलनसार राजेश्वर के सामाजिक संपर्क का दायरा व्यापक था। उनके दोनों बेटे मुंबई में सेटल हो गये थे। बड़े बेटे ने उन्हें एक स्मार्टफोन दे रखा था, मगर वे उसका उपयोग केवल बात करने के लिए ही करते थे।

यही नहीं, बेटे ने उन्हें एक लैपटॉप भी दिया था, ताकि वे बैंक का काम ऑनलाइन करने के साथ ही बिजली, पानी आदि के बिल भी ऑनलाइन जमा करवा सकें। मगर राजेश्वर को बैंकिंग के कार्यों के लिए बैंक में जाना ही अधिक अच्छा लगता था।

बिजली, पानी आदि के बिल भी वे इनके दफ्तर में ही जाकर भरना पसंद करते थे।

राजेश्वर जब कभी अपनी पत्नी के साथ छोटे-से काम से भी बाजार जाते तो उन्हें लौटने में घंटों लग जाते थे। वे रास्ते में दस जगह रुकते थे तो बीस जगह जान-पहचान वाले उन्हें रोक लेते थे। महावीर किराना भंडार के पप्पू सेठ उन्हें चाय पिलाये बगैर लौटने नहीं देते थे तो दूधवाला लाला रामेश्वर अपने पोते से दण्डवत प्रणाम करवाने के बाद आशीर्वाद रूपी उनकी तगड़ी थाप लगने तक उन्हें दुकान की सीढ़ियाँ उतरने नहीं देता था। घर से कुछ ही दूरी पर स्थित दवा दुकानदार विक्रम भाई तो उन्हें दूर से देखकर ही कॉफी का ऑर्डर दे देते थे। नुक्कड़ पर पहुँचते-पहुँचते लक्ष्मी मिष्टान्न भंडार के मालिक चंदूभाई की गरमागरम समोसा खाने की मीठी मनुहार के सामने राजेश्वर और सरला को घुटने टेकने ही पड़ते थे। इसके अलावा बाजार में नाई, दर्जी, सब्जीवाले आदि से दुआ-सलाम करने से वे परहेज नहीं कर सकते थे।

जिस बैंक में राजेश्वर का खाता था, उस बैंक का एक युवा अधिकारी अमित उनके बेटे की उम्र का था जो बड़े अदब से उनके साथ पेश आता था। राजेश्वर नियमित रूप से बैंक जाते थे, कभी पैसे जमा करवाने तो कभी पैसे निकालने, तो कभी पासबुक अपडेट करवाने। उनका मानना था कि इसी बहाने बैंक कर्मचारियों से मुलाकात हो जाती है, फिर एक-दूसरे का हालचाल पूछने में उन्हें सुकून भी मिलता था।

एक दिन जब राजेश्वर अपनी पत्नी के साथ बैंक से पैसा निकालने गये तो बैंक में बहुत कम भीड़ थी, अमित ने उन्हें अपने पास बैठाया और चाय मँगवायी।

"अंकल, मैं आपको करीब पाँच साल से जानता हूँ। हमारे बैंक का स्टाफ आप दोनों के मधुर व्यवहार का मुरीद हो गया है। आप दोनों की बढ़ती हुई उम्र को देखते हुए मैं आपको इंटरनेट बैंकिंग की सलाह देना चाहता हूँ ताकि आपको छोटे-छोटे कामों के लिए बैंक आना न पड़े।" अमित ने उन्हें समझाते हुए कहा।

राजेश्वर मुस्कुराते हुए बोले - "बेटा, हम ठहरे पुराने जमाने के आदमी... हम घर से जब किसी काम के लिए निकलते हैं तो हमें काम से ज्यादा लोगों से मिलने-जुलने में आनंद आता है...। "

अमित ने राजेश्वर की बात बीच में काटते हुए कहा - "लेकिन अंकल...इंटरनेट बैंकिंग से आपका समय बचेगा। पाँच मिनट के काम के लिए कई बार आपको घंटे-डेढ़ घंटे तक इंतजार करना पड़ता है। इंटरनेट बैंकिंग से आप मोबाइल या लैपटॉप पर एक क्लिक से बैलेन्स देख सकते हैं, पैसे ट्रांसफर कर सकते हैं, एनईएफटी कर सकते हैं, एफडी भी बना सकते हैं। अंकल, मैं तो आपको ऑनलाइन शॉपिंग की भी सलाह देना चाहूँगा।"

"इसका मतलब तो हमारा घर से बाहर निकलना ही बंद हो जाएगा.." राजेश्वर ने मुस्कुराते हुए कहा।

"हाँ, अंकल, अब बुढ़ापे में ज्यादा बाहर घूमना भी ठीक नहीं है न..." अमित ने कहा।

"किसी दोस्त से ऑनलाइन मिलना हमें खुशियाँ जरूर देता है, मगर उसे गले लगाकर मिलने में जो आत्मीय सुख मिलता है, उसे शब्दों में बयां करना मुश्किल है। ऑनलाइन की इस दुनिया में हम वर्चुअल रूप से करीब आये हैं, मगर हमारे बीच दूरियाँ बढ़ रही हैं, और ये दूरियाँ लोगों को अकेलेपन की गहरी खाई में धकेल रही हैं।"

" अरे बेटा, हम अगर अपना सारा काम ऑनलाइन और घर बैठे ही करने लगेंगे तो लोगों से हमारा मिलना-जुलना ही बिल्कुल बंद हो जाएगा। हमारे सामाजिक रिश्ते खत्म हो जाएंगे। अमित बेटा, वैसे भी सोशल मीडिया के बढ़ते वर्चस्व ने मनुष्य की सामाजिकता को प्रायः खत्म कर दिया है। अब तो रूबरू मिलने या फोन पर बात करने का जमाना भी बीत रहा है। आजकल केवल संदेशों से काम चलाया जा रहा है। ऑनलाइन भेजे जाने वाले ये संदेश और तस्वीरें आँखों को जरूर अच्छी लगती हैं, पर दिल को सुकून नहीं देतीं। किसी दोस्त से ऑनलाइन मिलना हमें खुशियाँ जरूर देता है, मगर उसे गले लगाकर मिलने में जो आत्मीय सुख मिलता है, उसे शब्दों में बयां करना मुश्किल है। ऑनलाइन की इस दुनिया में हम वर्चुअल रूप से करीब आये हैं, मगर हमारे बीच दूरियाँ बढ़ रही हैं, और ये दूरियाँ लोगों को अकेलेपन की गहरी खाई में धकेल रही हैं।"

यह सब कहने के बाद राजेश्वर प्रसाद कुछ सोचने लगे और फिर मुस्कुराते हुए बोले - "बेटा, मैंने 38 साल तक इस शहर के सबसे बड़े स्कूल में नौकरी की है, मेरे पढ़ाये हुए हजारों बच्चों में से कुछ बच्चे इसी शहर में नौकरी और व्यवसाय कर रहे हैं। कुछ बच्चे देश के अन्य शहरों में सरकारी और निजी कंपनियों में बड़े-बड़े ओहदों पर हैं। मैं जब बाजार जाता हूँ तो मुझे दस जगह रुकना पड़ता है, लोगों से दुआ-सलाम करते-करते मैं एक-दो घंटे तक तो बाजार में ही घूमता रहता हूँ। यही नहीं बेटा, मेरी निःस्वार्थ सेवा करने के लिए तत्पर रहने वाले बच्चों की भी यहाँ कोई कमी नहीं है, मगर मुझे अपना काम स्वयं करना ज्यादा पसंद है। मैं इंटरनेट और डिजिटलाइजेशन के विरोध में नहीं हूँ। मैं यह भी मानता हूँ कि आज इंटरनेट हमारे लिए अपरिहार्य बन गया है, पर मैं तो मानवीय रिश्तों की बात कर रहा हूँ। सूचना प्रौद्योगिकी ने जहाँ हमारे बीच की दूरियाँ कम की हैं तो हमारे सामाजिक रिश्तों के बीच की भौतिक दूरियाँ बढ़ा दी हैं। यही नहीं, अब तो इन रिश्तों के बीच औपचारिकता और कृत्रिमता भी तेजी से अंकुरित हो रही है जिससे रिश्तों में मिठास की मात्रा आटे में नमक के बराबर हो गयी है।"

किंचित गंभीर होते हुए उन्होंने कहा - "अमित बेटा, आजकल तीज-त्योहारों पर एक-दूसरे के घर जाकर मिलने का चलन प्रायः समाप्त हो रहा है। अब तो मोबाइल की 'टच स्क्रीन' पर

'सिंगल टच' से हम मनचाही तस्वीर, संदेश आदि भेजकर होली-दिवाली ही नहीं, प्रायः सभी त्यौहार मना लेते हैं। सबसे बड़े दुःख की बात तो यह है कि हम अब अपनों से हाथ मिलाना, उन्हें गले लगाना, छोटों की पीठ थपथपाना, उनके सिर पर हाथ रख आशीर्वाद देना, बड़ों के चरण स्पर्श करना, माँ की गोद में सिर रखकर अनुपम आनंद लेना, बच्चों को गोद में लेकर या बांहों में भींचकर प्यार करना जैसे संस्कारों को बिसरा रहे हैं। कोरोना काल के बाद तो लोग हाथ मिलाने में भी संकोच करने लग गये हैं। अरे भाई, दोस्तों के गले में बांहें डालकर बात करने का मजा ही कुछ और होता है। आज घर में किसी बुजुर्ग रिश्तेदार या मित्र के आने पर बच्चे उनके सामने खंभे जैसे खड़े हो जाते हैं...चरण स्पर्श के लिए उन्हें कहना पड़ता है।"

जब राजेश्वर प्रसाद बोल रहे थे तब अमित के बगल में बैठे दो अन्य युवा अधिकारी भी खड़े होकर उनकी बातें गौर से सुनने लग गये। उनमें से एक बोला - "अंकल, आप बिल्कुल सही कह रहे हैं, फेसबुक पर मेरे तीन सौ से ज्यादा फ्रेण्ड्स हैं, फेसबुक पर हम एक-दूसरे के लिए मर मिटने की बातें करते हैं, मगर पिछले साल स्कूटर स्लिप होने से मेरा पैर फ्रैक्चर हो गया था। मैं करीब तीन सप्ताह तक अस्पताल में भर्ती था, तब फेसबुक पर मुझे 'गेट वेल सून' के ढेरों मैसेज मिले, पर फेसबुक के एक दोस्त ने भी अस्पताल की सीढ़ियाँ नहीं चढ़ीं। दरअसल मुझे उस समय अपने दोस्तों की बहुत जरूरत थी।"

"क्या नाम है बेटा तुम्हारा...?" राजेश्वर प्रसाद ने प्यार से उसकी ओर मुखातिब होते हुए पूछा।

"अंकल... मेरा नाम सौमित्र है...मैं अकेले ही यहाँ रहता हूँ... मेरा परिवार बिहार के एक छोटे-से गाँव में रहता है। जब मैं अस्पताल में भर्ती था, तब मेरी देखभाल मेरे पड़ोसियों और बैंक के मित्रों ने ही की थी। 'फेसबुक' के किसी फ्रेंड ने आकर अपना 'फेस' तक दिखाने की जहमत नहीं उठायी..!"

सौमित्र की ओर मुखातिब होकर राजेश्वर बोले - "बेटा समय हो तो मैं तुम्हें एक घटना सुनाऊं जो कुछ दिन पहले हमारे साथ घटित हुई थी..."

" हाँ, सुनाइए न... अभी तो लंच टाइम चल रहा है, बस अंकल दो मिनट..., मैं समीर को भी बुला लाता हूँ। वह तो दिन-रात व्हाट्सएप, फेसबुक की दुनिया में ही खोया रहता है। यहाँ तक कि बैंक में भी मुझे चाय या लंच के लिए व्हाट्सएप पर ही मैसेज भेजता है।"

कुछ ही देर में समीर भी आ गया, तीनों राजेश्वर प्रसाद को घेरकर बैठ गये। राजेश्वर ने कहना शुरू किया - " मैं और मेरी पत्नी सरला रोजाना मार्निंग वॉक पर जाते हैं। एक दिन सुबह-सुबह कुछ बच्चे मेरे घर पर आ गये, उस दिन उनकी गणित की परीक्षा थी, कुछ सवाल उनसे हल नहीं हो रहे थे, मैं उन्हें पढ़ाने के लिए घर पर रुक गया और सरला अकेली मार्निंग वॉक के लिए निकल पड़ी। घंटे भर बाद बच्चे चले गये, मैं सरला का इंतजार करने लगा, उसके लौटने में होने वाली देरी से मैं बेचैन हो रहा था, तभी मेरे मोबाइल की घंटी बजी - " हैलो..." मैंने कहा।

" राजेश्वरजी... मैं चंदूभाई बोल रहा हूँ.. सरला भाभी मॉर्निंग वॉक करते समय चक्कर आने के कारण गिर पड़ी थीं, उस वक्त मैं और तुम्हारी भाभी मंजु उधर से गुजर रहे थे, लोगों की भीड़ देखकर

"बाजार में दुकानदारों से मेरे रिश्ते केवल ग्राहक और मालिक के नहीं हैं, अपितु दोस्ताना और पारिवारिक हैं। हमारा एक-दूसरे के घर आना-जाना होता है। ऑनलाइन शॉपिंग में डिलीवरी बॉय की सीमाएं दरवाजे की दहलीज तक ही होती हैं। जो घर में प्रवेश नहीं कर सकता है, वह भला हमारे दिलों में घर कैसे बना सकता है?"

हम रुक गये, भाभी को देखते ही हम उन्हें अपनी कार से अस्पताल लेकर चले गये थे। डॉक्टर ने जाँच करके उन्हें दवाई दे दी है, उनका कहना है कि घबराने की कोई बात नहीं है, कमजोरी के कारण चक्कर आ गया था, भाभी अब बिल्कुल ठीक हैं। हम अस्पताल से रवाना हो रहे हैं..."

अल्पविराम के बाद राजेश्वर प्रसाद ने कहा - "दरअसल, चंदूभाई की बाजार में मिठाई की दुकान है और वे मेरे पूरे परिवार को बरसों से जानते हैं। बाजार में दुकानदारों से मेरे रिश्ते केवल ग्राहक और मालिक के नहीं हैं, अपितु दोस्ताना और पारिवारिक हैं। हमारा एक-दूसरे के घर आना-जाना होता है। हम तीज-त्योहार साथ-साथ मनाते हैं। क्या इस तरह के रिश्ते ऑनलाइन शॉपिंग में मुमकिन हैं? इनके डिलीवरी बॉय की सीमाएं दरवाजे की दहलीज तक ही होती हैं। जो घर में प्रवेश नहीं कर सकता है, वह भला हमारे दिलों में घर कैसे बना सकता है?"

अमित, सौमित्र और समीर बड़े ध्यान से राजेश्वर प्रसाद की बातें सुन रहे थे। अब तक खामोश बैठी सरला ने घड़ी देखते हुए कहा ङ्क "अब अपना लेक्चर देना बंद करो, बच्चे बिचारे बोर हो गये होंगे... इन्हें काम भी करने दो... चलो... मुझे घर जाकर खाना भी बनाना है।"

राजेश्वर प्रसाद और सरला घर जाने के लिए खड़े हुए तो अमित, सौमित्र और समीर उनके चरण स्पर्श करने के लिए झुके। राजेश्वर ने सभी को गले लगा लिया। अपने गालों पर लुढ़कते आँसुओं को रूमाल से छिपाने की असफल कोशिश करते हुए वे सरला का हाथ थामकर बैंक की सीढ़ियाँ उतरने लगे। उन्होंने पीछे मुड़कर देखा तो अमित, सौमित्र और समीर मुस्कुराते हुए खड़े थे। इन युवाओं की आँखों में उन्हें आश्वस्त करने वाली एक नयी चमक दिखायी दे रही थी।

नवी मुंबई निवासी लेखक भारतीय रिजर्व बैंक से सेवानिवृत्ति के बाद साहित्य सृजन में संलग्न हैं। इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

(लघुकथा)

एटीएम कार्ड

■ **अशोक अंजुम**-अलीगढ़ ■

पिताजी बहुत कंजूस हैं। घर के सदस्यों का ही नहीं बल्कि रिश्तेदारों और परिचितों में अधिकतर का यही मानना है। बैंक अधिकारी के पद से रिटायर हुए थे पिताजी। अच्छी-खासी पेंशन मिलती है। सब पैसा बैंक में ही इकट्ठा करते रहते हैं। उन्हें लगता है कि अगर बुढ़ापे में दोनों लड़कों ने धोखा दे दिया तो यह धनराशि उनके काम आएगी।

उनके दोनों बेटे प्राइवेट नौकरी में हैं। घर का अधिकांश खर्च बड़े बेटे के जिम्मे है। छोटा बेटा भी यथासामर्थ्य सहयोग करता है। आपस में दोनों भाइयों में बहुत प्यार है। दोनों पिताजी की जमा राशि से कोई वास्ता नहीं रखते।

अचानक बड़े बेटे को ऐसी गंभीर बीमारी हो गयी कि उसे दिल्ली के एक बड़े अस्पताल में भर्ती कराने की नौबत आ गयी। बड़े बेटे की पत्नी परेशान कि इलाज का खर्च कहाँ से जुटाये। ...कि छोटा भाई आकर बोला, "भाभी, खर्च की चिंता मत कीजिए। पिताजी ने अपना एटीएम कार्ड देकर मुझसे कहा है कि चाहे कितना भी खर्च हो जाये, 'बड़के' को सही-सलामत घर लेकर आना है।"

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

द्वारा प्रदत्त किये जाने वाले अणुव्रत आंदोलन के
विभिन्न पुरस्कारों–सम्मानों हेतु **वर्ष 2023** के लिए

नामांकन आमंत्रित

अणुव्रत पुरस्कार

नैतिकता और चारित्रिक उन्नयन का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करने वाले एवं इस दिशा में उत्कृष्ट योगदान देने वाले विशिष्ट व्यक्तियों या संस्थाओं को अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। पुरस्कार स्वरूप 1.51 लाख रुपये का चैक, प्रशस्ति–पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान किये जाते हैं।

अणुव्रत अहिंसा अंतरराष्ट्रीय शांति पुरस्कार

अणुव्रत के मूल्यों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने में अनुकरणीय भूमिका निभाने वाले विशिष्ट व्यक्तियों को 'अणुव्रत अहिंसा अंतरराष्ट्रीय शांति पुरस्कार' से सम्मानित किया जाता है। पुरस्कार स्वरूप 1 लाख रुपये का चैक, प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान किये जाते हैं।

अणुव्रत गौरव सम्मान

अणुव्रत आंदोलन के प्रति गत 20 से अधिक वर्षो से संलग्न ऐसे समर्पित अणुव्रत कार्यकर्ताओं को 'अणुव्रत गौरव' सम्मान प्रदान किया जाता है जिनकी आयु 50 वर्ष से अधिक हो एवं जिनका स्वयं का जीवन अणुव्रत जीवनशैली का उल्लेखनीय उदाहरण हो। सम्मान स्वरूप प्रशस्ति–पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान किये जाते हैं।

जीवन विज्ञान पुरस्कार

जीवन विज्ञान को अधिक से अधिक विद्यालयों और विद्यार्थियों तक पहुँचाने में 20 से अधिक वर्षो से संलग्न ऐसे समर्पित कार्यकर्ताओं या प्रशिक्षकों को प्रतिवर्ष जीवन विज्ञान पुरस्कार प्रदान किया जाता है जिनकी आयु 50 वर्ष से अधिक हो। पुरस्कार स्वरूप प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान किये जाते हैं।

अणुव्रत लेखक पुरस्कार

अणुव्रत दर्शन के अनुरूप उत्कृष्ट, नैतिक एवं आदर्श लेखन के लिए विशिष्ट लेखक, कवि, पत्रकार अथवा साहित्यकार को 'अणुव्रत लेखक पुरस्कार' प्रदान किया जाता है। पुरस्कार स्वरूप 51 हजार रुपये का चैक, प्रशस्ति–पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान किये जाते हैं।

ooo

- उपरोक्त पुरस्कारों के लिए नामांकन निर्धारित प्रपत्र में सम्पूर्ण जानकारी के साथ आमंत्रित हैं।
- नामांकन पत्र अणुविभा की वेबसाइट https://anuvibha.org/anuvibha-awards/ लिंक पर उपलब्ध है।
- सभी संलग्नक के साथ नामांकन प्रपत्र संस्था मुख्यालय **अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, राजसमंद–313326** पर **30 सितम्बर,** 2023 तक व्यक्तिशः, कोरियर या डाक द्वारा पहुँच जाने चाहिए। चयन समिति द्वारा लिया गया निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा।

गौरवशाली अतीत के झरोखे से...

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष स्वर्णिम इतिहास के असंख्य पन्नों से परिपूर्ण हैं। अणुव्रत अमृत महोत्सव के इस ऐतिहासिक प्रसंग पर इन्हीं में से कुछ पन्ने हम सुधी पाठकों के लिए यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं, इस आशा और विश्वास के साथ कि ये संस्मरण हम सब को अणुव्रत-पथ पर कदम दर कदम आगे बढ़ते रहने को प्रेरित करेंगे।

इन संस्मरणों की आधारभूमि है आचार्य तुलसी के जीवनवृत्त पर आधारित एवं साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा द्वारा सम्पादित महाग्रंथ "मेरा जीवन : मेरा दर्शन"।

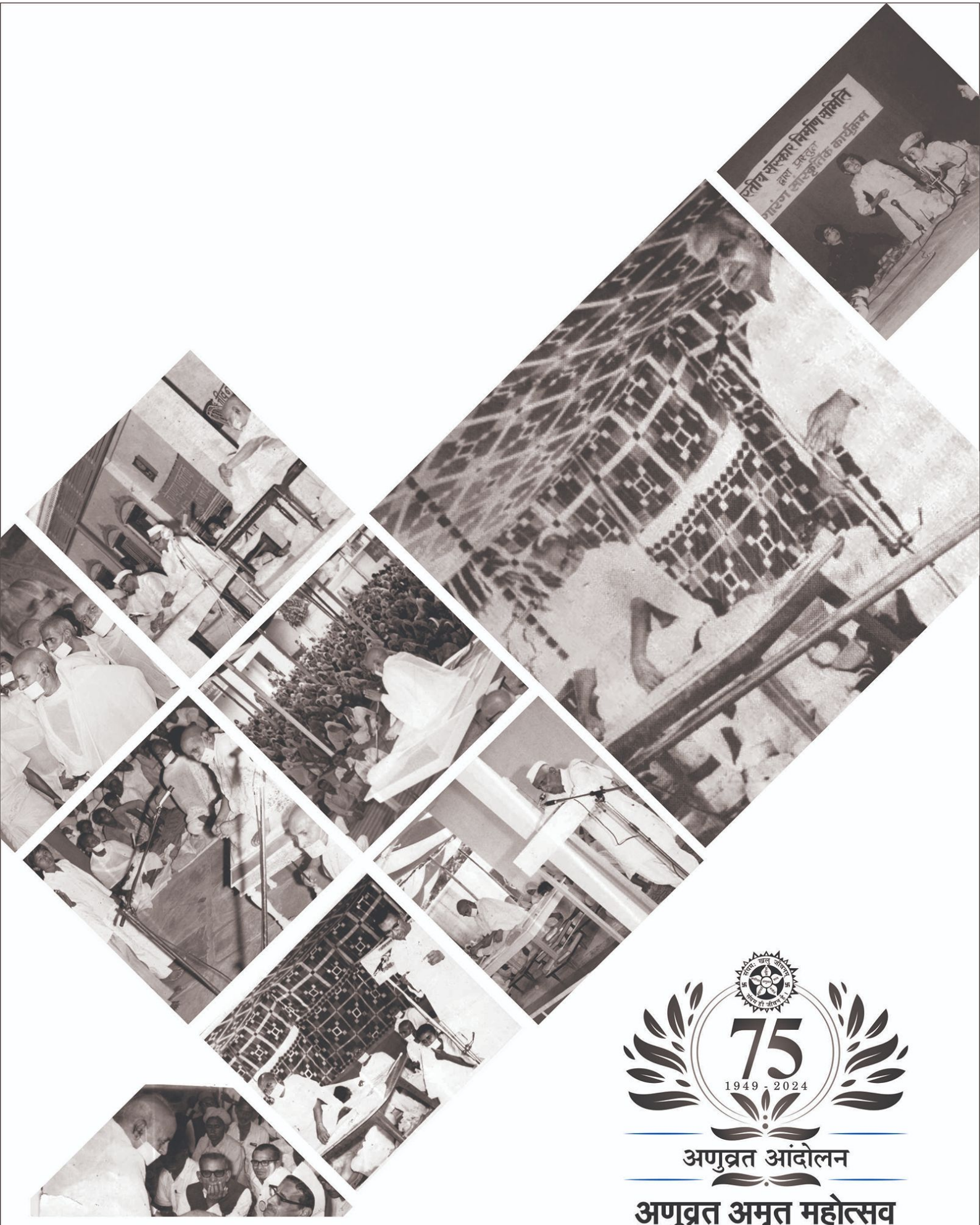
75
1949 - 2024
अणुव्रत आंदोलन
अणुव्रत अमृत महोत्सव

दलित वर्ग के संदर्भ में बड़ा निर्णय

आचार्य श्री तुलसी अब राजलदेसर से श्रीडूंगरगढ़ जाना था। मर्यादा महोत्सव मनाना था। वृहद् महोत्सव मनाना था। वहाँ भारतीय संस्कार निर्माण समिति ने एक वृहद् हरिजन सम्मेलन का कार्यक्रम बनाया था। इसे लेकर वहाँ बड़ी हलचल थी। शुभकरण दसानी और खेमचन्द सेठिया आचार्यश्री के दर्शनार्थ आये। दो दिन रहे। वे थली संभाग से संबंधित काफी बातें लेकर आये। उनके अनुसार वहाँ का वातावरण काफी क्षुब्ध था। आचार्यश्री के उनसे बात करने पर मुख्य रूप से जो मुद्दे उभर कर सामने आये, वे थे - अनास्था, अनुशासनहीनता, आलोचनावृत्ति, केन्द्र के कार्यों में संदेहशीलता आदि। उन्होंने यह भी बताया कि कुछ श्रावक-श्राविकाओं में एक प्रकार की चिंता या संदेह-सा उभर रहा था कि पता नहीं कब क्या हो जाये? ऐसे संदेह के चलते भक्ति-भावना में कमी होना स्वाभाविक थी। दलित वर्ग के उत्थान हेतु जो कार्यक्रम प्रारंभ किया गया, उसे लेकर भी समाज में कुछ क्षोभ था।

उपर्युक्त परिस्थितियों को सामने रखकर आचार्य श्री तुलसी ने चिन्तन किया। उनके अभिमत से कोई नयी बात तो नहीं हो रही थी, पर वातावरण काफी अस्त-व्यस्त था। धर्मसंघ का हर हितैषी कुछ चिंतित था। भविष्य धुंधला-सा दिखायी दे रहा था। किसी प्रकार का परिवर्तन न हो तो रूढ़ता आ जाती है। आचार्यश्री का मानना था कि परिवर्तन हो तो शिथिलता की संभावना पैदा हो जाती है। दोनों ओर खतरे दिखायी दे रहे थे। इस संदर्भ में काफी चिन्तन चला। सर्वप्रथम दलित वर्ग के काम के बारे में निर्णय लिया गया कि यह काम अवश्य करना है। काम करने का तरीका क्या हो? इस प्रश्न पर यह तय किया गया कि अणुव्रत के माध्यम से काम किया जाये। इससे संस्कार स्वयं फलित होंगे। इस कार्य के संयोजक मोहनलाल जैन थे। इसका विरोध करने वाले कुछ व्यक्तियों के नाम भी सामने आये। हो सकता है कि वे इसके पक्ष में कम रहे हों, काम अच्छा है तो उसका परिणाम देखकर सब पक्ष में हो जाएंगे, आचार्य तुलसी ने ऐसी उम्मीद जतायी।

किसी प्रकार का परिवर्तन न हो तो रूढ़ता आ जाती है। परिवर्तन हो तो शिथिलता की संभावना पैदा हो जाती है। दोनों ओर खतरे दिखायी दे रहे थे। सर्वप्रथम दलित वर्ग के काम के बारे में निर्णय लिया गया कि यह काम अवश्य करना है। यह तय किया गया कि अणुव्रत के माध्यम से काम किया जाये।

व्यापक चिंतन-मंथन

कस्बों में रविवार के दिन पूरी चहल-पहल रहती थी। तीनों समय जनता की भीड़ लगी रहती। उन दिनों समाज के कुछ विशिष्ट व्यक्ति आ रहे थे। दिल्ली से मोहनलाल कठोतिया और रणजीतमल भंडारी, जोधपुर से जबरमल भंडारी, मुंबई से जेठाभाई जवेरी, अहमदाबाद से गणेश दूगड़, सरदारशहर से मोहनलाल जैन, सूरजमल दूगड़, बजरंग दूगड़ आदि पहुँच चुके थे। कुछ व्यक्ति और आ सकते थे। संस्कार निर्माण समिति के अंतर्गत दलित वर्ग का कार्य चल रहा था। उसे व्यवस्थित करने की दृष्टि से एक विचार गोष्ठी आयोजित की गयी। उसमें बाहर से आए हुए समाज के विशिष्ट व्यक्ति उपस्थित थे। मुनिश्री नथमलजी, मुनिश्री किशनलाल आदि कुछ सन्त भी थे। सर्वसम्मति से एक निर्णय लिया गया कि यह कार्य अणुव्रत के अंतर्गत चलना चाहिए। इस निर्णय का उद्देश्य यही था कि अणुव्रत को बल मिले और इस काम में कोई कठिनाई न आये।

गोष्ठी चल ही रही थी, इसी बीच दिल्ली से देवेन्द्र कर्णावट और बुधमल श्यामसुखा पहुँच गये। ये दोनों उस समय अणुव्रत के विशिष्ट कार्यवाहक थे। सबने उक्त निर्णय का स्वागत किया। एक विचार यह भी सामने आया कि इसकी वैधानिक खानापूर्ति दिल्ली में कर ली जाएगी। 'संस्कार निर्माण समिति' को एक तरह से स्वतंत्र जैसा रखा जाएगा, पर उसका भी वैधानिक संबंध रहेगा। इस प्रकार सामूहिक चिन्तन का क्रम संपन्न हुआ। आचार्य श्री तुलसी ने गोष्ठी की संपन्नता के बाद समागत व्यक्तियों के साथ व्यक्तिशः बात की। सबके अलग-अलग विचार लिये।

निर्णायक क्षण

मर्यादा महोत्सव के दिन मुख्य कार्यक्रम में पहले संस्कार निर्माण समिति की ओर से एक 'हरिजन सम्मेलन' का आयोजन निर्णीत था। इसका भी बतंगड़ बनाने का प्रयास किया गया। प्रस्तुत प्रसंग में श्रीडूंगरगढ़ के कुछ भाई आचार्यश्री तुलसी के पास आये और बोले- "शहर में 'हरिजन सम्मेलन' की प्रतिक्रिया अच्छी नहीं है। माहेश्वरी लोग कहते हैं कि यदि

ऐसा होगा तो वे यात्रियों के लिए अपना स्थान नहीं देंगे। ऐसी स्थिति में हमारे लिए कठिनाई पैदा हो जाएगी।" आचार्य श्री तुलसी ने उनकी बात सुनी और उनसे कहा- ''आप जैसा कह रहे हैं, वैसा हो सकता है, पर यदि आप कमजोर रह गये तो फिर जीवनभर शक्तिहीन बन जाओगे और आपके लिए इस गाँव में बसना मुश्किल हो जाएगा। अगर इस अवसर पर आप अपने पैरों पर खड़े हो जाओगे तो सदा-सदा के लिए शक्तिसंपन्न बन जाओगे।'' वहां उपस्थित भाइयों के चेहरे देखकर ऐसा लगा कि आचार्य श्री तुलसी का कथन उनके गले नहीं उतरा है। अपने भावों को अभिव्यक्ति देते हुए उन्होंने कह भी दिया- "'माहेश्वरी लोगों की बात एक बार हम छोड़ भी दें, किंतु अपने समाज के लोग भी कई प्रकार की बातें करते हैं।"

कार्यकर्ताओं की मनःस्थिति डांवाडोल हो तो कार्य का रस आधा हो जाता है। इसलिए उनकी ब्रेनवाशिंग करना जरूरी था। आचार्य श्री तुलसी ने शान्ति के साथ उनको समझाते हुए कहा- "कोई कुछ भी सोचे और कुछ भी कहे, अस्पृश्यता निवारण मेरा धर्म है। यह काम मुझे करना है, इसलिए करता रहूँगा। हरिजन सम्मेलन में अन्य कोई जाये या नहीं, मेरा वहाँ जाने का पक्का विचार है। मर्यादा महोत्सव के लिए जो पण्डाल बनाया गया है, उसमें कोई सम्मेलन नहीं करने देंगे तो संस्कार निर्माण समिति अपना स्वतंत्र पण्डाल बना सकती है। सम्मेलन जरूर होगा और बड़ी शान से होगा।" इस बार श्रीडूंगरगढ़ के लोगों पर बड़ा अच्छा असर हुआ। उनका मनोबल मजबूत बन गया।

आचार्य श्री तुलसी ने कहा- "छुआछूत और मदिरा भारत जैसे धर्मप्रधान व अध्यात्मप्रधान देश के लिए सबसे बड़ा कलंक है। इन दोनों बुराइयों से समाज व राष्ट्र का सर्वाधिक अहित हो रहा है। जब तक ये बुराइयां जड़-मूल से समाप्त नहीं होतीं, तब तक समाज व राष्ट्र के विकास का पथ प्रशस्त नहीं होगा।

विराट हरिजन सम्मेलन

18 फरवरी का मंगलमय प्रभात। ताल मैदान में मर्यादा महोत्सव के लिए निर्मित पण्डाल में हरिजन सम्मेलन का आयोजन। बीकानेर से संसद सदस्य महाराजा करणीसिंह समय पर पहुँच गये। उन्होंने अच्छा वक्तव्य दिया। सेवाभावी मुनि चम्पालालजी, मोहनलाल जैन, डॉ. गोविंदराम गोयल आदि कई वक्ता बोले। उत्तमचन्द सेठिया सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष थे। अस्पृश्यता के बारे में काफी लोग भ्रान्त थे। आचार्य श्री तुलसी ने उन्हें बताया कि अस्पृश्यता मानवता का कलंक है। कोई भी मनुष्य जाति से नहीं, कर्म से श्रेष्ठ बनता है। पूरा कार्यक्रम बहुत शालीन ढंग से सम्पन्न हुआ। सब लोगों के लिए भोजन की व्यवस्था की गयी। कुछ व्यक्तियों द्वारा बीच में विघ्न डालने के अनेक प्रयत्न किये गये, किन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली। आचार्यश्री ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कार्यकर्ताओं के सम्पर्णभाव को सराहा और कहा कि मोहनजी जैन में गजब की शक्ति है। उन्हें कुछ साथी भी ऐसे ही मिल गये। कुल मिलाकर हरिजन सम्मेलन सफल हो गया। प्रारम्भ में जो लोग विरोध में थे, वे भी प्रसन्न हो गये।

विकास में बाधक बुराइयां

21 अगस्त को अस्पृश्यता निवारण एवं शराबबन्दी सम्मेलन था। सम्मेलन को संबोधित करते हुए आचार्य श्री तुलसी ने कहा- "छुआछूत और मदिरा भारत जैसे धर्मप्रधान व अध्यात्मप्रधान देश के लिए सबसे बड़ा कलंक है। इन दोनों बुराइयों से समाज व राष्ट्र का सर्वाधिक अहित हो रहा है। जब तक ये बुराइयां जड़-मूल से समाप्त नहीं होतीं, तब तक समाज व राष्ट्र के विकास का पथ प्रशस्त नहीं होगा। छुआछूत की भावना ने मानव समाज के बीच भेदभाव की दीवार खड़ी कर दी और मद्यपान की प्रवृत्ति ने समाज में अनेक बुराइयों को जड़ जमाने के लिए जमीन तैयार कर दी। मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए अणुव्रत इस दिशा में काम कर रहा है। उसमें सब लोगों की संभागिता हो, यह जरूरी है।"

राजस्थान के वित्तमंत्री मास्टर आदित्येन्द्र उस कार्यक्रम में उपस्थित थे। उन्होंने मुख्य अतिथि के पद से बोलते हुए छुआछूत और शराब के दुष्परिणामों की चर्चा की। उनकी दृष्टि में गरीबी और अशिक्षा की जिम्मेदारी उक्त दोनों बुराइयों पर है। उन्होंने बताया कि जब तक इन बुराइयों को दूर नहीं किया जाएगा, तब तक राष्ट्र

मजबूत नहीं बन पाएगा। स्थानीय विधायक माणकचन्द सुराणा, स्वामी प्रकाशनाथ, डॉ. महावीरराज गेलड़ा और संस्कार निर्माण समिति के मंत्री मोहनलाल जैन ने भी विचार व्यक्त किये। उस अवसर पर समिति की ओर से शराबबन्दी प्रदर्शनी का भी आयोजन था, जिसका उद्घाटन वित्तमंत्री महोदय ने किया।

अणुव्रत है एक दीया

भारतीय संस्कार निर्माण समिति आचार्य श्री तुलसी के चरित्र विकास के कार्यक्रम में पूरी तरह से सक्रिय थी। 16 फरवरी को अपनी दिल्ली यात्रा के बीच आचार्यश्री चूरू गये थे। उसी दिन से संस्कार निर्माण समिति ने शराबबंदी यात्रा प्रारंभ कर दी। समिति के मंत्री मोहनजी जैन स्वयं पदयात्रा करते थे। उनके सहयोगी जीप द्वारा यात्रा करते। मार्गवर्ती ग्रामों में प्रभातफेरी, संगोष्ठी तथा अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते। इक्कीस दिनों की यात्रा में दस हजार से अधिक संकल्प पत्र भरवाये गये। मोहनजी प्रतिदिन एक सौ संकल्प पत्र भरे जाने के बाद एक पाव दूध लेते और पाँच सौ संकल्प पत्र भरने पर ही भोजन करते थे। उनके इस संकल्प का लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

आचार्य श्री तुलसी का चिन्तन था कि मानवीय चरित्र को धूमिल या दूषित करने वाली प्रत्येक बुराई को समाप्त करने के लिए इस प्रकार के अभियान चलाये जाये तो एक सीमा तक वह निश्चित रूप से दूर हो सकती है। अणुव्रत संसार भर की सब बुराइयों को मिटाने का दावा नहीं करता, पर चरित्रहीनता के सघन अंधकार में वह दीया बनकर जरूर टिमटिमाता रहेगा। उसकी मद्धिम रोशनी में जो लोग अपना रास्ता खोज लेंगे, वे मंजिल तक पहुँच जाएंगे।

आचार्य श्री तुलसी का चिन्तन था कि मानवीय चरित्र को धूमिल या दूषित करने वाली प्रत्येक बुराई को समाप्त करने के लिए इस प्रकार के अभियान चलाये जाये तो एक सीमा तक वह निश्चित रूप से दूर हो सकती है। अणुव्रत संसार भर की सब बुराइयों को मिटाने का दावा नहीं करता, पर चरित्रहीनता के सघन अंधकार में वह दीया बनकर जरूर टिमटिमाता रहेगा।

मद्यनिषेध पदयात्रा

आचार्य श्री तुलसी जहाँ भी प्रवास करते, अपने प्रवचन में अणुव्रत की चर्चा करते तथा व्यसनमुक्त जीवन जीने की प्रेरणा देते। अनेक गाँववासी शराब का परित्याग करते। यद्यपि उन दिनों चूरू जिले में शराब पर सरकारी प्रतिबंध था, किन्तु गाँवों में उसका खास प्रभाव परिलक्षित नहीं होता था। आचायश्री का मानना था कि जब तक जनता का हृदय परिवर्तन नहीं हो, कानून द्वारा शराब को समाप्त करना संभव नहीं होता। 8 जून को आचार्य श्री तुलसी सांडवा गये। प्रवचन में अच्छी उपस्थिति रही। यहां आचार्यश्री तीन दिन रहे। भारतीय संस्कार निर्माण समिति के संयोजक मोहनलाल जैन और उनके सहयोगी सांडवा पहुँचे। आचार्य श्री की यात्रा के साथ वे भी मद्यनिषेध पदयात्रा करना चाहते थे। आचार्यश्री का मानना था कि मदिरा पीने वाले व्यक्ति भीतर बाहर दोनों ओर से अपनी चेतना को मूर्च्छित कर लेते हैं। संयत और संतुलित व्यक्ति भी मदिरापान कर पागल हो जाता है। जिस व्यक्ति, परिवार, समाज अथवा राष्ट्र में शराब का नशा लग जाता है, वहां बहुमुखी पतन का रास्ता खुल जाता है। इस दृष्टि से समिति के कार्यकर्ताओं ने एक अभियान शुरू किया। उनके अभियान की सफलता के लिए आचार्य श्री तुलसी ने एक संदेश दिया। संदेश का हिस्सा यहां प्रस्तुत है -

"भारतीय संस्कार निर्माण समिति ने शराबबन्दी का कार्य अपने हाथ में लिया है और उसे प्रभावशाली ढंग से आगे बढ़ा रही है। यद्यपि समिति के सामने कठिनाइयां कम नहीं हैं, फिर भी इसके कार्यकर्ता लगन और उत्साह से अपना काम कर रहे हैं। यह अभियान अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफल हो, ऐसा प्रयत्न सब लोगों को मिल-जुलकर करना है। इधर सरकारें भी शराबबंदी के लिए कानूनी रूप में काम करने की बात सोचती हैं, पर हमें हृदय परिवर्तन के सिद्धान्त को नहीं भूलना है। हृदय परिवर्तन हो जाएगा तो कानून का पालन भी सरल हो जाएगा। जिन लोगों का आदर्श जीवन जीने में विश्वास है, उन सबको हृदय-परिवर्तन का माध्यम काम में लेकर ऐसे अभियानों को सफल बनाना है।"

नैतिकता के स्वर गूँज उठते

आचार्य श्री तुलसी की अणुव्रत यात्रा का उद्देश्य था चरित्र-निर्माण। आचार्यश्री जहाँ भी जाते, प्रवचन करते, वहाँ नैतिकता के स्वर गूँज उठते। संस्कार-निर्माण की गोष्ठियाँ

चलतीं। स्कूलों के सैकड़ों विद्यार्थी इन गोष्ठियों में उत्साह से भाग लेते। कार्यकर्ता स्कूलों में जाकर अणुव्रत की चर्चा करते। यात्रा में साथ रहने वाली बहनें झोपड़ी-झोपड़ी में जाकर ग्रामीण बहनों को रूढ़िमुक्त जीवन जीने की सलाह देती। मोहनलाल जैन पूरी तैयारी के साथ यात्रा संघ में सम्मिलित रहते। उनके द्वारा ग्रामीण लोगों को अणुव्रत प्रदर्शनी दिखायी जाती। उन्हें व्यसनमुक्त होने की प्रेरणा मिलती। कुल मिलाकर अणुव्रत का काम अच्छा हो रहा था।

15 मार्च को 'भारतीय संस्कार निर्माण समिति' की ओर से शराबबंदी को लेकर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित था। श्रीगंगानगर, चूरू, बीकानेर और नागौर- इन चार जिलों में शराबबंदी अभियान चलाने की योजना बनायी गयी। अभियान का प्रारम्भ आचार्य श्री तुलसी के उद्‌बोधन भाषण से हुआ। उस अवसर पर राजस्थान के वित्तमंत्री चन्दनमलजी बैद, संस्कार निर्माण समिति के संयोजक मोहनजी जैन आदि के वक्तव्य हुए।

सरदारशहर के निकट बरड़ासर जैसे छोटे गाँव में अणुव्रत के राष्ट्रीय अधिवेशन का प्रसंग अणुव्रत के इतिहास की पहली घटना थी। वास्तव में वह एक नया प्रयोग था, जो बहुत सफल रहा। अणुव्रत अधिवेशन की व्यवस्था को सफल बनाने में सरदारशहर के युवकों तथा वहाँ की स्वागत-समिति का पूरा सहयोग रहा।

अणुव्रत इतिहास की पहली घटना

सरदारशहर के निकट बरड़ासर जैसे छोटे गाँव में अणुव्रत के राष्ट्रीय अधिवेशन का प्रसंग अणुव्रत के इतिहास की पहली घटना थी। वास्तव में वह एक नया प्रयोग था, जो बहुत सफल रहा। अणुव्रत अधिवेशन की व्यवस्था को सफल बनाने में सरदारशहर के युवकों तथा वहाँ की स्वागत-समिति का पूरा सहयोग रहा। युवक कार्यकर्ताओं ने पूरा परिश्रम करके व्यवस्था को सुन्दर बनाये रखने का प्रयास किया। राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के मंत्री मोहनलाल जैन का श्रम वहाँ के हर उपक्रम में मुखर हो रहा था। वातावरण बहुत विशद रहा।

अधिवेशन के दौरान दोपहर के समय एक अणुव्रत गोष्ठी हुई। उसमें अणुव्रत के कार्यकर्ता महावीरदत्त गिरि विशेष रूप से उपस्थित थे। गोष्ठी में चिंतन का विषय था- अणुव्रत का दर्शन क्या है? वह समाज के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, औद्योगिक आदि सभी क्षेत्रों में क्या दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है? कौन-सी दिशा देता है? जब तक कोई आन्दोलन समूचे समाज को दिशादर्शन नहीं देता, तब तक उसकी उपयोगिता स्पष्ट नहीं होती। गोष्ठी में खुलकर चर्चा हुई। लम्बी चर्चा के बाद यह स्वीकार किया गया कि अणुव्रत का एक निश्चित दर्शन है, पर इसे व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया और सुनियोजित रूप में इसका संकलन भी नहीं हुआ। इसका मुख्य कारण अन्यान्य कार्यों की व्यस्तता ही हो सकता है। अब भी इस ओर ध्यान दिया जाये, यह आवश्यक है।

अणुव्रत दर्शन

5 अक्टूबर को एक भाई ने कहा- "मोहनजी जैन ने सदा की भाँति इस वर्ष भी गाँधी मेले में अणुव्रत प्रदर्शनी लगायी। वह सबके आकर्षण का केन्द्र रही। प्रदर्शनी की सम्पन्नता के साथ ही पाण्डाल में आग लग गयी। आश्चर्य की बात है कि सब बाल-बाल बच गये। किसी का कोई नुकसान नहीं हुआ। अणुव्रत प्रदर्शनी के प्रति दर्शकों में अच्छा आकर्षण रहा। वह जनता के लाभ की चीज है। इसको और भी बढ़ाया जा सकता है।"

अणुव्रत का सघन कार्य

9 अप्रैल को मोहनजी जैन ने आचार्य श्री तुलसी के दर्शन किये। वे संस्कार निर्माण समिति के कार्य को गति देने के लिए उत्साहित थे। राष्ट्र में परिवर्तन की लहर नजर आ रही थी। उसका उन पर कोई असर परिलक्षित नहीं हुआ। आचार्य श्री तुलसी ने उनको परामर्श दिया कि लाडनूं को सघन क्षेत्र बनाकर आसपास के गाँवों को सुधारा जाये तो ठीक रहेगा। मोहनजी ने इस परामर्श को स्वीकार कर लिया। आचार्यश्री ने विश्वास जताया कि अच्छा काम हो सकेगा।

परिचर्चा

'समाज निर्माण में सिविल सोसायटी की भूमिका'

जुलाई अंक में प्रस्तुत परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदु –

समाज को नयी राह दिखाने में अग्रसर

समाज परिचायक है समता, सहयोग, सह अस्तित्व और समन्वय का। एक व्यक्ति की परिचर्या का दूसरे व्यक्ति के साथ साहचर्य होना सामाजिक पगडंडी का प्रारंभीकरण है और यह सामाजिक पगडंडी ही सिविल सोसायटी का स्वरूप बनती है। फलतः समाज में जागृति के दर्शन होते हैं। सिविल सोसायटी द्वारा समाज जागरण के अनेक दृष्टांतों में से कतिपय उदाहरण प्रस्तुत हैं।

राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र में स्थित काछबली गाँव में रावत राजपूत समुदाय में पुरुष वर्ग में मद्यपान की दुष्प्रवृत्ति इस कदर घर कर गयी थी कि महिलाएं उत्पीड़ित होने लगीं। बच्चे-बच्चियों की पढ़ाई पर कुप्रभाव पड़ने लगा। कंगाली की ओर बढ़ती इस भयावह स्थिति में अणुव्रत कार्यकर्ता की प्रेरणा से रावत राजपूत महिलाओं ने एक महिला संगठन बनाने के साथ ही असहयोग आंदोलन चलाने का संकल्प लिया। उनकी दृढ़ता के आगे पुरुष वर्ग को आखिरकार झुकना पड़ा। देखते ही देखते खुशहाली का वातावरण निर्मित होने लगा। इस महिला संगठन का ऐसा प्रभाव पड़ा कि पड़ोस के लगभग 15 गाँवों में महिला-पुरुष सभी समाज सुधार में संलग्न हो गये। इसी प्रकार कई जातियों ने सिविल सोसायटी के जरिए समाज जागरण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बढ़ाये हैं।

दक्षिण भारत में कोयंबटूर से 40 किलोमीटर दूर एक गाँव है ओडण थुरई। वहाँ संकट व अभाव से जूझ रहे लोगों ने सिविल सोसायटी का गठन कर श्रम व सहयोग से पूरे गाँव को आत्मनिर्भर बना दिया। आज वहाँ झोपड़ियों की जगह प्रत्येक परिवार के पास अपना घर है, पानी की व्यवस्था है। अणुव्रत समितियां देश भर में सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति, पर्यावरण संरक्षण, चुनाव शुद्धि व सांप्रदायिक एकता स्थापित करने तथा मृत्यु भोज, पर्दा प्रथा, प्रदर्शन की बढ़ती भूख आदि के उन्मूलन के लिए पर्याप्त प्रयास कर रही हैं। अणुव्रत समितियों का स्थान-स्थान पर गठन कर समाज जागृति को बढ़ावा देने की अपेक्षा है।

-धर्मचंद जैन अनजाना, उदयपुर

बेहतर भविष्य के निर्माण के लिए आवश्यक

नागरिक समाज किसी भी स्वस्थ समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा है। मानव अधिकारों, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक न्याय की लड़ाई में ये सहायक रहे हैं। नागरिक समाज संगठन लोगों को आवश्यक कौशल और संसाधन प्रदान करके उन्हें सशक्त बनाने में मदद करते हैं। सरकारी खर्च की निगरानी करने के साथ ही सरकारों को उनके कर्त्तव्यों के लिए जवाबदेह बना सकते हैं। मैंने ऐसे नागरिक समाज संगठनों के साथ काम किया है जिन्होंने बेघरों को भोजन और आश्रय प्रदान किया है, ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों को शिक्षित करने में मदद की है तथा महिलाओं और अल्पसंख्यकों के अधिकारों की वकालत की है। बेहतर भविष्य के निर्माण के लिए नागरिक समाज आवश्यक है।

-ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश', नीमच

जनहित के कार्यों तथा समाज सुधार में अग्रणी

सिविल सोसायटी ऐसी छोटी-छोटी संस्थाएं हैं जो जनता से सीधे संपर्क में रहती हैं और उनकी समस्याओं को सरकार तक पहुँचाने और हल निकालने में मध्यस्थ की भूमिका निभाती हैं। वर्तमान समय में ऐसी संस्थाएं प्रायः हर मोहल्ले, कस्बे, गाँव और नगर में हैं जिनमें वहाँ के बुद्धिजीवी, ताकतवर नेता और कुछ भामाशाहों को जोड़ लिया जाता है। जनता उनके नेक उद्देश्यों से जुड़कर कार्यकर्ताओं के रूप में काम करती है। आज ऐसी संस्थाएं पर्यावरण संरक्षण, सामूहिक विवाह, शिक्षा, प्राकृतिक विपदाओं में मदद, गरीबी निवारण आदि अनेक क्षेत्रों में कार्य कर रही हैं। जब तक ये संस्थाएं राजनीति से दूर रहती हैं, तब तक सराहनीय कार्य होते रहते हैं किंतु राजनैतिक गतिविधियों से जुड़ते ही बड़ी-बड़ी सोसायटियां इनको उकसाकर दिशा भ्रमित कर देती हैं और आर्थिक लालच, सत्ता में पद पाने की भूख कई बार भोले-भाले लोगों को गलत रास्ते से जोड़कर हिंसा, उपद्रव और अनैतिक कार्य करने का दबाव बना देती हैं। हमारे देश में अनेक ऐसी सिविल सोसायटियां हैं जो बिना किसी लालच और स्वार्थ के जनहित के कार्यों में निरंतर कार्यरत हैं और समाज सुधार में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं।

-सुशीला शर्मा, जयपुर

नैतिक मूल्यों की स्थापना में सहायक

सिविल सोसायटी का तात्पर्य ऐसे सामाजिक संगठनों से है जो स्वेच्छा से सामाजिक कल्याण की भावना से जनता की सेवा करते हैं। ये जनता से जुड़कर जनता की वास्तविक इच्छा को सरकार के सामने रखते हैं और शासन में भागीदारी को प्रोत्साहित कर सुशासन की अवधारणा सुनिश्चित करते हैं। सूचना का अधिकार कानून सिविल सोसायटी के आन्दोलन का ही परिणाम है। लोकपाल बिल को लेकर अन्ना हजारे के नेतृत्व में किया गया आन्दोलन जग जाहिर है। ये संगठन जहाँ सरकार की नीतियों व कार्यक्रमों में कमियां इंगित कर शासन की जवाबदेही बढ़ाते हैं, वहीं सरकारी योजनाओं का क्रियान्वयन करवा कर प्रशासन की गुणवत्ता भी बढ़ाते हैं। साथ ही समाज में नैतिक मूल्यों की भी स्थापना करने में भी सहायक बनते हैं।

-जीवन एस. दानू इरेश, बागेश्वर

समाज के उत्थान में रचनात्मक भूमिका

वर्तमान समय में अनेक नागरिक समाज संस्थाएं चिकित्सा, शिक्षा, सामाजिक कार्य जैसे अनाथ आश्रम, वृद्धाश्रम, प्रकृति संरक्षण, पौधरोपण, स्वच्छ भारत अभियान आदि के माध्यम से स्वस्थ और सुंदर समाज की संरचना में योगभूत बनती हैं। निर्धन छात्रों को छात्रवृत्ति और गरीब महिलाओं को लघु उद्योग के माध्यम से रोजगार उपलब्ध करवाती हैं। बहुत से संगठन निर्धन कन्याओं का सामूहिक विवाह सम्पन्न करवाते हैं। प्राकृतिक आपदा या दुर्घटनाओं के समय ये संस्थाएं तन-मन-धन से सहयोग करती हैं। साथ ही समय-समय पर वाद-विवाद, चित्रांकन, गीत-संगीत, नृत्य, खेलकूद आदि प्रतियोगिताएं आयोजित करती हैं जिनसे नौनिहालों का सर्वांगीण विकास संभव हो पाता है। क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर बहुत-सी संस्थाएं कार्यरत हैं जो समाजिक उत्थान में रचनात्मक भूमिका निभाती हैं।

-सरोज दुगड़ 'सविता', खारुपेटिया

समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में सहायक

सिविल सोसायटी वस्तुतः संवेदनशील लोगों का समूह होती है, जो जरूरतमंदों की सहायता करते हैं। किसी तरह की शारीरिक अक्षमता के शिकार, वित्तीय विपन्नता, बुजुर्ग या उपेक्षित वर्ग के लोग प्रायः दूसरों पर निर्भर रहते हैं, ऐसे में सिविल सोसायटी की आवश्यकता बढ़ जाती है। ये समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाती हैं। अब तो युवा वर्ग भी इस काम को अपने कैरियर के रूप में अपना रहे हैं।

सिविल सोसायटी के सदस्य मानवाधिकारों की अवहेलना के खिलाफ भुक्तभोगियों का साथ देते हैं और उन्हें न्याय दिलवाने में सहायक बनते हैं, गरीब और उपेक्षित लोगों को हर किस्म की सहायता और सुविधा उपलब्ध कराते हैं। अलग-अलग आयु के लोगों का समूह बनाकर उन्हें पर्यटन पर भी ले जाते हैं। शादी-विवाह, जन्मदिन, पूजा-महोत्सव और अन्य क्रिया-कलापों के खर्च वहन करने में जो परिवार सक्षम नहीं हों, उन जगहों में ऐसे सामाजिक संस्थानों की भूमिका अत्यंत सराहनीय है।

-डॉ. कविता विकास, धनबाद

सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा

सुख-सुविधा, शिक्षा-दीक्षा, ज्ञान-विज्ञान हर क्षेत्र में आज पहले से ज्यादा संपन्नता बढ़ी है, मगर सब कुछ पाने के बाद भी हम अतृप्त हैं, असंतुष्ट हैं, भयभीत हैं अपने भविष्य के लिए। मौजूदा माहौल में सिविल सोसायटी भी अधिकतर भौतिक उपलब्धियों के इर्द-गिर्द चक्कर काट रही हैं। निजी स्वार्थ सामाजिक-सार्वजनिक शांति पर हावी हो रहे हैं एवं जीवन के सार्वभौमिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। व्यक्ति, समाज और राष्ट्र तीनों सापेक्ष विषय हैं। व्यक्ति ही समाज का प्रतिबिंब है, समाज ही राष्ट्र का स्वरूप। यदि सिविल सोसायटी का चिंतन, व्यवहार, कृत्य समाज एवं राष्ट्रपरक होंगे तो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र सभी प्रगति, शांति, खुशहाली, संतोष, आनंद, परमानंद की ओर बढ़ेंगे। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी के शब्दों में - "सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा।"

-डॉ. मनोहर भारती, मैसूर

सहकारिता को बनाती हैं सामाजिक जीवन का अंग

सत्ता का अर्थ है सुशासन अर्थात् नागरिकों की सेवा करने की क्षमता जिसके द्वारा संसाधन एवं शक्ति का प्रयोग समाज के विकास एवं कल्याण के लिए किया जाता है, लेकिन सुशासन की सबसे बड़ी बाधा है भ्रष्टाचार। जब चारों ओर केवल भ्रष्टाचार हो और व्यक्तिगत प्रयासों से बात नहीं बनती हो तो सुशासन को अमल में लाने के लिए नागरिक समाज का जन्म होता है। ये सामूहिकता को बढ़ावा देकर सहकारिता को सामाजिक जीवन का अंग बनाते हैं।

जहाँ तक हमारे देश का सवाल है तो सिविल सोसायटी को कुछ विशिष्ट बुद्धिजीवियों का समूह माना जाता है। प्रायः ऐसा भी देखा जाता है कि इनमें प्रवेश पाने के लिए एक विशेष विचारधारा का समर्थक होना जरूरी है जो सत्ता विरोधी होती है तथा कभी-कभी जन सरोकार और राष्ट्रहित के मुद्दे पर भी अपने विपरीत विचार प्रकट करती है। इन विचारों में आम आदमी की आशा और आकांक्षा प्रतिबिंबित नहीं होती है।

सिविल सोसायटी के लिए यह सबसे बड़ी चुनौती है। सिविल सोसायटी को समाज निर्माण में रचनात्मक भूमिका निभानी होगी, क्योंकि लोग नेताओं और नौकरशाहों के रवैये से ऊब चुके हैं। वे चाहते हैं कि उन्हें कोई साथ लेकर चले। उनके साथ सहभागितापूर्ण कार्य करे। हर कार्य में उन्हें निर्णायक बनाये ताकि शासन को सुशासन में परिवर्तित किया जा सके।

-डॉ. पंकज कुमार समदरिया, सालमारी, कटिहार

समाज के रचनात्मक विकास में सहायक

सिविल सोसायटी समाज के रचनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। ये आमजन में जागृति के प्रचार-प्रसार तथा सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार कर समाज के रचनात्मक विकास में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती हैं। आजकल हर नागरिक की सरकार से बहुत-सी आकांक्षाएं व अपेक्षाएं होती हैं परंतु सरकार सभी अपेक्षाओं को पूरा करने में समर्थ नहीं है, इसलिए सामाजिक संस्थाएं या सिविल सोसायटी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। सनातन काल से ही सामाजिक संस्थाएं कुरीतियों को दूर करने के साथ ही रचनात्मक विकास का कार्य करती रही हैं।

-उषा जैन, टोहाना

समाज में चेतना जागृत करने में मददगार

समाज के विकास में सिविल सोसायटी की विशिष्ट भूमिका रहती है। ये समाज में सामाजिक, राजनीतिक प्रशासनिक, आर्थिक चेतना जागृत करती हैं। सरकारी विभागों में कार्य संचालन को पारदर्शी बनाती हैं। योजनाओं, प्रशासन और नीति निर्माण के क्रियान्वयन में जन सहभागिता सुनिश्चित करती हैं। जनता को सरकारी योजनाओं और सरकार को आमजन की समस्याओं से अवगत कराती हैं। ये प्रशासनिक मशीनरी पर जवाबदेही लागू कर स्थानीय विकास के लिए स्थानीय संसाधन विकसित करके समाज निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं।

-कल्पना सेठिया, नयी दिल्ली

प्रगतिशील समाज के लिए मेरुदंड

मित्रता, एक-दूसरे की सोच को सम्मान देना, उनकी बातों को सुनना-समझना तथा व्यावहारिक रूप देना और अंत में सबको एक साथ लेकर चलना। यही सब विशेषताएं तो एक अच्छे समाज के निर्माण और प्रगति का मजबूत ताना-बाना बुनती हैं। सिविल सोसायटी यानी सभ्य नागरिकों या व्यक्तियों का समूह जो समाज की उन्नति के लिए आपस में मिलकर कार्य करते हैं। सोसायटी के माध्यम से एक नेतृत्व और दिशा मिल जाती है और सभी उस दिशा में आपसी समन्वय के साथ काम करते हैं। फलस्वरूप सफलता मिलती ही मिलती है। इससे समाज की प्रगति निश्चित है। अतः हम कह सकते हैं कि सिविल सोसायटी प्रगतिशील समाज के निर्माण में मेरुदंड की भूमिका निभाती है।

-रेणु सांखला, शिवपुरी

पीड़ितों को अपनापन का कराती है एहसास

सिविल सोसायटी यानी विषम हालात में पीड़ित जनमानस को संभालते हुए उन्हें अपनेपन का एहसास करवाना, चिंतामुक्त कराना कि 'हम हैं न'। जब कोविड की वजह से घर-घर मातम पसरा हुआ था, जानलेवा बीमारी के भय से परिवार वाले तक दूरियाँ बरतने लगे थे, तब मानवता के लिए समर्पित कुछ व्यक्ति सहयोग के लिए आगे आये। ये वही लोग हैं जो विभिन्न सामाजिक संस्थानों के सदस्य हैं। हम भी इन अच्छाइयों भरी बगियाओं के कुसुम बनकर जग को महकाते हुए आम से खास बनें।

-प्रतिभा जोशी, अजमेर

लोगों के हितों को रखता है सुरक्षित

नागरिक समाज की अवधारणा उत्तर आधुनिक युग की लोकप्रिय अवधारणा है। यह संगठित समाज को दर्शाता है तथा समाज निर्माण में यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह राज्य के नियंत्रण को कम करने के लिए बहुल-संस्थागत व्यवस्था का समर्थन करता है तथा उत्पीड़न के विरुद्ध महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दहेज या शराबखोरी जैसी सामाजिक बुराइयों के सुधार में सहयोग प्रदान करता है। साथ ही समाज में रह रहे लोगों के अधिकारों को, हितों को सुरक्षित रखने का काम करता है।

-डॉ. राजमती सुराना, भीलवाड़ा

अगले अंक का विषय

परिचर्चा

आम नागरिक के जीवन में संयम का महत्व : प्रयोग और परिणाम

आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से एक सामान्य इंसान के जीवन में संयम को स्वभाव के रूप में शामिल करने का युगांतकारी सफल प्रयास किया। "अणुव्रत अमृत महोत्सव" के ऐतिहासिक अवसर पर 15 नवम्बर 2023 को हम आचार्य तुलसी का 110वां जन्मदिवस "अणुव्रत दिवस" के रूप में मना रहे हैं। इस दिन संयम के अभ्यास स्वरूप हजारों व्यक्ति उपवास रखेंगे। क्या है संयम का हमारे दैनंदिन जीवन में महत्त्व? अपनी जीवनशैली में कैसे हम संयम के छोटे-छोटे प्रयोग शामिल कर सकते हैं? और, इन प्रयोगों के क्या परिणाम हस्तगत होते हैं? कृपया अपने अनुभवजन्य विचार हमें लिख भेजें।

"आम नागरिक के जीवन में संयम का महत्व : प्रयोग और परिणाम" इस विषय पर सुधी पाठकों के विचार सादर आमंत्रित हैं। अपने विचार हमें 200 शब्दों में **30 सितम्बर तक 9116634512** पर व्हाट्सएप के माध्यम से भेजें। चयनित विचार **नवम्बर 2023 अंक** में प्रकाशित किये जाएंगे।

Anuvrat Balodaya's
KIDZONE
Fun | Creativity | Learning

बच्चों के आकर्षण का केन्द्र बना किडजोन

खेल-खेल में निखार रहे हुनर, सीख रहे ज्ञान की बातें

मुंबई। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के चतुर्मास प्रवास स्थल पर अणुव्रत विश्व भारती के तत्त्वावधान में संचालित किया जा रहा किडजोन आमजन और बच्चों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। यहां अणुव्रत आर्ट गैलरी में बच्चों को विद्यार्थी अणुव्रत और अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों से अवगत करवाया जा रहा है। क्रिएटिव कॉन्टेस्ट के दौरान बनायी गयी कलाकृतियां इस रूम का मुख्य आकर्षण हैं। वहीं, पर्यावरण रूम के माध्यम से बच्चों को पर्यावरण का महत्व समझाने के साथ ही उन्हें बताया जा रहा है कि छोटे-छोटे उपाय अपनाकर वे पर्यावरण की सुरक्षा में सहयोगी बन सकते हैं।

थिएटर रूम में बच्चों को आचार्य श्री तुलसी के जीवन पर बनी डॉक्यूमेंट्री के साथ ही नैतिक मूल्यों पर आधारित छोटी-छोटी फिल्में दिखायी जाती हैं। योगा रूम में होलोग्राम टेक्नोलॉजी के माध्यम से जीवन विज्ञान के प्रयोग भी करवाये जाते हैं। गेम जोन में बच्चों को कई एजुकेशनल गेम्स खेलने का अवसर प्राप्त होता है। बच्चे यहाँ बुक्स रीडिंग, ड्राइंग, जंपिंग, कैरम, चेस के साथ ही खेल-खेल में बहुत कुछ सीख भी रहे हैं। Learn with Fun कार्यक्रम के तहत बच्चों को पर्यावरण का महत्व समझाया जाता है तथा उन्हें मोबाइल एडिक्शन पर आधारित कार्टून फिल्म दिखायी जाती है। बच्चों को अणुव्रत साँप-सीढ़ी के माध्यम से रोचक जानकारियां भी खेल-खेल में दी जाती हैं। संडे वर्कशॉप स्पेशल के तहत उन्हें तरह-तरह के हुनर सिखाये जाते हैं। इसके तहत बच्चों ने फ्रेंडशिप डे पर फोटोफ्रेम मेकिंग सीखी। स्वतंत्रता दिवस पर बच्चों के लिए असली आजादी अपनाओ थीम पर फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता आयोजित की गयी। इसमें 26 बच्चे शामिल हुए। रानी लक्ष्मी

साध्वीप्रमुखाश्री ने किया किडजोन का अवलोकन

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा किडजोन का अवलोकन करते हुए। संयोजिका सुमन चपलोत ने उन्हें यहाँ संचालित होने वाली गतिविधियों की जानकारी प्रदान की।

बाई, अहिल्या बाई, भगत सिंह, भारत माता जैसी वेशभूषा में सजे बच्चों ने असली आजादी पर अपने भाव प्रस्तुत किये। जज की भूमिका अणुव्रत विश्व भारती की राज्य प्रभारी पुष्पा कटारिया और भारत जैन महामंडल की महामंत्री सुमन चपलोत ने निभायी। लगभग 150 बच्चों ने तिरंगे झंडों के साथ किडजोन से पंडाल में गुरुदेव के मंच तक रैली निकाली। टॉप सात बच्चों को गुरुदेव के सामने प्रस्तुति देने का सुअवसर भी मिला। गुरुदेव ने कर बच्चों के साथ लगभग 10 मिनट बिताये तथा कई बच्चों की प्रस्तुति भी बड़े ध्यान से सुनी। बच्चों ने अपना अनुभव साझा करते हुए इस पल को अपने जीवन का सबसे अच्छा और प्राउड मोमेंट बताया।

मुनिश्री दिनेश कुमार, अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मनन कुमार एवं Elevate नशामुक्ति प्रकल्प के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री अभिजीत भी अवलोकन हेतु किडजोन में पधारे। अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर, महामंत्री भीखम सुराणा, अणुव्रत अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन, प्रभारी उपाध्यक्ष विनोद कोठारी एवं संयोजक मनोज सिंघवी ने किडजोन के स्वरूप तथा भावी कार्यक्रमों के संदर्भ में विचार-विमर्श कर आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किये। 19 जुलाई को हुई शुरुआत के बाद से अब तक लगभग 3000 बच्चे और लगभग 1000 अभिभावक किडजोन का भ्रमण कर चुके हैं। साथ ही सभी सभा-संस्थाओं के कई पदाधिकारी गण भी यहां विजिट कर चुके हैं। सभी ने श्रम को खूब सराहा।

उल्लेखनीय की मुम्बई किडजोन को श्री राकेश आरती कठोतिया, मुम्बई-लाडनूं का आर्थिक सौजन्य प्राप्त हो रहा है।

किडजोन के संचालन में अणुव्रत समिति मुम्बई के अध्यक्ष रोशनलाल मेहता, मंत्री राजेश जैन के साथ ही मनोहर कच्छारा, भूपेन्द्र वागरेचा आदि का पूरा-पूरा सहयोग मिल रहा है। मुंबई किडजोन की संयोजक सुमन चपलोत और सह संयोजक मीना बडाला के साथ अनेक भाई-बहन निःस्वार्थ भाव से किडजोन को संचालित करने में सहयोग कर रहे हैं। अणुविभा के केंद्रीय कार्यालय के कार्यकर्ता राकेश मौर्या और शंकर शेखावत भी निरंतर अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

अणुव्रत आंदोलन व अणुव्रत प्रकल्पों की समग्र जानकारी समेटे
अणुव्रत अमृत किट
एक महत्वपूर्ण उपलब्धि

■■ संयोजिका पुष्पा कटारिया की रिपोर्ट ■■

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण को अणुव्रत अमृत किट भेंट

अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने "अणुव्रत अमृत किट" अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण को भेंट की। आचार्यप्रवर ने समस्त सामग्री को गौर से देखा और अणुव्रत अमृत महोत्सव की गति-प्रगति की जानकारी प्राप्त की। अविनाश नाहर एवं अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन ने आचार्यप्रवर को अमृत महोत्सव के अंतर्गत चल रहे विभिन्न प्रकल्पों की विस्तार में अवगति प्रदान की। इससे पूर्व अणुविभा कार्यसमिति की मुंबई बैठक में किट का अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर द्वारा लोकार्पण किया गया।

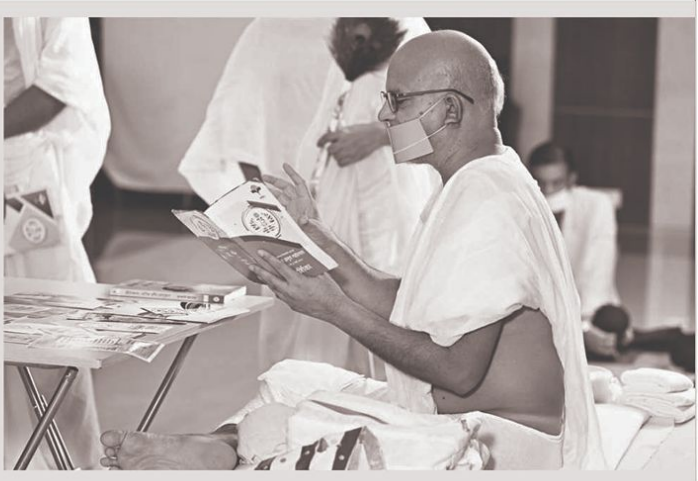

अणुव्रत आन्दोलन की उपलब्धियों में अणुव्रत समितियों और अणुव्रत मंचों का अहम योगदान है। इनके सुव्यवस्थित संचालन एवं इनसे जुड़े कार्यकर्ताओं को आन्दोलन व इसके बहुविध प्रकल्पों की समुचित जानकारी हो, इस उद्देश्य से "अणुव्रत अमृत किट" तैयार की गई है।

"अणुव्रत अमृत किट" में विभिन्न अणुव्रत प्रकल्पों के ब्रोशर, अणुव्रत आन्दोलन की परिचय पुस्तिका, अणुव्रत अमृत महोत्सव के करणीय कार्यों की दिशादर्शिका, अणुव्रत जीवनशैली मार्गदर्शिका, अणुव्रत डायरी, स्वागत दुपट्टा जैसी महत्वपूर्ण सामग्री नमूने के रूप में शामिल है।

समितियाँ व मंच अपनी अपेक्षा अनुसार इनकी अधिक प्रतियाँ अणुविभा के राजसमन्द 9116634513 अथवा दिल्ली 9116634512 कार्यालय से मंगा सकते हैं। समितियों के लिए बैठक कार्यवाही रजिस्टर भी तैयार किया गया है ताकि वे मिनिट्स आदि का व्यवस्थित संधारण कर सकें। कार्यसंचालन में सहयोग हेतु नियमोपनियम सहित ट्रस्ट डीड का प्रारूप भी रजिस्टर में प्रकाशित किया गया है।

"अणुव्रत अमृत किट" प्रकल्प की संयोजिका पुष्पा कटारिया ने तन, मन और धन से सहयोग प्रदान कर इस महत्वपूर्ण कार्य को अंजाम दिया है। बैठक कार्यवाही रजिस्टर को तैयार करने में सहमंत्री उमेन्द्र गोयल का श्रम योगभूत बना।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट
700 स्कूलों ने कराया रजिस्ट्रेशन

■■ संयोजक राजेश चावत की रिपोर्ट ■■

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में अनेकानेक प्रकल्प संचालित किये जा रहे हैं। इनमें से एक महत्वपूर्ण प्रकल्प है अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट। अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर, महामंत्री भीखम सुराणा, अणुव्रत अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन एवं अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट के राष्ट्रीय पर्यवेक्षक प्रताप दुगड़ के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में यह आयोजन संपादित किया जा रहा है। अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2023 के तहत 20 अगस्त तक देश भर के 700 से अधिक स्कूलों के रजिस्ट्रेशन का काम पूरा कर लिया गया है।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2023 के राष्ट्रीय संयोजक राजेश चावत के संयोजकत्व में साउथ जोन में सुभद्रा लुणावत, नॉर्थ जोन में प्रणीता तलेसरा, ईस्ट जोन में संजय चौरडिया, वेस्ट जोन में किरण परमार एवं सेंट्रल जोन में साधना कोठारी के साथ ही 18 राज्य प्रभारी एवं 180 कार्यकर्ता पूरे देश में इस आयोजन में तत्परता से जुटे हुए हैं।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट का मुख्य उद्देश्य नैतिकता, प्रमाणिकता एवं रचनात्मक सोच के साथ बच्चों को मानसिक प्रगति के अवसर उपलब्ध कराना है। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी ने देश भर से एक लाख से अधिक बच्चों को अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2023 में सहभागी बनाने का लक्ष्य रखा है।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के बैनर का विमोचन

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा उद्घोषित और अणुव्रत विश्व भारती द्वारा निर्देशित अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के बैनर का लोकार्पण मुंबई नन्दनवन में आचार्य प्रवर के पावन सान्निध्य में अणुविभा के अध्यक्ष अविनाश नाहर, वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रताप दुगड़, उपाध्यक्ष विनोद कोठारी, अणुव्रत अमृत महोत्सव के संयोजक संचय जैन, महामंत्री भीखम सुराणा, अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह की संयोजिका डॉ. कुसुम लुनिया एवं टीम द्वारा हुआ।

अणुव्रत गीत जीवन की प्रार्थना बने : कटारिया

कोलकाता में आयोजित राज्यस्तरीय सेमिनार में असम के राज्यपाल ने किया आह्वान

कोलकाता। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में अणुव्रत समिति द्वारा 13 अगस्त को कला मंदिर में 'आजाद भारत की प्रगति में अणुव्रत का योगदान' विषय पर राज्यस्तरीय अणुव्रत सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार के मुख्य अतिथि असम के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया ने अपने प्रभावी वक्तव्य में कहा कि देश न केवल सड़कों व इमारतों से बनता है, वह बनता है इंसानों से। देश को बनाना है तो नैतिकता ही एकमात्र मानदण्ड है। आजादी के 75 वर्षों में देश ने प्रगति की है। अगर प्रगति के साथ नैतिकता जुड़ जाये तो चार चाँद लग सकते हैं। आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत गीत की रचना कर अणुव्रत का संदेश इस देश को दिया। व्यक्ति सुधार से समाज सुधार और समाज सुधार से राष्ट्र का सुधार संभव है। अणुव्रत गीत में यह संदेश दिया गया है। अणुव्रत गीत जीवन की एक प्रार्थना होनी चाहिए। इसकी एक पंक्ति 'संयममय जीवन हो' को ही अपना लें तो हमारे जीवन का उत्थान संभव है।

कटारिया ने कहा, "मेरा सौभाग्य रहा है कि मुझे आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ और आचार्य श्री महाश्रमण के चरणों में बैठने का अवसर मिला है। उनका हम पर बहुत ऋण है। मैं भी अणुव्रत के संकल्पों को निभाने का प्रयास करता हूँ। आप सभी अणुव्रत के द्वारा समाज सुधार का प्रयत्न करते रहें।"

इस अवसर पर उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित करते हुए मुनिश्री जिनेश कुमार ने कहा कि भारत की आजादी का अमृत काल चल रहा है और अणुव्रत आन्दोलन का भी अमृत महोत्सव वर्ष चल रहा है। भारत निरन्तर प्रगति कर रहा है। प्रगति जब सिर्फ भौतिक होती है, तब वह विनाश की ओर अग्रसर होती है और प्रगति जब नैतिक होती है, तब वह राष्ट्र की समृद्धि व सुख-शांति का कारण बन जाती है।

मुनिश्री ने कहा कि अणुव्रत एक आचार संहिता ही नहीं, अपितु पूरा जीवन दर्शन है। अणुव्रत जैन नहीं, गुडमैन बनाता है। अणुव्रत क्रियाकाण्डों पर नहीं, बल्कि चारित्र-शुद्धि पर ध्यान देता है। मनुष्य जाति एक है। इंसान को नफरत व घृणा का जीवन नहीं जीना चाहिए। प्रेम, सद्भाव व मैत्री को जीवन में स्थान देना चाहिए। पर्यावरण के प्रति सजग रहना चाहिए। नशा नाश का द्वार है, नशे से मुक्त रहना चाहिए। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण अणुव्रत यात्रा पर हैं। उन्होंने एक करोड़ से भी अधिक लोगों को नशामुक्ति का संकल्प दिलाया है। अणुव्रत एक सुरक्षा कवच है। अणुव्रत ज्वलंत समस्याओं का समाधान है। आज पूरा विश्व हिंसा से ग्रसित है। अणुव्रत हिंसा का समाधान अहिंसा के रूप में प्रस्तुत करता है। मुनिश्री ने सभी को अणुव्रत के संकल्पों को ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया। बाल मुनि कुणाल कुमार ने 'बदले युग की धारा' गीत का संगान किया।

अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने अणुव्रत के सन्दर्भ में विचार व्यक्त करते हुए अणुव्रत अमृत महोत्सव के ऐतिहासिक प्रसंग में अणुविभा द्वारा देश-विदेश में किये जा रहे कार्यों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि अणुव्रत अनुशास्ता स्वयं अपनी अणुव्रत यात्रा में गाँव-गाँव, ढाणी-ढाणी में जाकर लोगों को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के संकल्प दिलाते हैं। अणुविभा अध्यक्ष ने राज्यपाल महोदय को आगामी 18 जनवरी 2024 को आयोज्य "अणुव्रत गीत महासंगान" की जानकारी भी दी जिसमें लाखों लोग एक ही दिन अणुव्रत गीत को सामूहिक रूप से गाएँगे।

अणुव्रत अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन ने अपने वक्तव्य में कहा कि आजाद भारत में अणुव्रत का सबसे बड़ा योगदान यह है कि इसके माध्यम से आचार्य तुलसी ने भारत के नागरिकों को असली आजादी का मार्ग दिखाया। इस दर्शन को समझ लिया जाये और जीवन में अपना लिया जाये तो देश के समक्ष उपस्थित समस्याओं का समाधान हासिल किया जा सकता है। इससे पहले अणुव्रत समिति कोलकाता के अध्यक्ष प्रदीप सिंघी ने स्वागत भाषण दिया।

समिति की उपाध्यक्ष डॉ. सुनिता सेठिया ने राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया व उनकी धर्मपत्नी अनिता कटारिया का परिचय प्रस्तुत किया। मंत्री नवीन दुगड़ ने आभार ज्ञापन किया। अणुविभा व अणुव्रत समिति द्वारा दुपट्टा, अणुव्रत साहित्य, मोमेण्टो, अणुव्रत आचार संहिता पट्ट व अमृत महोत्सव किट भेंट कर अतिथियों का स्वागत किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनिश्री परमानंदजी ने किया। कार्यक्रम से पूर्व डॉक्यूमेन्ट्री भी दिखायी गयी।

कार्यक्रम में हावड़ा अणुव्रत समिति तथा सैंथिया अणुव्रत मंच की भी उपस्थिति रही। अणुविभा द्वारा आयोजन के लिए कोलकाता अणुव्रत समिति का सम्मान किया गया। इस अवसर पर अणुविभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रताप दुगड़, महामंत्री भीखम सुराणा, अणुविभा मीडिया से विरेन्द्र बोहरा, सदस्य विकास दुगड़ सहित कोलकाता अणुव्रत समिति के पदाधिकारी, सदस्य व गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

एलिवेट : एक्सपीरियंस द रियल हाई

बड़ी संख्या में युवा ले रहे नशामुक्ति का संकल्प

■■ संयोजक अशोक कुमार कोठारी (आई.आर.एस) की रिपोर्ट ■■

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में 17 जून 2023 को "एलिवेट : एक्सपीरियंस द रियल हाई" नशामुक्त जीवन अभियान का आगाज किया गया था। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी की ओर से युवाओं को सशक्त बनाने के उद्देश्य से शुरू किये गये इस अभियान ने बहुत ही कम समय में अविश्वसनीय सफलता प्राप्त की है। यह अभियान युवा पीढ़ी के लिए आशा और प्रेरणा की किरण है। नशामुक्ति का संकल्प लेने के लिए युवाओं में उत्साह और उत्सुकता को देखना वास्तव में हृदयस्पर्शी है।

इस अभियान का उद्देश्य नशामुक्त जीवनशैली को बढ़ावा देने के साथ नशा से होने वाली हानियों के प्रति जागरुकता पैदा करना और स्वस्थ जीवन जीने के लिए वातावरण का निर्माण करना है।

अणुव्रत समिति मुम्बई के 40 क्षेत्रों से जुड़े 400 से अधिक स्वयंसेवक इस अभियान की सफलता के लिए जुटे हुए हैं। पिछले महीने टीम ने 16 स्कूलों का दौरा किया। इस दौरान कुल 20 सत्र आयोजित किये गये जिनमें 2800 छात्रों ने नशामुक्त रहने का संकल्प लिया।

इस दौरान एक विद्यालय के प्रिंसिपल ने कहा- "इस अभियान से मादक द्रव्यों के सेवन की वास्तविकताओं के बारे में बहुत जरूरी जानकारी युवा वर्ग तक पहुँचायी गयी। इससे हमारे छात्रों को अमूल्य ज्ञान प्राप्त हुआ है।" एक अन्य विद्यालय के प्रधानाचार्य का कहना था, "मुझे यह कहते हुए गर्व हो रहा है कि हमारे छात्र दबाव का विरोध करने और स्वस्थ विकल्प चुनने के लिए अधिक सशक्त हो रहे हैं। एलिवेट सिर्फ एक अभियान नहीं है; यह सकारात्मकता का एक आंदोलन है।"

अभियान के दौरान एक विद्यार्थी की टिप्पणी थी - "मेरे सहपाठियों को नशीली दवाओं से दूर रहने की प्रतिज्ञा करते हुए देखना बहुत उत्साहजनक है। हम सभी इसमें एक साथ हैं, सकारात्मक विकल्प चुनने से मिलने वाली 'वास्तविक ऊँचाई' का अनुभव करने के लिए हम एक-दूसरे का समर्थन कर रहे हैं।"

उज्ज्वल भविष्य का निर्माण

"एलिवेट : एक्सपीरियंस द रियल हाई" अभियान केवल जागरुकता फैलाने के बारे में नहीं है; इसका उद्देश्य युवाओं में जिम्मेदारी, आत्म-जागरुकता और समुदाय की भावना को बढ़ावा देना भी है। प्रत्येक सत्र के साथ हमारा लक्ष्य छात्रों को हानिकारक पदार्थों को "नहीं" कहने के लिए ज्ञान और आत्मविश्वास के साथ सशक्त बनाना है, जिससे एक उज्ज्वल, स्वस्थ भविष्य का मार्ग प्रशस्त हो सके।

जैसे-जैसे हम आगे बढ़ रहे हैं, हम यह देखकर उत्साहित हैं कि अभियान का प्रभाव बढ़ता जा रहा है और अधिक से अधिक छात्रों, शिक्षकों और परिवारों के जीवन को प्रभावित कर रहा है। आइए, हम साथ मिलकर, एक ऐसी दुनिया का निर्माण करें जो नशीले द्रव्यों के सेवन के खिलाफ मजबूती से खड़ी हो। इस अभियान को आध्यात्मिक मार्गदर्शन मुनिश्री अभिजीत कुमार का मिल रहा है। वे स्वयं कई स्कूलों व कॉलेजों में जाकर युवाओं को प्रेरित कर रहे हैं। अभियान के सह संयोजक मुदित भंसाली का विशिष्ट सहयोग इस अभियान में प्राप्त हो रहा है।

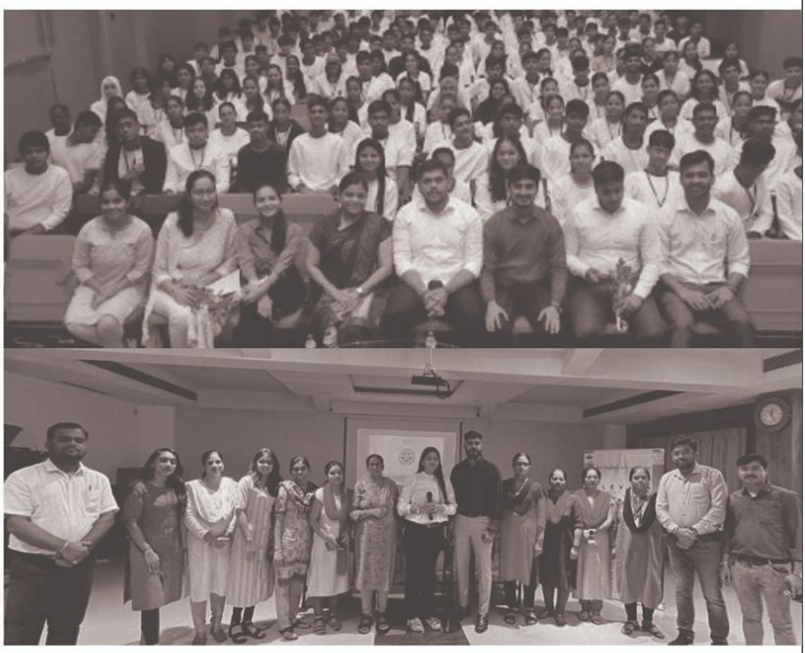

अणुविभा

अणुव्रत आंदोलन की उत्कृष्ट पत्रिकाओं "अणुव्रत" एवं "बच्चों का देश"

से स्वयं जुड़िए और परिचितों को भी जोड़िए

अणुव्रत समितियों व अणुव्रत कार्यकर्ताओं के लिए

पत्रिका सदस्यता के निर्धारित लक्ष्य पूर्ण करने पर

विशेष योजना

स्टार परफॉर्मर समिति

- महानगर श्रेणी 500 सदस्य
- शहर श्रेणी 200 सदस्य
- कस्बा श्रेणी 100 सदस्य

15 नवम्बर 2023 तक

स्टार परफॉर्मर कार्यकर्ता

महानगर श्रेणी
एक माह में 30 सदस्य तथा
15 नवम्बर 2023 तक 100 सदस्य

शहर श्रेणी
एक माह में 20 सदस्य तथा
15 नवम्बर 2023 तक 50 सदस्य

कस्बा श्रेणी
एक माह में 10 सदस्य तथा
15 नवम्बर तक 25 सदस्य

❖ **15 नवम्बर 2023** तक का लक्ष्य पूरा करने पर अणुव्रत समिति व कार्यकर्ता को अणुव्रत अधिवेशन में सम्मानित किया जाएगा। ❖ मासिक लक्ष्य पूरा करने पर कार्यकर्ता का फोटो पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा। ❖ स्टार परफॉर्मर कार्यकर्ताओं को पत्रिका प्रतिनिधि मनोनीत किया जाएगा एवं उनका नाम, मोबाइल नंबर व क्षेत्र की जानकारी पत्रिका में प्रकाशित की जाएगी। ❖ स्टार परफॉर्मर कार्यकर्ता की जानकारी सम्बंधित अणुव्रत समिति द्वारा अधिकृत रूप से देनी होगी। ❖ अपने क्षेत्र के विशिष्टजनों को नि:शुल्क पत्रिका प्रेषण हेतु सौजन्य प्राप्त किया जा सकता है। 21 हजार या अधिक की सौजन्य राशि पर सौजन्यकर्ता की जानकारी पत्रिका में प्रकाशित की जाएगी। यह योजना "अणुव्रत" और "बच्चों का देश" दोनों पत्रिकाओं पर लागू होगी। ❖ स्टार परफॉर्मर समितियों को मूल्यांकन में अतिरिक्त अंक मिलेंगे।

+91 98994 45249, 91166 34512

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

अणुव्रत गीत महासंगान

एक विश्व
एक स्वर
मानव धर्म मुखर

18 जनवरी 2024

एक दिन देश-दुनिया में लाखों लोगों द्वारा "अणुव्रत गीत" का समूह संगान

केन्द्रीय समन्वय केन्द्र
व संयोजकीय सम्पर्क सूत्र

अणुव्रत समिति, ग्रेटर सूरत

■ 97372 80171 ■ 93746 13000
■ 98254 04433 ■ 93747 26946

प्रथम चरण : अन्तिम तिथि 31 अक्टूबर 2023

- समितियों व मंचों द्वारा स्थानीय संयोजक का मनोनयन
- स्कूलों, कॉलेजों, सामाजिक संस्थाओं, औद्योगिक संस्थानों, समाज की सहयोगी संस्थाओं से सम्पर्क कर आयोजन में अधिक से अधिक सहभागिता सुनिश्चित करना
- अधिक से अधिक आयोजन स्थलों का निर्धारण कर उनके लिए प्रभारी का मनोनयन करना
- अणुव्रत समितियों व मंचों द्वारा उनके आसपास के गाँवों, शहरों में आयोजन की संभावना तलाशना व उनकी सूची अणुविभा को प्रेषित कर संयोजक के मनोनयन में सहयोग करना
- गूगल फॉर्म के माध्यम से आयोजन स्थलवार संभावित संख्या की जानकारी देते हुए प्री-रजिस्ट्रेशन
- आवश्यकता अनुरूप केन्द्रीय कार्यालय से प्रचार सामग्री मंगवाना
- स्थानीय स्तर पर यथासम्भव चारित्रात्माओं के सान्निध्य व प्रतिष्ठित गणमान्यजनों की उपस्थिति में 'अणुव्रत गीत महासंगान' कार्यक्रम की सार्वजनिक घोषणा करना

द्वितीय चरण : अन्तिम तिथि 31 दिसम्बर 2023

- आयोजन स्थलों पर मेजबान संस्था के पदाधिकारियों के साथ बैठक कर 18 जनवरी 2024 के कार्यक्रम की रूपरेखा को अन्तिम रूप देना
- प्रत्येक आयोजन स्थल पर संभावित संभागियों के साथ रिहर्सल आयोजित करना
- रिहर्सल कार्यक्रम में अणुव्रत गीत की व्याख्या कर जागरुकता पैदा करना
- अणुव्रत यात्रा के त्रिसूत्रीय संकल्पों से परिचित कराना ताकि 18 जनवरी 2024 के कार्यक्रम में सभी संभागी सामूहिक रूप से ये संकल्प स्वीकार करें
- प्रत्येक संभागी को अणुव्रत गीत की प्रति (प्रिंटेड अथवा डिजिटल) उपलब्ध कराना
- प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को समाचार प्रेषित करना

तृतीय चरण : 18 जनवरी 2024

- यथासमय कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारियां तय करना और टीम से साथ नियमित बैठकें आयोजित कर 18 जनवरी 2024 के मुख्य कार्यक्रम की व्यवस्थाओं को अन्तिम रूप देना
- पहले दिन आयोजन स्थल पर व्यक्तिशः जाकर व्यवस्थाओं को सुनिश्चित करना
- एक-दो दिन पूर्व प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को समाचार प्रेषित करना व कार्यक्रम में संपादकों व संवाददाताओं को आमंत्रित करना
- कार्यक्रम में क्षेत्र के गणमान्य व्यक्तियों को आमंत्रित करना
- प्रत्येक आयोजन स्थल पर कार्यकर्ता की उपस्थिति सुनिश्चित कर निर्धारित प्रारूप में कार्यक्रम की आयोजना करना
- महासंगान में संभागी बच्चे व बड़े निर्धारित फॉर्म में संकल्प स्वीकार करें, यह व्यवस्था करना
- केन्द्रीय स्तर पर निर्धारित गाइडलाइन के अनुरूप महासंगान कार्यक्रम की फोटोग्राफी व वीडियोग्राफी कराना
- निर्धारित प्रारूप में कार्यक्रम आयोजन की सूचना व डाटा अणुविभा टीम को कार्यक्रम के 2 घण्टे के अन्दर उपलब्ध कराना
- प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को फोटो सहित समाचार प्रेषित करना
- फोटो सहित समाचार की एक प्रति अणुविभा टीम को प्रेषित करना

जीवन विज्ञान
स्वस्थ समाज की संरचना

ऑनलाइन जीवन विज्ञान प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला का शुभारम्भ

■■ संयोजक रमेश पटावरी की रिपोर्ट ■■

लाडनूं। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमन्द द्वारा संचालित जीवन विज्ञान प्रकल्प के प्रशिक्षण कार्य हेतु कुशल प्रशिक्षक तैयार करने के उद्देश्य से 23 अगस्त से 05 सितम्बर, 2023 तक आयोजित ऑनलाइन जीवन विज्ञान प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला का शुभारम्भ राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर की अध्यक्षता में जूम प्लेटफॉर्म पर हुआ।

इस अवसर पर जूम के माध्यम से देशभर से जुड़े प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए अविनाश नाहर ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रदत्त जीवन विज्ञान एक ऐसी विद्या शाखा है जिसके योग एवं ध्यान आधारित आध्यात्मिक-वैज्ञानिक प्रयोगों से व्यक्तित्व का रूपान्तरण किया जा सकता है। किसी भी विधा के प्रशिक्षक को पहले स्वयं निष्णात होना अपेक्षित है। इसलिए पहले हम स्वयं योग्यता अर्जित करें और फिर कुशलतापूर्वक विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान कर स्वस्थ समाज संरचना में अपना योगदान दें। अणुव्रत अमृत महोत्सव के संयोजक संचय जैन ने भी विचार व्यक्त करते हुए अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष में अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान के अधिकाधिक प्रचार-प्रसार का आह्वान किया।

मास्टर ट्रेनर राष्ट्रीय जीवन विज्ञान प्रशिक्षण प्रभारी राकेश खटेड़ ने पॉवर प्वाइंट के माध्यम से जीवन विज्ञान क्या, क्यों और कैसे विषय पर परिचयात्मक जानकारी प्रदान करते हुए जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम की 12 इकाइयों पर संक्षिप्त प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि आगे आने वाले प्रशिक्षण समय में इन्हीं 12 इकाइयों को विस्तार से व्याख्यायित करते हुए सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा।

कार्यशाला का शुभारम्भ सुनिता बैंगाणी, रायपुर द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण अणुव्रत गीत से हुआ। जीवन विज्ञान के राष्ट्रीय संयोजक रमेश पटावरी ने अपने स्वागत भाषण से स्वागत करते हुए सभी को पूरे मनोयोग से प्रशिक्षण प्राप्त करने का आह्वान किया। उन्होंने जीवन विज्ञान प्रशिक्षण के क्षेत्र में इस कार्यशाला को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि संभवतः पहली बार 176 प्रशिक्षणार्थी जूम के माध्यम से प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

5 सितम्बर तक चलने वाली इस कार्यशाला की सम्पन्नता पर प्रशिक्षणार्थियों की प्रस्तुति के आधार पर मूल्यांकन करते हुए अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा जीवन विज्ञान प्रशिक्षक सर्टिफिकेट प्रदान किया जाएगा। भविष्य में इस प्रकार के सर्टिफाइड प्रशिक्षक ही जीवन विज्ञान संबंधी प्रशिक्षण शिविर/कार्यशालाओं में प्रशिक्षण प्रदान कर सकेंगे। कार्यशाला का सफल संचालन जीवन विज्ञान स्कूल प्रबंधन प्रभारी ममता श्रीश्रीमाल एवं आभार ज्ञापन राष्ट्रीय सह-संयोजक कमल बैंगाणी ने किया।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

के तत्त्वावधान में आयोजित

अणुव्रत कार्यकर्ता संगोष्ठी (पश्चिमांचल)

27 अगस्त, 2023 रविवार चलथान, गुजरात

आयोजक :

अणुव्रत समिति चलथान

अणुव्रत कार्यकर्ता संगोष्ठी (बीकानेर संभाग)

23-24 सितम्बर, 2023 गंगाशहर

आयोजक :

अणुव्रत समिति गंगाशहर

महत्वपूर्ण सूचना

देश के विभिन्न भागों में आंचलिक स्तर पर अणुव्रत कार्यकर्ता संगोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है। इसकी पहल गुजरात की चलथान अणुव्रत समिति और राजस्थान की गंगाशहर अणुव्रत समिति ने की है, जो बधाई और धन्यवाद की पात्र हैं। अन्य समितियाँ अपने क्षेत्र में "अणुव्रत कार्यकर्ता संगोष्ठी" के आयोजन हेतु अणुविभा महामंत्री भीखम सुराणा 9810155861 अथवा अपने अंचल के संगठन मंत्री से सम्पर्क कर सकती हैं।

अणुव्रत व्याख्यानमाला का आयोजन

■■ संयोजक प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी की रिपोर्ट ■■

अणुव्रत और महिला सशक्तीकरण

दिल्ली। अणुव्रत समिति की ओर से 'अणुव्रत और महिला सशक्तीकरण' विषयक अणुव्रत व्याखानमाला का आयोजन साध्वीश्री अणिमाश्री के सान्निध्य में ओसवाल भवन विवेक विहार

में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत समिति गाजियाबाद के सदस्यों द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। साध्वीश्री अणिमाश्री ने 'अणुव्रत और महिला सशक्तीकरण' तथा आचार्य श्री तुलसी के महान अवदान अणुव्रत आंदोलन पर सारगर्भित प्रेरणा पाथेय प्रदान किया। मुख्य अतिथि भारती जी तथा विशिष्ट अतिथि डॉ. अरुणा सिंह ने विषय के संदर्भ में महत्वपूर्ण विचार रखे। अणुविभा की संगठन मंत्री डॉ. कुसम लुनिया, अणुव्रत समिति गाजियाबाद की अध्यक्ष कुसुम सुराणा, जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा दिल्ली के मंत्री प्रमोद घोड़ावत, जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा शाहदरा के निवर्तमान अध्यक्ष राजेंद्र सिंघी, ओसवाल समाज के अध्यक्ष आनंद बुच्चा, लेखक प्रभाकर अवस्थी व रजनीकांत शुक्ला ने भी विचार रखे। कार्यक्रम में 15 लेखकों, साहित्यकारों एवं पत्रकारों ने सहभागिता की। इससे पहले समिति के अध्यक्ष मनोज बरमेचा ने अतिथियों का स्वागत किया तथा साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति के उपाध्यक्ष डॉ. अनिल दत्त मिश्रा ने तथा आभार ज्ञापन मंत्री राजेश बैंगानी ने किया। कार्यक्रम की सरंचना में निवर्तमान अध्यक्ष शांतिलाल पटावरी की अहम भूमिका रही। कार्यक्रम में अणुविभा कार्यसमिति सदस्य डॉ. धनपत लुनिया, सुरेंद्र नाहटा, अणुव्रत समिति दिल्ली एवं अणुव्रत समिति गाजियाबाद के सदस्यगण तथा विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित थे।

जितना संयम, उतना अधिक सुख

गंगाशहर। अणुव्रत समिति द्वारा 30 जुलाई को स्थानीय शांति निकेतन में अणुव्रत व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री शशि रेखा ने अपने मंगल उद्बोधन

में कहा कि संयम से उपलब्धि और उन्नति संभव है। वैयक्तिक से लेकर वैश्विक तक सभी समस्याओं का समाधान संयम ही है। साध्वीश्री ललित कला जी ने कहा कि हर व्यक्ति सुख चाहता है। जो जितना संयम करेगा, उसे उतना अधिक सुख मिलेगा।

युवकरत्न से अलंकृत तथा राजस्थान सरकार में लघु उद्योग विभाग के निदेशक राजेंद्र सेठिया ने watch शब्द की व्याख्या करते हुए कहा कि व्यक्ति को अपने शब्दों, कार्यों, सोच, चरित्र और ईमानदारी की पहरेदारी करनी चाहिए। इससे पहले समिति अध्यक्ष भंवर लाल सेठिया ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री मनीष बाफना ने और आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष मनोज सेठिया ने किया।

चरित्र निर्माण में अणुव्रत की भूमिका महत्वपूर्ण

आसींद। अणुव्रत समिति की ओर से तेरापंथ भवन में अणुव्रत व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर शासनश्री साध्वीश्री जसवती ने कहा कि धर्म के दो रूप हैं - उपासना और चरित्र। उपासना की पद्धति सभी धर्मों में अलग-अलग हो सकती है, परंतु चरित्र सभी धर्मों में एक ही होता है। चरित्र निर्माण में अणुव्रत की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। आज चारों ओर भय, आतंक एवं हिंसा के वातावरण से पूरा विश्व जूझ रहा है। इन सब समस्याओं का एकमात्र समाधान है - अणुव्रत। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों को अपनाकर व्यक्ति स्वस्थ परिवार एवं विश्व का निर्माण कर सकता है।

साध्वीश्री ऋषभ प्रभा ने आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के योगदान की चर्चा करते हुए कहा कि वर्तमान में आचार्य महाश्रमण हजारों-हजारों किलोमीटर की यात्रा करते हुए सद्भावना, नैतिकता एवं नशामुक्ति का संदेश दे रहे हैं। इनकी प्रेरणा से लाखों लोगों ने नशामुक्ति के संकल्प स्वीकार किये हैं। साध्वीश्री अनेकांत प्रभा ने भी विचार व्यक्त किये।

मुख्य अतिथि लोकेश चंद्र नगला मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी आसींद ने कहा कि आज के भौतिक युग में विद्यार्थी केवल शिक्षा प्रणाली से अपने को सुसंस्कारित नहीं बना सकता। अणुव्रत जीवन निर्माण की एक मजबूत कड़ी साबित हो सकती है। इसके द्वारा बुराइयों को पनपने से रोका जा सकता है।

समारोह के अध्यक्ष तुलसी राम कुमावत प्रधानाचार्य मॉडल स्कूल आसींद, विशिष्ट अतिथि संकर्षण पांडा प्राचार्य महाप्रज्ञ कॉलेज ने भी विचार व्यक्त किये। साहित्य भेंट कर अतिथियों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन समिति के मंत्री कैलाश चंद्र शर्मा ने किया।

हर क्रिया, वृत्ति, प्रवृत्ति में हो संयम

बेंगलुरु। अणुव्रत समिति की ओर से 8 अगस्त को अणुव्रत व्याख्यानमाला का आयोजन विजयनगर स्थित अर्हम भवन में किया गया। मुनिश्री दीप कुमार ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि जहाँ असंयम है, वहाँ दुःख है। मन-वचन-काया के

असंयम से अनेक कर्म बंधन होते हैं। वाणी के असंयम से महाभारत का सृजन हुआ। इसलिए व्यक्ति की हर क्रिया, वृत्ति, प्रवृत्ति में संयम होना चाहिए। इंद्रियों एवं पदार्थों पर संयम आवश्यक है। दृष्टांतों के माध्यम से संयमित जीवन जीने की प्रेरणा देते हुए उन्होंने कहा कि वाणी, इच्छाओं आदि के दास न बनें। सुखी जीवन का महत्वपूर्ण सूत्र 'संयम ही जीवन है' को अपनाएं। गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन इसलिए किया कि संयम की ज्योति सबके जीवन में जगमगाये।

इस अवसर पर मुनिश्री काव्य कुमार ने कहा कि संसार का प्रत्येक व्यक्ति अच्छा जीवन जीना चाहता है। जो तन और मन से स्वस्थ है, सक्रिय और प्रसन्नचित्त है, वही अच्छा जीवन जी सकता है। भगवान महावीर ने जीवन जीने की कला का सूत्र दिया - संयम से जीना संयम का सूत्र जीवन विकास का सूत्र है। हम केवल संयम के बारे में सुनें नहीं, अपितु इसे जीवन में अपनाएं। खान-पान-वाणी में संयम जरूरी है।

अणुविभा के संगठन मंत्री राजेश चावत ने कहा कि अणुव्रत विश्व भारती के अंतर्गत अनेकानेक प्रकल्पों के माध्यम से जन-जन में जागृति लाने के प्रयास किये जा रहे हैं। उन्होंने असली आजादी अपनाओ के बारे में विस्तार से बताया। इससे पहले समिति अध्यक्ष देवराज रायसोनी ने अतिथियों का स्वागत किया। तेरापंथ विजयनगर सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी ने भी विचार रखे। कार्यक्रम के पश्चात् विजयनगर सभा द्वारा अणुव्रत समिति का सम्मान किया गया। इस अवसर पर निवर्तमान अध्यक्ष शांतिलाल पोरवाल, उपाध्यक्ष माणकचंद संचेती, सहमंत्री प्रवीण बोहरा, कार्यकारिणी सदस्यगण सहित सभा-संस्थाओं के पदाधिकारी एवं श्रद्धालु उपस्थित रहे। उपाध्यक्ष शांति सखलेचा ने कार्यक्रम का संचालन किया एवं मंत्री हरकचंद ओस्तवाल ने आभार ज्ञापित किया।

छोटे-छोटे कमिटमेंट्स से विकास में कंट्रीब्यूशन

उदयपुर। अणुव्रत समिति की ओर से माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी कॉलेज प्रांगण में अणुव्रत व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री सम्बोध कुमार मेधांश ने कहा कि हम जो भी कर रहे हैं, उसके बारे में यह डायग्नोसिस करें कि

उसका राष्ट्र के विकास में क्या कंट्रीब्यूशन है। जब हम सेल्फ सेटिस्फैक्शन मोड पर पहुँच जाते हैं, तो हम सृष्टि के हर क्रिएचर की परवाह करने लगते हैं। यही परवाह देश की खुशहाली और समृद्धि की वजह होती है।

मुख्य अतिथि राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने कहा कि अणुबम ने विश्व की विनाश लीला रची, वहीं अणुव्रत मानव में मानवता का सृजन करता है। इस अवसर पर लॉ कॉलेज प्रिंसिपल डॉ. कला मुनेत, कला विभाग प्रिंसिपल हेमेंद्र चंडालिया, असिस्टेंट रजिस्ट्रार धर्मेंद्र

राजोरा, आदि मौजूद रहे। स्वागत अणुव्रत समिति अध्यक्ष डॉ. सुरेन्द्र छंगाणी ने किया व आभार मंत्री राजेन्द्र सेन ने जताया। संचालन ए.सी.सी. प्रभारी प्रणीता तलेसरा ने किया।

'विद्यार्थियों का विकास और अणुव्रत'

बारडोली। अणुव्रत समिति की ओर से 19 अगस्त को जमना बा वात्सल्य गुजराती मीडियम स्कूल में 'विद्यार्थियों का विकास और अणुव्रत' विषय पर व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता डॉ. चिंतन शाह ने अणुव्रत से विद्यार्थियों

के जीवन में कैसे प्रकाश आ सकता है, इस पर प्रकाश डाला। उन्होंने बच्चों में नैतिकता, ईमानदारी, मानवीय एकता में विश्वास रखकर जीवन यापन करने का प्रयास करने की भावना का बीजारोपण किया।

अणुव्रत समिति द्वारा डॉ. चिंतन शाह और स्कूल प्रिंसिपल कनक परमार का दुपट्टा और अणुव्रत आचार संहिता भेंट कर सम्मान किया गया। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति के मंत्री सुभाष हिंगड़, संगठन मंत्री संजय बडोला, उपासिका आशा चौरडिया, मीना मेहता, पश्चिमांचल संगठन मंत्री पायल चौरडिया, स्कूल स्टाफ और करीब 100 बच्चों की उपस्थिति रही।

अणुव्रत समिति की ओर से 23 अगस्त को मालिबा फार्मेसी कॉलेज में आयोजित अणुव्रत व्याख्यानमाला में मुख्य वक्ता अणुविभा के उपाध्यक्ष राजेश सुराणा ने कहा कि मानवीय मूल्य, मानवता और मानव धर्म ही सर्वश्रेष्ठ है। इससे बड़ा और अच्छा कुछ भी नहीं है। अणुविभा की पश्चिमांचल संगठन मंत्री पायल चौरडिया ने स्वागत भाषण में कहा कि जीवन में अनुशासन बहुत जरूरी है। अनुशासन जीवन को संयमी बनता है और मानवीय गुणों का संचार करता है। समिति की ओर से अणुव्रत आचार संहिता और दुपट्टे से कॉलेज के प्रोफेसर डॉ. भाविक भाई और प्रोफेसर हेतल बेन का स्वागत किया गया। कार्यक्रम के आयोजन में बारडोली समिति के अध्यक्ष राजेश चोरडिया, सूरत समिति के अध्यक्ष विमल लोढ़ा के साथ ही आशा चोरडिया, नवनीत जैन, ऋषि सुराणा व पूरी टीम का सहकार रहा।

अणुव्रत के द्वारा स्वस्थ समाज का निर्माण

जयपुर। अणुव्रत समिति की ओर से अणुविभा जयपुर केन्द्र में 23 अगस्त को शासनगौरव साध्वीश्री कनकश्री के सान्निध्य में अणुव्रत व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि अणुव्रत

मानवीय मूल्यों के निर्माण का मुख्य आधार है। हमारे संपूर्ण समाज को अणुव्रत रूपी अमृत के समुद्र में निरंतर गोते लगाते हुए सद्भावना और शांति का बिगुल बजाना है।

मुख्य वक्ता डॉ. नरेंद्र शर्मा 'कुसुम' ने "अणुव्रत के द्वारा स्वस्थ समाज का निर्माण" विषय पर विवेचना प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि हमें वसुधैव कुटुंबकम् की हमारी संस्कृति के साथ अहिंसक समाज की रचना के लिए सदैव प्रयत्नशील रहना चाहिए। इससे पहले समिति अध्यक्ष विमल गोलछा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि अणुव्रत ही चारित्रिक विकास का प्रबुद्ध मार्ग है। कार्यक्रम में महामंडल शहर की अध्यक्ष नीरू मेहता, सी-स्कीम महिला मंडल की अध्यक्ष प्रज्ञा सुराना तथा मंत्री ऋतु गधैया, संपूर्ण श्रावक-श्राविका समाज तथा अणुव्रत समिति के पदाधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजन अणुव्रत समिति की मंत्री डॉ. जयश्री सिद्धा ने किया।

अणुव्रत : कल, आज और कल विषय पर व्याख्यान

सुजानगढ़। अणुव्रत समिति की ओर से 13 अगस्त को शासन गौरव साध्वीश्री सुप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में 'अणुव्रत : कल, आज और कल' विषय पर अणुव्रत व्याख्यानमाला आयोजित की गयी। मुख्य अतिथि राजस्थानी भाषा साहित्य व संस्कृति अकादमी राजस्थान के सदस्य डॉ. घनश्यामनाथ कच्छावा, विशिष्ट अतिथि शिक्षाविद् स्नेह प्रभा मिश्र, डॉ. कमला शर्मा व प्रगति चौरड़िया, शांतिलाल बैद उपस्थित रहे। अध्यक्षता समाजसेवी निर्मल कोठारी ने की। समिति अध्यक्ष महेश तंवर ने सभी का स्वागत किया।

पाठकों के लिए
विशेष प्रतियोगिता

आपको करना है बस इतना →

❖ 'अणुव्रत पत्रिका' के फरवरी–मार्च 2023 अंक को ध्यानपूर्वक आद्योपांत पढ़ना
❖ फरवरी–मार्च 2023 अंक पर आधारित 10 सरल प्रश्नों के उत्तर प्रेषित करना

❖ **फरवरी-मार्च 2023 अंक पर आधारित प्रश्न** ❖

01. जैन विश्व भारती लाडनूं के प्रथम कुलपति कौन थे?
02. "छुटकारा क्या, अणुव्रत-यात्रा किये बिना मोक्ष भी नहीं मिलेगा।"- यह कथन किसका है?
03. न्यूयॉर्क से प्रकाशित टाइम मैगजीन द्वारा 15मार्च 1950 को अणुव्रत के संदर्भ में लिखे गये विशेष संपादकीय का शीर्षक क्या था?
04. राजस्थान विधानसभा में अणुव्रत प्रस्ताव किसने प्रस्तुत किया?
05. वर्ष 2000में अणुव्रत पुरस्कार किसे मिला?
06. 'ऐसी पुस्तक के प्रकाशन में विलंब क्यों हुआ?'- गांधीजी ने यह टिप्पणी किस पुस्तक के संदर्भ में की ?
07. आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन के अंतर्गत 'नया मोड़' अभियान की उद्घोषणा कब की ?
08. महाग्रंथ 'मेरा जीवन : मेरा दर्शन' किसके जीवनवृत्त पर आधारित है?
09. 'धवल समारोह समिति' के स्वागताध्यक्ष कौन थे?
10. अणुव्रत गीत के रचनाकार कौन हैं ?

ज्ञातव्य बिंदु

- ❖ प्रतियोगिता के प्रश्न फरवरी–मार्च 2023 के अंक पर आधारित।
- ❖ परिवार के एक सदस्य की प्रविष्टि ही मान्य होगी।
- ❖ प्रतिभागी उत्तर के साथ पता और मोबाइल नं. अवश्य उल्लेख करें।
- ❖ उत्तर संक्षेप में दें। पत्रिका में उल्लेखित शब्द ही मान्य होंगे।
- ❖ काट-छांट व शब्दों में त्रुटि होने पर अंक काट लिये जायेंगे।
- ❖ सर्वाधिक सही उत्तर लिखकर भेजने वाला पाठक विजेता होगा।
- ❖ एकाधिक विजेता होने की स्थिति में लॉटरी द्वारा निर्धारण होगा।
- ❖ विजेता का नाम मय फोटो पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा।
- ❖ सही उत्तरदाताओं के नाम का पत्रिका में उल्लेख होगा ।

उत्तर इस पते पर भेजें

अणुव्रत विश्व भारती
अणुव्रत भवन,
210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली–110002
मो : 91166 34512
anuvrat.patrika@anuvibha.org

आकर्षक पुरस्कार

विजेता
- नकद रु. 2100/-
- अणुव्रत पत्रिका की त्रैवार्षिक सदस्यता

प्रोत्साहन - दो
- नकद रु. 1100/-
- अणुव्रत पत्रिका की एक वर्षीय सदस्यता

उत्तर प्राप्ति की अंतिम तिथि
30 सितम्बर 2023

जुलाई 2023 अंक में प्रकाशित प्रतियोगिता के परिणाम

(जनवरी 2023 अंक पर आधारित)

एकाधिक विजेता होने के कारण निर्णय लॉटरी द्वारा किया गया, जो इस प्रकार है –

विजेता

कुसुमलता वर्मा
जयपुर

:: प्रोत्साहन पुरस्कार ::

जयश्री जैन
हनुमानगढ़

कनकश्री जैन
हैदराबाद

अन्य सही उत्तरदाताओं के नाम

रामविलास जैन, सूरत
राजेश भंसाली, अहमदाबाद
मंजू लूनिया, फरीदाबाद
नेहा बोरड़, जोधपुर
कोमल तातेड़, नोहर
सुनिता पारख, सिरसा
सारिका कोठारी, अजमेर
ज्योति जैन, नोहर
डी.एस. गुजरानी, जयपुर
ए.पी. माथुर, अजमेर

अणुव्रत Q10 प्रतियोगिता

प्रश्नों के सही उत्तर

उत्तर 1	नम्मने सुमने	पृष्ठ 31
उत्तर 2	बौद्ध धर्म का	पृष्ठ 11
उत्तर 3	असम में	पृष्ठ 39
उत्तर 4	परामानसिक व्यक्तित्व	पृष्ठ 09
उत्तर 5	रौंडा बायर्न	पृष्ठ 20
उत्तर 6	महात्मा गांधी ने	पृष्ठ 18
उत्तर 7	चरित्र	पृष्ठ 07
उत्तर 8	उपनिषद् में	पृष्ठ 29
उत्तर 9	असम के मुख्यमंत्री श्री शरद सिन्हा ने	पृष्ठ 38
उत्तर 10	21 फरवरी 2023 को	पृष्ठ 47

त्रिदिवसीय आवासीय बालोदय शिविर

■■ संयोजिका डॉ. सीमा कावड़िया की रिपोर्ट ■■

राजसमंद । अणुव्रत विश्व भारती "अणुविभा" की बहुचर्चित शैक्षिक प्रायोजना अणुव्रत बालोदय का तीन दिवसीय आवासीय शिविर 21 से 23 अगस्त के मध्य अणुविभा परिसर में आयोजित हुआ। इसमें राजसमंद जिले के आदर्श विद्या मंदिर माध्यमिक विद्यालय हाउसिंग बोर्ड, जीवन ज्योति सीनियर सेकण्डरी स्कूल पीपरड़ा एवं सिविलाइजेशन सीनियर सेकण्डरी स्कूल, पीपरड़ा के कक्षा 6 से 8 तक के 62 विद्यार्थियों ने अपने शिक्षक व शिक्षिकाओं के साथ भाग लिया।

इस दौरान विविध सत्रों में जीवन विज्ञान, ध्यान, पुस्तकालय में उपलब्ध बालोपयोगी साहित्य का स्वाध्याय, बालोदय दीर्घाओं, संग्रहालय का अवलोकन सहित समस्त परिसर व निकटस्थ दयालशाह के किले का भ्रमण बच्चों ने अणुविभा के दक्ष प्रशिक्षकों के निर्देशन में किया।

विभिन्न क्रियाओं पर आधारित कलाओं के चित्रांकन द्वारा बच्चों ने अपनी प्रच्छन्न दक्षताओं का प्रस्तुतीकरण तो किया ही, साथ ही विविध खेलों द्वारा आंतरिक ऊर्जा अर्जित करने के अवसर भी प्राप्त किये। अणुव्रत गीत गायन सहित बच्चों की मेधा की अभिव्यक्ति के अनेक अवसर इन तीन दिनों में प्राप्त किये गये।

इस अवसर पर अणुव्रत अमृत महोत्सव के संयोजक संचय जैन और बालरोग विशेषज्ञ डॉ. विमल कावड़िया के साथ बच्चों के प्रभावी संवाद आयोजित हुए, वहीं बाल संसद सहित फिल्म प्रदर्शन, बच्चों और अणुविभा के संयोजक मंडल के प्रभारियों के मध्य संवाद भी हुए। सोनल दीक्षित ने आर्ट एंड क्राफ्ट का सेशन लिया। पुलिस अधिकारी सीता शर्मा ने बच्चों को आपराधिक वृत्तियों से बचने हेतु साइबर क्राइम के बारे में आगाह किया। समस्त गतिविधियों के अनुभवजन्य संचालन में डॉ. राकेश तैलंग, डॉ. सीमा कावड़िया, डॉ. विनीता पालीवाल, देवेन्द्र आचार्य, जगदीश बैरवा, प्रतिभा जैन सहित शिविर समन्वयक मोनिका बापना और मोनिका राठौड़ की विशिष्ट भूमिका रही। बच्चों की सक्रिय सहभागिता के लिए बच्चों को आकर्षक मोमेंटोज और उपहार प्रदान किये गये। अंतिम दिन तीनों ही शिविरार्थी विद्यालयों के प्राचार्य मुकेश वैष्णव, कपिल पालीवाल और रघुनन्दन ने शिविर की गतिविधियों का अवलोकन किया तथा बच्चों के लिये इसे उपयोगी बताया। शिविर मूल्यांकन प्रपत्र के आकलन से ज्ञात हुआ कि बच्चों ने शिविर की व्यवस्थाओं, परिसर की स्वच्छता सहित हरीतिमा, बालोदय दीर्घाओं और आयोजित एक्टिविटीज को सराहा और भविष्य में भी यहां आने की इच्छा प्रकट की।

चाड़वास में बन रहा है पहला स्थानीय

Anuvrat Balodaya's

KIDZONE

Fun | Creativity | Learning

नई पीढ़ी को मूल्यपरक जीवनशैली से जोड़ने के उद्देश्य से अणुविभा विभिन्न प्रकल्प संचालित करती है जिनमें "अणुव्रत बालोदय किडजोन" एक महत्वपूर्ण प्रकल्प है। गत 9 वर्षों से अणुव्रत अनुशास्ता चातुर्मास प्रवास स्थल पर इसका सफलतापूर्वक संचालन किया जा रहा है। किडजोन की सफलता से उत्साहित हो कर अणुव्रत अमृत महोत्सव के ऐतिहासिक अवसर पर देश के विभिन्न शहरों-कस्बों में किडजोन प्रारम्भ करने का चिंतन उभरा था जिसकी शुरुआत राजस्थान के चाड़वास कस्बे से होने जा रही है।

चाड़वास अणुव्रत समिति के उत्साही अध्यक्ष विनोद बच्छावत ने यह पहल करते हुए किडजोन के लिए निजी स्थान भी उपलब्ध कराया है। अन्य समितियाँ भी इस सम्बन्ध में प्रयास कर उदहारण प्रस्तुत करें, यह अपेक्षित है। इस सन्दर्भ में प्रकल्प संयोजक **चमन दुधोड़िया 9829998444** से संपर्क किया जा सकता है।

अणुव्रत पत्रिका प्रकाशन
विशेष सहयोगी

श्री बिमल बैंगाणी
Managing Director
JAIN LABELS PVT. LTD.

श्रीमती मोहिनी देवी बैंगाणी
(बीदासर-दिल्ली)

अणुव्रत आन्दोलन के 75वें वर्ष पर अणुव्रत अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में अणुव्रत दर्शन को मासिक पत्रिकाओं के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने में दिये गये विशेष सहयोग हेतु अणुविभा परिवार आपका हृदय से आभारी है।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
राजसमंद 9116634515 ■ दिल्ली 9116634512

अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता - 2023

■■ संयोजक अशोक चोरड़िया की रिपोर्ट ■■

सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा - अणुव्रत आंदोलन प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी की इस दृष्टि को समक्ष रखते हुए अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता - 2023 प्रतियोगिता का शुभारंभ अणुव्रत अमृत महोत्सव के शुभारंभ के साथ 21 फरवरी 2023 को खेरोज (गुजरात) से किया गया। इस वर्ष प्रतियोगिता की आधार पुस्तक है आचार्य श्री महाप्रज्ञ कृत पुस्तक - नैतिकता, चरित्र और अणुव्रत। इस पुस्तक में व्यक्ति के स्वभाव परिवर्तन से राष्ट्र सुधार के सूत्रों का सरस विवेचन किया गया है। उल्लेखनीय है कि अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता का यह अभिनव अभिक्रम लगातार चौथे वर्ष जारी है।

अणुविभा अध्यक्ष, महामंत्री एवं अणुव्रत अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक महोदय के उत्साहवर्धन से केंद्रीय प्रबोधन टीम के 45 कार्यकर्ता निरन्तर अणुव्रत समितियों के साथ समन्वय रखते हुए लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में पूरी निष्ठा के साथ प्रयासरत रहे। इसी का परिणाम है कि 8200 से अधिक लोगों को इस प्रतियोगिता से जोड़ा जा सका।

81 अणुव्रत समितियों का इस प्रतियोगिता के आयोजन में सहयोग मिल रहा है। इसके अतिरिक्त भी लगभग 200 नये क्षेत्रों के विभिन्न जाति-धर्म-वर्ग के लोगों को इस प्रतियोगिता से जोड़ने का उल्लेखनीय कार्य अणुव्रत के लिए समर्पित हमारी कर्मठ केंद्रीय प्रबोधन टीम ने किया, जिसके लिए पूरी टीम साधुवाद की पात्र है। इस प्रतियोगिता के प्रायोजक हैं- श्रीमान सुरेशराजजी सुराणा (दिल्ली-जोधपुर)।

अणुव्रत प्रबोधक कार्यशाला आयोजित

■■ संयोजक डॉ. कमलेश नाहर की रिपोर्ट ■■

12 अगस्त 2023 से अणुव्रत प्रबोधक कार्यशाला का साप्ताहिक आयोजन प्रारम्भ हुआ। उल्लेखनीय है कि अणुव्रत कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से कार्यशालाओं का यह क्रम संचालित है जिनमें प्रतिदिन डेढ़ घण्टा की ऑनलाइन क्लासेज आयोजित होती हैं। तीन चरण में सम्पन्न होने वाले इस प्रशिक्षण का यह पहला चरण है।

इस बार की कार्यशाला में समणी डॉ. कुसुम प्रज्ञा द्वारा मार्गदर्शन विशिष्टता लिए हुआ था। अणुव्रत अनुशास्ता ने विशेष अनुग्रह करते हुए इसकी स्वीकृति प्रदान की थी। समणी जी ने अणुव्रत का इतिहास, अणुव्रत आचार संहिता व वर्गीय अणुव्रत तथा कार्यकर्ता की अर्हताएँ विषयों पर प्रशिक्षणार्थियों का मार्गदर्शन किया।

अणुव्रत अमृत महोत्सव के संयोजक संचय जैन ने अणुव्रत गीत की विवेचना प्रस्तुत की तथा अणुविभा प्रकल्प व कार्यविधि जैसे विषयों पर वक्तव्य दिया। वक्तृत्व कला विषयक प्रशिक्षण महावीर भटेवरा ने दिया। कार्यशाला में 50 से अधिक संभागी जुड़े। अब तक आयोजित प्रथम वर्ग की विभिन्न कार्यशालाओं में उत्तीर्ण संभागियों के लिए शीघ्र ही द्वितीय चरण का प्रशिक्षण आयोजित किया जाएगा।

राष्ट्र के नैतिक उत्थान के लिए मूल्यपरक लेखन जरूरी

लाडनूं। अणुव्रत समिति की ओर से अणुव्रत लेखक मंच के तत्त्वावधान में 'राष्ट्र के नैतिक उत्थान में लेखन की भूमिका' विषयक लेखक-पत्रकार सम्मेलन का आयोजन ऋषभद्वार भवन

में हुआ। साध्वीश्री लक्ष्यप्रभा ने अपने संबोधन में कहा कि चारित्रिक विकास, सांप्रदायिक एकता के साथ जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए अणुव्रत सबसे अधिक प्रासंगिक है। उन्होंने नैतिक लेखन की दिशा में आगे बढ़ने का आह्वान किया।

समिति के अध्यक्ष शुभकरण बैद की अध्यक्षता में आयोजित सम्मेलन के मुख्य अतिथि साहित्यकार रामकुमार तिवाड़ी ने कहा कि राष्ट्र का भौतिक विकास होना एक अलग बात है, लेकिन उस राष्ट्र का मूल विकास नैतिक उत्थान व लेखन पर निर्भर करता है। विशिष्ट अतिथि राजस्थानी भाषा साहित्य व संस्कृति अकादमी के सदस्य डॉ. घनश्यामनाथ कच्छावा ने अणुव्रत आंदोलन को सामाजिक परिवर्तन का वाहक बताते हुए कहा कि आज के दौर में नैतिक लेखन की प्रांसगिकता बढ़ गयी है।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में दिल्ली प्रवासी समाजसेवी निर्मल कोठारी, पत्रकार संघ के जिलाध्यक्ष मोहम्मद बिलाल मुगल, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष महेश तंवर उपस्थित थे। इससे पूर्व समिति के संरक्षक शांतिलाल बैद ने सभी का स्वागत किया। लेखक मंच के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. वीरेंद्र भाटी मंगल ने नैतिक लेखन की पृष्ठभूमि प्रस्तुत की। संगठन मंत्री नवीन नाहटा व गजलकार यासीन अख्तर ने कविताएं प्रस्तुत कीं। इस अवसर पर साध्वीश्री के सान्निध्य में अतिथियों ने अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट के बैनर का विमोचन किया। समिति के मंत्री अब्दुल हमीद मोयल ने आभार जताया।

कॉलेज परिसर में पौधे लगाये

चेन्नई। अणुव्रत समिति की ओर से 11 अगस्त को कोडिनग्यूर स्थित तिरुथंगल नाडर कॉलेज परिसर में पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर कॉलेज प्रशासन,

अणुव्रत समिति नेतृत्व 2023-25 नव-निर्वाचित अध्यक्ष

सिरसा

श्री रविन्द्र गोयल

बोईसर

श्री चमनलाल खोखावत

रायपुर

श्री कनक छाजेड़

दिल्ली

श्री मनोज बरमेचा

जसवंतगढ़

श्री सीताराम उपाध्याय

गंगाशहर

श्री भंवरलाल सेठिया

हुबली

श्री महेन्द्र पालगोता

हावड़ा

श्री दीपक नखत

देवगढ़ मदारिया

श्री राकेश शर्मा

आमेट

श्री धुलीचंद कच्छारा

:: हार्दिक बधाई ::

विद्यार्थियों, समिति पदाधिकारियों व सदस्यों तथा गणमान्य व्यक्तियों ने विविध प्रजातियों के पौधे लगाये। कॉलेज प्रशासन एवं छात्रों ने पौधों के रख-रखाव की जिम्मेदारी ली। समिति अध्यक्ष ललित आंचलिया ने कॉलेज प्रिंसिपल डॉ. वी. देवी, वाइस प्रिंसिपल डॉ. ललिता तथा कॉलेज के विद्यार्थियों को अणुव्रत दर्शन की जानकारी प्रदान की और अणुव्रत के नियमों को अपनाने की अपील की। समिति की ओर से कॉलेज परिवार को अणुव्रत आचार संहिता बोर्ड एवं तमिल में लिखी पुस्तकें भेंट की गयीं। कार्यक्रम संयोजक मनोज गादिया ने पर्यावरण की महत्ता पर प्रकाश डाला।

स्वतंत्रता दिवस पर अणुव्रत प्रदर्शनी

सिलीगुड़ी। अणुव्रत समिति की ओर से 15 अगस्त को अणुव्रत प्रदर्शनी का आयोजन तेरापंथ भवन में मुनिश्री प्रशांत कुमार एवं मुनिश्री कुमुद कुमार के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता कमल किशोर पुगलिया, विधायक शंकर घोष, डॉ. पीयूष कुमार पटावरी ने सभी को स्वतंत्रता दिवस की बधाई दी एवं

अणुव्रत समिति के प्रयासों की सराहना की। प्रदर्शनी में लगभग 250 प्रतिभागियों ने भाग लिया। विद्यार्थी, महिला एवं पुरुष वर्ग में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को मोमेन्टो एवं गिफ्ट देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर पौधरोपण, नशामुक्ति, संयम दिवस, अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट, अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता के बैनर का अनावरण तथा नशामुक्ति स्लोगन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। वरिष्ठ श्रावक बुधमल भंसाली एवं जीवराज नौलखा ने स्लोगन प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वालों को सम्मानित किया। प्रतियोगिता में जज सुरेन्द्र छाजेड़ एवं कमल किशोर पुगलिया रहे। इससे पहले समिति की अध्यक्ष डिंपल बोथरा ने स्वागत भाषण दिया। अणुव्रत प्रदर्शनी की संयोजिका लक्ष्मी मालू तथा सह संयोजिका स्वीटी श्यामसुखा ने आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

अणुव्रत समिति नेतृत्व
2023-25
नव-निर्वाचित अध्यक्ष

ताराखेड़ी

श्री ऋतिक जैन

बीड़

श्री सुभाष समदड़िया

टिटलागढ़

श्री जगन्नाथ पाण्डा

हनुमानगढ़

श्री हरिदफ्तरी

खारूपेटिया

श्रीमती सरोज देवी दुगड़

रतनगढ़

श्री तेजपाल गुर्जर

नवगांव

श्री संजय बोथरा

झकनावद

श्री प्रकाश बागु

पुर

श्री शिव बैरवा

व्यारा

श्रीमती निशा चौरड़िया

:: हार्दिक बधाई ::

यात्रियों को दिलाया नशा नहीं करने का संकल्प

चूरू। अणुव्रत समिति ने 24 जुलाई को रेलवे स्टेशन पर यात्रियों को अणुव्रत के नियमों के बारे में बताया। साथ ही उन्हें संकल्प

दिलाया कि वे रेलवे स्टेशन को स्वच्छ रखेंगे तथा किसी भी तरह का नशा नहीं करेंगे। रेलवे के अधिकारियों व कर्मचारियों ने इस कार्यक्रम में पूरा सहयोग दिया तथा स्टेशन पर अणुव्रत आचार संहिता लगाने की भी अनुमति प्रदान की।

आसोपालव के 100 से अधिक पौधे लगाये

ग्रेटर सूरत। स्थानीय अणुव्रत समिति द्वारा 6 अगस्त को पर्यावरण के प्रति लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से उधना क्षेत्र में पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान उधना के

मैदान में आसोपालव के 100 से अधिक पौधे लगाये गये और आसपास के लोगों को पर्यावरण के बारे में जागरूक किया गया। समिति के सदस्यों ने पेड़ों को न काटने, पौधे लगाने और उनकी देखरेख का संकल्प लिया।

प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान का प्रशिक्षण

भीलवाड़ा। अणुव्रत समिति की ओर से 21 जुलाई को शास्त्रीनगर के महाप्रज्ञ स्कूल में कक्षा 6 तक के बच्चों को प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान का प्रशिक्षण दिया गया। योग प्रशिक्षिका अनीता हिरण ने बच्चों को गर्दन की क्रियाएं, ताड़ासन, कोणासन, पादहस्तासन, महाप्राण ध्वनि एवं संकल्पों के प्रयोग करवाये। जीवन विज्ञान सह संयोजिका चांदनी रांका, रश्मि नैनावटी, उषा अग्रवाल एवं स्कूल स्टाफ की उपस्थिति ने बच्चों का उत्साह बढ़ाया।

अणुव्रत समिति नेतृत्व
2023-25
नव-निर्वाचित अध्यक्ष

हिसार

श्री राजेन्द्र अग्रवाल

मैसूर

श्री सुरेश देरासरिया

काठमांडू

श्री दिनेश नवलखा

हैदराबाद

श्री प्रकाश भण्डारी

श्रीडूंगरगढ़

श्री सुमति पारख

अररियाकोट

श्री झंवरलाल बेंगवानी

चलथान

श्री बाबूभाई नवलखा

पालघर

श्रीमती रेणुका बाफना

भुज

श्री नरेन्द्र मेहता

ईडर

श्री राजेश खिमेसरा

:: हार्दिक बधाई ::

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional

AGC International

Celebrating 33 YEARS 1989-2022

AGC

Akash Ganga®

Integrity at work

ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom, Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur, New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahemdabad • Banglore • Chennai
Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguiri • Surat

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष

अणुव्रत अमृत महोत्सव

(21 फरवरी 2023 से 12 मार्च 2024)

सितम्बर 2023 में

अणुव्रत समितियों और अणुव्रत मंचों के लिए करणीय विशेष कार्य

अणुव्रत गीत महासंगान
इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम की रूपरेखा को समझ कर प्रारंभिक तैयारियाँ करना, देखें पृष्ठ सं 46

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट
स्कूल स्तरीय प्रतियोगिताएँ 15 सितम्बर तक पूर्ण कर जिला स्तर की प्रतियोगिताएँ आयोजित करवाना

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह
1 से 7 अक्टूबर तक चलने वाले इस विशिष्ट प्रकल्प की पूर्व तैयारी करना, विस्तृत जानकारी देखें पृष्ठ सं. 11

अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता
सभी संभागियों से उत्तर पुस्तिकाएँ प्राप्त कर 15 सितम्बर 2023 तक दिल्ली कार्यालय में भेजना सुनिश्चित करना

अणुव्रत संकल्प शृंखला
अधिक से अधिक लोगों को अणुव्रत आचार संहिता से परिचित करते हुए संकल्प पत्र भरवाना

पत्रिका प्रसार
पर्युषण पर्व एवं उद्बोधन सप्ताह के दौरान 'अणुव्रत' व 'बच्चों का देश' पत्रिकाओं का सदस्यता अभियान चलाना

आंचलिक कार्यकर्ता संगोष्ठियाँ
अपने क्षेत्र में आयोजित होने वाली अणुव्रत कार्यकर्ता संगोष्ठी में आवश्यक रूप से भाग लेना

अणुव्रत अमृत किट
अणुविभा द्वारा प्रेषित अणुव्रत साहित्य व सामग्री की चारित्रात्माओं को व कार्यसमिति बैठक में जानकारी देना

नियमित प्रकल्प
विभिन्न अणुव्रत प्रकल्पों एवं अमृत महोत्सव के विशिष्ट कार्यक्रमों का नियमित आयोजन करना

अणुव्रत अर्थ संबल अभियान में सहयोग करें

- संयोजक निर्मल गोखरू (9414115066)
- दक्षिणांचल प्रभारी सुरेश दक (9448383315)
- नेपाल प्रभारी ज्योति कुमार बेंगानी (9851020595)
- मध्यांचल प्रभारी संजय जैन (9215517430)
- पूर्वांचल प्रभारी प्रदीप सिंघी (9831085087)
- उत्तरांचल प्रभारी मुकेश भादानी (7639999764)

प्रतिमाह प्रकाशित होने वाली "अणुव्रत ई-पत्रिका" को अधिक से अधिक व्हाट्सएप ग्रुपों में भेज कर लोगों को अणुव्रत जीवनशैली से जोड़ने का प्रयास करें। "अणुव्रत ई-पत्रिका" नि:शुल्क मंगवाने हेतु 9116634512 पर व्हाट्सएप मैसेज करें - "ई-पत्रिका"।

ANUVRAT
RNI No. 7013/57
September, 2023

Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1261/2021-23
Licence No. U(C)-215/2021-23
Licenced to post without pre-payment
Date of Publication 25/08/2023
Posted at Delhi PSO Delhi-6 on 28-29 of the Previous Month

प्रकाशक एवं मुद्रक **संचय जैन** द्वारा स्वत्वाधिकारी **अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी** की ओर से श्री साई शिवानी प्रिंटर्स, बी-198, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110020 के लिए एड किंग डी-55/बी, हर्ष नगर, हरि नगर, ओखला फेस-1, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। संपादक - **संचय जैन**